इस्लामी जीवन

पैग़म्बर, सहाबा और उनके साथियों का व्यवहार

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान

इस्लामी
जीवन

इस्लामी जीवन

पैग़म्बर, सहाबा और उनके साथियों का व्यवहार

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ

सी पी एस हिन्दी संपादकीय टीम

Goodword Books
CPS International

First published 2026
This book is copyright free
This book is a Hindi translation of
Maulana Wahiduddin Khan's Urdu book, *Islami Zindagi*.

Goodword Books
A-21, Sector 4, Noida-201301, Delhi NCR, India
Mob. +91 8588822672
info@goodwordbooks.com
www.goodwordbooks.com

CPS International
Centre for Peace and Spirituality International
1, Nizamuddin West Market, New Delhi-110 013, India
Mob. +91-9999944119
info@cpsglobal.org
www.cpsglobal.org

Center for Peace and Spirituality USA
391 Totten Pond Road, Suite 402,
Waltham MA 02451, USA
Mob. 617-960-7156
email: info@cpsusa.net

विषय सूची

भूमिका	7
अल्लाह वाले	9
ईमान की विशेषताएँ	29
इबादत	45
इख़लास	67
तक़वा	85
विनम्रता	103
तवक्कुल	115
बात-चीत के आदाब	121
सामाजिक तौर-तरीक़े	141
इनफ़ाक़	153
इस्लाम में दूरदर्शिता	161
अख़लाक़	175
न्यायप्रियता	187
एकता	195
ख़ुदा की मदद	203
रोज़ी-रोटी	209

भूमिका

इस्लाम को पेश करने का एक तरीक़ा यह है कि उसे सोच-विचार और समझाने के रूप में बताया जाए, यानी इस्लाम की बातों को साफ़ और असरदार बनाकर लोगों तक पहुँचाया जाए। यह तरीक़ा हमेशा ज़रूरी रहा है और आगे भी रहेगा।

दूसरा तरीक़ा यह है कि इस्लाम की बातों को बिल्कुल आसान और सादे शब्दों में बताया जाए, जैसा है वैसा ही दूसरी भाषा में लिखा जाए। इस किताब में यही दूसरा तरीका अपनाया गया है।

इस किताब में रसूलुल्लाह (सल्ल०), सहाबा (रसूलुल्लाह के साथियों) और ताबिईन (सहाबा के साथियों) की ज़िन्दगी और उनके व्यवहारों को बहुत सादे ढंग से लिखा गया है। हर बात या घटना के ऊपर एक छोटा सा शीर्षक दिया गया है। बस यही शीर्षक हमारा जोड़ा हुआ हिस्सा है, इसके अलावा कुछ भी बढ़ाया नहीं गया।

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ज़िन्दगी और उनके साथियों की ज़िन्दगी क़ियामत तक के लिए हर इंसान के लिए अल्लाह-रुखी ज़िन्दगी का सच्चा उदाहरण है। इतिहास का यह पृष्ठ इतनी प्रामाणिकता के साथ सुरक्षित है कि कोई भी गंभीर व्यक्ति आज भी पूर्ण विश्वास के साथ जान सकता है कि रसूलुल्लाह और उनके साथियों का जीवन कैसा था—वे कैसे जीते थे और किस प्रकार इस संसार से विदा हुए।

यह किताब उसी उदाहरण का एक छोटा सार है। इस तरह यह किताब इस्लामी ज़िंदगी की सच्ची तस्वीर बन गई है। इस किताब के माध्यम से रसूलुल्लाह की

हदीसों और सहाबा व ताबिईन के जीवन और व्यवहार की जानकारी मिलती है। उनसे हम सीख सकते हैं कि इस दुनिया में ऐसा जीवन कैसे जिया जाए जिससे अल्लाह की रहमत और मदद मिले और आखिरत में उसके इनाम के हकदार बन सकें।

निजी शिक्षा के अलावा मस्जिदों और सभाओं में पढ़कर सुनाने के लिए भी यह किताब इंशा अल्लाह बहुत फ़ायदे की होगी। यह निजी सीख के लिए भी उत्तम है और स्कूलों और दूसरे संस्थानों के लिए भी।

वहीदुद्दीन

14 फरवरी 1985

अल्लाह वाले

अल्लाह की रहमत वही पाता है जो रहम करे

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया—“जो इंसानों पर रहम नहीं करता, अल्लाह भी उस पर रहम नहीं करता।” (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 2319)

मेहनत की कमाई सबसे अच्छी है

किसी ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा: “अल्लाह के रसूल, सबसे अच्छी कमाई कौन-सी है?” आप (सल्ल०) ने जवाब दिया: अपनी मेहनत से कमाई हुई रोज़ी, और ऐसा व्यापार जिसमें धोखा न हो। (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 17265)

अपना इह्तेसाब (आत्म-परीक्षण), न की दूसरों का

हम्ज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आए और बोले—“ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे लिए कोई ऐसी बात तय कर दीजिए जिससे मैं ज़िंदगी गुज़ारूँ।” रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने पूछा—“हम्ज़ा! तुम्हें क्या ज़्यादा अच्छा लगता है—किसी की जान बचाना या किसी की जान लेना?” उन्होंने कहा—“मुझे किसी की जान बचाना ज़्यादा पसंद है।” आप (सल्ल०) ने कहा—”तुम्हारे ऊपर सिर्फ़ तुम्हारी ज़िम्मेदारी है।” (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 6639)

खुशदिली से मिलो और नरम बात बोलो

इब्न उमर (रज़ि०) ने कहा—“नेकी आसान है—मुस्कराता चेहरा और नरम बोल।” (*अल-जामिउस सग़ीर*, हदीस संख्या 10271)

ईमान इंसान को अल्लाह वाला बनाता है

बरा बिन आज़िब कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया—“ईमान की सबसे मज़बूत डोर यह है कि इंसान अल्लाह के लिए मोहब्बत करे और अल्लाह के लिए दुश्मनी करे। (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 18524)

ख़ुदा के हुक्म के आगे झुकना

ताइफ़ के क़बीले सक़ीफ़ का एक घराना बनू अम्र बिन उमैर था और क़बीला बनू मख़ज़ूम का एक घराना था—बनू मुग़ीरा। इन दोनों घरानों के बीच इस्लाम से पहले सूद (ब्याज) का लेन-देन चलता था। मक्का फ़तह होने के बाद जब दोनों मुसलमान हो गए, उस वक़्त बनू अम्र बिन उमैर का सूद बनू मुग़ीरा पर बाक़ी था। उन्होंने अपना बक़ाया माँगा। बनू मुग़ीरा ने आपस में बात की और तय किया कि अब जबकि हम मुसलमान हो गए हैं, तो अपनी हलाल कमाई से सूद नहीं देंगे। इस बात पर झगड़ा बढ़ गया। उस समय मक्का में नबी (सल्ल०) की तरफ़ से अत्ताब बिन असीद हाकिम थे। उन्होंने नबी (सल्ल०) को यह मामला बताया। तो नबी (सल्ल०) ने जवाब में क़ुरआन की यह आयत लिखकर भेजी: “ऐ ईमान वालो, अल्लाह से डरो और जितना सूद बाक़ी है, उसे छोड़ दो अगर तुम सच्चे मोमिन हो। और अगर ऐसा न करोगे तो अल्लाह और उसके रसूल से जंग के लिए तैयार रहो।” (2:278-279) यह आयत सुनते ही बनू अम्र बिन उमैर का मन बदल गया। उन्होंने कहा: “हम अल्लाह की तरफ़ लौटते हैं और बाक़ी सूद छोड़ते हैं।” (*तफ़्सीर इब्ने कसीर*, खण्ड 1, पृष्ठ. 553)

जो रहम करेगा, उस पर रहम किया जाएगा

सुनन अल-तिर्मिज़ी में वर्णन है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा: “जो रहम करने वाले हैं, रहम करने वाला (अल्लाह) उन पर रहम करता है। तुम ज़मीन

वालों पर रहम करो, आसमान वाला तुम पर रहम करेगा।” (*सुनन अल-तिर्मिज़ी*, हदीस संख्या 1924)

जो कुछ होता है, अल्लाह ही की तरफ़ से होता है

अली बिन अबी तालिब (रज़ि०) से कहा गया: “क्या हम आपकी पहरेदारी करें?” उन्होंने कहा: “इंसान की तक़दीर ही उसकी हिफ़ाज़त करती है।” एक और रिवायत में है कि नबी (सल्ल०) ने कहा:

> “हर चीज़ की एक सच्चाई होती है। और बंदा तब तक ईमान की असली सच्चाई तक नहीं पहुँच सकता जब तक वह यह न जान ले कि जो चीज़ उसे मिली, वह उससे चूक नहीं सकती थी। और जो चीज़ उससे चूक गई, वह उसे मिल नहीं सकती थी।” (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 27490)

ईमान की लज़्ज़त इंसान तब तक नहीं पाता जब तक यह न मान ले कि जो उसके साथ हुआ, वह टल नहीं सकता था, और जो नहीं हुआ, वह कभी होने वाला नहीं था।

इस्लाम की शिक्षा देना सबसे क़ीमती काम है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: “अगर अल्लाह तुम्हारे ज़रिए किसी एक इंसान को भी हिदायत (सत्य का मार्ग) दिखा दे, तो ये तुम्हारे लिए उन सब चीज़ों से बेहतर है जिन पर सूरज निकलता है।” (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 2942) दाई (संदेश वाहक) हमेशा भलाई चाहता है, चाहे उसकी बात कोई न माने और उसके साथ दुर्व्यवहार ही क्यों न करें

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बीस दिन से ज़्यादा ताइफ़ का घेराव किया। जब मुसलमानों के लिए ये मुश्किल हो गया तो आपने लौटने का हुक्म दिया। एक आदमी ने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल, क़बीला सक़ीफ़ के लिए बद्दुआ कीजिए।" रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने दोनों हाथ उठाए और कहा: "ऐ अल्लाह, सक़ीफ़ को सत्य का मार्ग दिखा और उन्हें हमसे मिला दे।" (*अल-बिदाया वन्-निहाया*, खंड 4, पृष्ठ 47)

इसी तरह आपसे कहा गया कि क़बीला दोस विद्रोही और अवज्ञाकारी हो गया है, उसके लिए बद्दुआ कीजिए। आपने कहा: "ऐ अल्लाह, क़बीला दोस को हिदायत दे और उन्हें ईमान वाला बना दे।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 6397)

वो नेकी, नेकी नहीं है जिससे घमंड पैदा हो

अहमद बिन अताउल्लाह अल-इस्कंदरी (658-709 हिजरी) ने अपनी किताब अल-हिकम में लिखा है: "वो गुनाह जिससे इंसान में विनम्रता और हीनता का भाव आए, उस नेकी से बेहतर है जिससे इंसान में घमंड और अकड़ आ जाए।"

अल्लाह की याद ही अमल का सार है

हज़रत अबू दरदा से उल्लेख है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "क्या मैं तुम्हें न बताऊँ कि कौन-सा कर्म सबसे उत्तम है, और तुम्हारे पालनहार के निकट सबसे पवित्र है, और तुम्हारे दर्जे को ऊँचा करने वाला है, और तुम्हारे लिए सोने-चाँदी दान करने से भी बेहतर है, और इससे भी बढ़कर है कि तुम अपने दुश्मन से युद्ध करो, उनकी गर्दनें काटो और वे तुम्हारी गर्दनें काटें?" सहाबा ने कहा: "हाँ, ऐ अल्लाह के रसूल!" आप ने फ़रमाया: "अल्लाह को याद करना।" (*सुनन अल-तिर्मिज़ी*, हदीस संख्या 3377)

योग्य और नेक इंसान सबसे क़ीमती होता है

हज़रत उमर (रज़ि०) ने एक बार अपने दोस्तों से कहा: "अपनी-अपनी इच्छाएँ बताओ।" किसी ने कहा: "मेरी तमन्ना है कि यह घर दिरहम (चाँदी के सिक्कों) से भर जाए और मैं सब अल्लाह की राह में खर्च कर दूँ।" किसी ने कहा: "मेरे पास इस घर जितना सोना होता तो मैं उसे अल्लाह की राह में देता।" किसी ने कहा: "काश यह घर मोतियों से भर जाता और मैं उन्हें अल्लाह की राह में खर्च करता।" तब हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा: "लेकिन मेरी ख्वाहिश तो यह है कि यह घर अबू उबैदा बिन जर्राह, मुआज़ बिन जबल और हुज़ैफ़ा बिन अल-यमान जैसे लोगों से भर जाए, और मैं उन्हें अल्लाह के काम में लगाऊँ।" (*उस्दुल ग़ाबा फ़ी मारिफ़तिस सहाबा*, खण्ड 1, पृष्ठ 469)

नेता या सरदार की अच्छाईयाँ

इब्न सअद बताते हैं कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने कहा—मैंने उमर (रज़ि०) की इतनी सेवा की कि उनके घरवालों में से भी किसी ने उतनी नहीं की। वे मुझे हमेशा अपने पास बिठाते और इज़्ज़त देते थे। एक दिन मैं उनके घर में अकेला था। अचानक उन्होंने इतनी गहरी सांस ली कि मुझे लगा अभी उनकी जान निकल जाएगी। मैंने पूछा—क्या आपने डर की वजह से यह आह भरी? उन्होंने कहा—हाँ। मैंने पूछा—कौन-सा डर? उन्होंने कहा—पास आओ। जब मैं पास गया तो बोले—इस काम (नेतृत्व) के लिए मुझे कोई सही आदमी नज़र नहीं आता। मैंने छह लोगों के नाम गिनाए और कहा—क्या आप फलां-फलां को भूल रहे हैं? मैं एक-एक नाम लेता गया और वे हर एक के बारे में कुछ न कुछ कहते रहे। आखिर में उन्होंने कहा—"यह काम उसी के लिए ठीक है जो सख़्त हो मगर अकड़ वाला न हो, नरम हो मगर कमज़ोर न हो, ख़र्च करने वाला हो मगर फ़ुज़ूलखर्च न हो, और रोकने वाला हो मगर कंजूस न हो।"

अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने कहा—ये सारे गुण उमर (रज़ि०) के अलावा किसी और में इकट्ठे नहीं मिले। (*कन्जुल उम्माल*, असर संख्या 14255)

अमीर (लीडर) के साथी कैसे हों

आमिर शाबी कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन अब्बास ने बताया कि मेरे पिता ने मुझसे कहा—"बेटा! मैं देखता हूँ कि अमीरुल मोमिनीन (उमर रज़ि.) तुम्हें अपनी बैठकों में बुलाते हैं, पास बिठाते हैं और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथियों के साथ तुमसे भी मशविरा करते हैं। तुम मेरी तीन बातें याद रखो: "अल्लाह से डरना। अमीरुल मोमिनीन तुम्हें कभी झूठा न पाएं। उनका राज़ कभी बाहर मत कहना और उनके सामने किसी की बुराई या चुग़ली मत करना।"

आमिर कहते हैं—मैंने अब्दुल्लाह बिन अब्बास से कहा, इनमें से हर एक नसीहत हज़ार के बराबर है। उन्होंने जवाब दिया—हर नसीहत तो दस हज़ार से भी बढ़कर है। (*अल-मोजम अल-कबीर*, अल-तबरानी, असर संख्या 10619)

चापलूस लोगों का साथ अच्छी निशानी नहीं है

आयशा (रज़ि०) कहती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: "जब अल्लाह किसी हाकिम (शासक) के लिए भलाई चाहता है तो उसके साथ सच्चा सलाहकार रखता है। अगर हाकिम भूल जाए तो उसे याद दिलाए, और अगर उसे याद हो तो उसका साथ दे। लेकिन जब अल्लाह उसके लिए भलाई नहीं चाहता, तो उसे बुरा सलाहकार दे देता है—वो अगर भूल जाए तो याद न दिलाए, और अगर याद हो तो साथ न दे।" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 2932)

सिर्फ़ शब्दों से जताया जाने वाला लगाव काफ़ी नहीं

ज़ुबैर बिन नुफैर कहते हैं: मेरे अब्बा बताते थे कि हम एक दिन मिक़दाद बिन असवद (रज़ि०) के पास बैठे थे। उसी वक़्त एक आदमी गुज़रा। उन्हें देखकर उसने कहा: "कितनी ख़ुशनसीब हैं ये आँखें जिन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को देखा। ख़ुदा की क़सम! काश हम भी वो सब देखते जो आपने देखा और जिन मौक़ों पर आप रहे हम भी रहते।" मुझे उसकी बात अच्छी लगी और मैंने सोचा कि उसने तो अच्छी ही बात कही। लेकिन मिक़दाद (रज़ि०) नाराज़ हो गए और बोले: "इंसान को क्यों ऐसी जगहों की हाज़िरी की तमन्ना करनी चाहिए जिसे अल्लाह ने उससे बचाकर रखा है? कौन जाने उस वक़्त अगर ये मौजूद होता तो कैसा बर्ताव करता! ख़ुदा की क़सम, बहुत से लोग रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आए, लेकिन अल्लाह ने उन्हें जहन्नम में डाल दिया क्योंकि उन्होंने न आपकी बात मानी और न आप पर ईमान लाए।" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 23810)

इब्राहीम तैमी अपने अब्बा से रिवायत करते हैं: कूफ़ा का एक शख़्स हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि०) से बोला: "अबू अब्दुल्लाह! क्या आपने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को देखा और उनकी संगत में रहने का अवसर मिला?" हुज़ैफ़ा (रज़ि०) ने कहा: "हाँ, भतीजे।" उसने पूछा: "आप लोग उस वक़्त क्या करते थे?" हुज़ैफ़ा (रज़ि०) बोले: "ख़ुदा की क़सम! हम बहुत मुश्किलें उठाते थे।" कूफ़ी ने कहा: "ख़ुदा की क़सम! अगर हम उस ज़माने में होते तो आपको ज़मीन पर चलने ही न देते, आपको अपनी गर्दनों पर उठाए रहते, आपकी सेवा करते और हर काम करते।" (*अल-बिदायह वन्-निहायह*, खण्ड 4, पृष्ठ 113)

सहीह मुस्लिम में ये अल्फ़ाज़ भी आए हैं कि उस आदमी ने कहा: "अगर हम रसूलुल्लाह (सल्ल०) का ज़माना पाते तो आपके साथ लड़ते और हर सख़्ती झेलते।" इस पर हुज़ैफ़ा (रज़ि०) ने कहा: "क्या सच में तुम ऐसा करते?" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 1788)

सच्चाई और निष्ठा के बिना कोई भी बलिदान स्वीकार्य नहीं होता

उहुद की लड़ाई (3 हिजरी) में एक मुसलमान शामिल हुआ और लड़ते-लड़ते मारा गया। जब उसकी माँ को ख़बर मिली तो उसने कहा—"हाय, मेरा बेटा शहीद हो गया।" पैगंबर (सल्ल०) ने यह सुना तो कहा—"रुको, तुम्हें कैसे पता कि वह सच में शहीद हुआ? हो सकता है कि वह फुज़ूल बातें करता रहता हो और ऐसी चीज़ देने में कंजूसी करता रहा हो जिसके देने में उसका कोई नुक़सान न होता।" (*मुस्नद अबू याला*, हदीस संख्या 6646)

किसी को भी अल्लाह के बराबर मत ठहराओ

अब्दुल्लाह इब्न अब्बास बताते हैं—एक आदमी नबी (सल्ल०) के पास आया और बातचीत में कहने लगा—"जो अल्लाह चाहे और आप चाहें।" रसूल (सल्ल०) ने इस बात को अच्छा नहीं माना और कहा—"क्या तुमने मुझे अल्लाह के बराबर कर दिया? बल्कि यूँ कहो—जो केवल अल्लाह चाहे" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 2561)

आख़िरी वक़्त तक अल्लाह पर भरोसा

रसूलुल्लाह (सल्ल०) हिजरत के लिए मक्का से निकले तो सबसे पहले तीन दिन तक ग़ार-ए-सौर (सौर नामी गुफ़ा) में ठहरे। क़ुरैश के लोग उन्हें तलाश करते-करते उसी ग़ार तक पहुँच गए। अबू बक्र (रज़ि०) ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल! दुश्मन इतने क़रीब आ गए हैं कि अगर उनमें से कोई अपने

पैरों की तरफ़ देख ले तो हमें अपने क़दमों के नीचे देख लेगा।" रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया—"अबू बकर, तुम्हारा क्या ख़याल है उन दो के बारे में जिनका तीसरा साथी अल्लाह है?" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 2381)

दुनियावी परेशानियों में ख़ुदा की याद का सहारा लेना

अली इब्न अबी तालिब (रज़ि०) बताते हैं कि फ़ातिमा (रज़ि०) का हाल ये था कि घर का सारा काम उन्हीं को करना पड़ता। चक्की पीसते-पीसते उनके हाथों में छाले पड़ गए थे। बाहर से मशक भरकर पानी लाना पड़ता, जिससे गर्दन पर निशान पड़ गया था। झाड़ू लगाने से उनके कपड़े गंदे हो जाते। एक बार रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास कुछ बंदी आए। मैंने फ़ातिमा से कहा—"तुम अपने अब्बा के पास जाओ और अपने लिए एक मुलाज़िम माँग लो।" फ़ातिमा (रज़ि०) गईं, लेकिन वहाँ बहुत सारे लोग थे। आप (सल्ल०) से मिल नहीं सकीं और वापस लौट आईं। अगले दिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) हमारे घर आए और पूछा—"क्या काम था?" फ़ातिमा (रज़ि०) चुप रहीं। तब मैंने पूरा किस्सा बताया: "...चक्की पीसने से उन (फातिमा) के हाथों पर निशान पड़ गए हैं, पानी से भरा मश्कीज़ा लाने से उनकी गर्दन में (पट्टे का) निशान पड़ गया है, घर में झाड़ू लगाने से कपड़े मैले हो जाते हैं...।" ये सुनने के बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन्हें नौकर नहीं दिया, बल्कि फ़रमाया—

> "ऐ फ़ातिमा! अल्लाह से डरो, अपने रब के फ़र्ज़ निभाओ और अपने घर का काम खुद करो। जब बिस्तर पर जाओ तो 33 बार 'सुब्हान अल्लाह' कहो, 33 बार 'अल्हम्दु लिल्लाह' कहो और 34 बार 'अल्लाहु अकबर' कहो। ये पूरे सौ होंगे और ये तुम्हारे लिए नौकर से बेहतर है।" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 2988)

आख़िरत का ज़िक्र आते ही अपना दावा छोड़ दिया

उम्मे सलमा (रज़ि०) कहती हैं कि—अनसार के दो आदमी एक पुरानी विरासत का झगड़ा लेकर अल्लाह के रसूल (सल्ल.) के पास आए। उस मामले में दोनों के पास न तो कोई गवाह था और न सबूत। रसूलुल्लाह (सल्ल.) ने फ़रमाया—"तुम लोग अपना झगड़ा मेरे पास लाते हो और मैं भी एक इंसान हूँ, हो सकता है तुममें से कोई अपनी बात ज़्यादा अच्छे ढंग से रखे और मैं उसी हिसाब से फ़ैसला कर दूँ। लेकिन अगर मैंने किसी के हक़ में ऐसा फ़ैसला कर दिया जिसमें मैंने उसके भाई का हिस्सा काटकर उसे दे दिया हो, तो वह उसे न ले। क्योंकि असल में मैंने उसे आग का टुकड़ा दिया है जिसे वह क़ियामत के दिन अपनी गर्दन में लटकाए हुए आएगा।" यह सुनकर दोनों अनसारी आदमी रो पड़े। दोनों ने कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल! मैं अपना हक़ अपने भाई को देता हूँ।" रसूलुल्लाह (सल्ल.) ने फ़रमाया—"जब तुमने ऐसा कर दिया है तो अब जाओ, विरासत को दो हिस्सों में बाँटो। फिर पर्ची डालकर तय करो और जो हिस्सा तुम दोनों में से किसी को मिले, दूसरा उसको उसके लिए हलाल कर दे।" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 26717)

अल्लाह के डर से कोड़ा हाथ से गिर पड़ा

अबू मसऊद बदरी (रज़ि०) कहते हैं—एक दिन मैं किसी बात पर अपने ग़ुलाम से नाराज़ हो गया और उसे कोड़े से मारने लगा। तभी पीछे से आवाज़ आई—"ऐ अबू मसऊद! जान लो।" लेकिन मैं ग़ुस्से में था, आवाज़ को पहचान न सका। जब आवाज़ देने वाला क़रीब आया तो देखा कि वह अल्लाह के रसूल (सल्ल०) हैं। आप फ़रमा रहे थे—

> "अबू मसऊद! जान लो, जितना क़ाबू तुम्हें इस इंसान पर है, उससे कहीं ज़्यादा क़ाबू अल्लाह को तुम पर है।"

यह सुनकर कोड़ा मेरे हाथ से गिर पड़ा। मैंने कहा—"अब मैं कभी किसी ग़ुलाम को नहीं मारूँगा। मैं इस ग़ुलाम को अल्लाह की ख़ुशी के लिए आज़ाद करता हूँ।" आपने फ़रमाया—"अगर तुम ऐसा न करते तो आग की लपट तुम्हें छू लेती।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 1659)

कमज़ोर से व्यवहार करते समय भी ख़ुदा की सज़ा का भय बनाए रखो

रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपनी पत्नी उम्मे सलमा (रज़ि०) के घर पर थे। आपको किसी काम के लिए ख़ादिमा (नौकरानी) की ज़रूरत हुई। आपने उसे आवाज़ दी, मगर वह न आई। आपके चेहरे पर ग़ुस्से का असर नज़र आने लगा। उम्मे सलमा (रज़ि०) उठीं और परदे के पास जाकर देखा तो वह ख़ादिमा बाहर बकरियों के बच्चों से खेल रही थी। उम्मे सलमा ने दोबारा उसे बुलाया, तब वह आई। उस वक़्त रसूलुल्लाह (सल्ल०) के हाथ में एक मिस्वाक थी। आपने उससे कहा—"अगर मुझे क़ियामत के दिन की सज़ा का डर न होता, तो मैं तुझे इसी मिस्वाक से मारता।" (*अल-अदबुल-मुफरद*, हदीस संख्या 184)

अल्लाह से माँगने की सबसे बड़ी चीज़—मग़फ़िरत (क्षमा)

अनस बिन मालिक (रज़ि०) कहते हैं—अंसार के पास काम करने वाले ऊँटों की कमी हो गई। वे रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आए ताकि आप उनके लिए ऊँटों का इंतज़ाम कर दें या कोई बहती नहर खुदवा दें। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उन्हें देखकर कहा—"अंसार के लिए स्वागत है, अंसार के लिए स्वागत है। अल्लाह

की क़सम! आज तुम मुझसे जो भी माँगोगे, मैं तुम्हें ज़रूर दूँगा। और तुम्हारे लिए जो चीज़ भी मैं अल्लाह से माँगूँगा, वह ज़रूर देगा।" यह सुनकर अंसार का दिल बदल गया। उन्होंने सोचा—माँगने की सबसे बड़ी चीज़ तो आख़िरत है। ऐसे क़ीमती मौक़े पर दुनिया क्यों माँगें? उन्होंने एक-दूसरे से कहा—"इस मौक़े को ग़नीमत जानो और मग़फ़िरत (क्षमा) माँगो।" उन्होंने कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल! हमारे लिए मग़फ़िरत की दुआ कीजिए।" आपने फ़ौरन कहा—" ऐ अल्लाह! अंसार को माफ़ कर दे, उनके बेटों को माफ़ कर दे, उनकी औरतों को माफ़ कर दे।" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 12414)

ग़ुस्सा न कर, ग़ुस्सा न कर, ग़ुस्सा न कर

अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं—एक व्यक्ति रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया और कहा—"मुझे नसीहत कीजिए।" आपने फ़रमाया—"ग़ुस्सा न कर।" उसने फिर कहा—"मुझे नसीहत दीजिए।" आपने फिर फ़रमाया—"ग़ुस्सा न कर।" वह बार-बार कहता रहा और आप हर बार यही कहते रहे—"ग़ुस्सा मत कर।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 6116)

दुनिया से भरे हुए, पर आख़िरत से ख़ाली

हज़रत अबू दरदा ने कहा—"यह क्या बात है कि खाने-पीने की चीज़ों से तुम्हारे पेट भरे हुए हैं लेकिन इल्म (ज्ञान) व मारिफ़त से तुम ख़ाली हो" (*जामि बयानुल इल्म*, खण्ड 2, पृष्ठ 202)

वे अल्लाह को देखकर खुश होंगे और अल्लाह उन्हें देखकर खुश होगा

तल्हा बिन बरा (रज़ि०) नबी (सल्ल०) से बैअत करने आए। उस समय वे जवान थे। उन्होंने कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल! आप जो भी कहेंगे, मैं मानूँगा। कभी नाफ़रमानी नहीं करूँगा।" आप (सल्ल०) ने पूछा—"अगर मैं कहूँ कि माँ-बाप से रिश्ता तोड़ दो, तब भी मानोगे?" रावी बताते हैं—उनकी माँ थी और वे उनका बहुत ध्यान रखते थे। लेकिन तल्हा बिन बरा फिर भी तैयार हो गए। तब आप (सल्ल०) ने कहा—"ऐ तल्हा! हमारे धर्म में रिश्ते तोड़ना नहीं है। मैंने तो बस यह चाहा कि तुम्हें अपने ईमान पर पूरा यक़ीन हो।"

तल्हा बिन बरा ने इस्लाम क़बूल किया और अपनी मृत्यु तक सच्चे और नेक मुसलमान बने रहे। जब वे अपनी अंतिम बीमारी से गुज़र रहे थे, नबी (सल्ल०) उनका हालचाल लेने आए। आपने देखा कि वे बेहोश हैं। आपने कहा—"मुझे लगता है कि तल्हा आज रात ही इस दुनिया से चले जाएँगे।" फिर आप यह कह कर वापस आ गए—"जब इन्हें होश आए तो मुझे बुला लेना।" आधी रात को उन्हें होश आया, लेकिन उन्होंने कहा—"किसी को मत भेजो, रात को अंधेरे में कहीं आपको कोई नुकसान न पहुँचे।" उसी रात उनका इंतक़ाल हो गया। सुबह की नमाज़ के बाद जब नबी (सल्ल०) को ख़बर दी गई तो आपने दुआ की:

> "ऐ अल्लाह! तू तल्हा से ऐसे मिलना कि वह तुझे देखकर प्रसन्न हो और तू उसे देखकर प्रसन्न हो।"

(*अल-जामिउल कबीर*, अल-सुयूती, हदीस संख्या 9769)

महत्त्व उस इंसान का है जो तुम्हारे भीतर बसता है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा के बारे में शिकायत की गई कि वे मज़ाक़ और हँसी-ठिठोली करते रहते हैं। आप (सल्ल०) ने कहा—"उन्हें छोड़ दो। उनके दिल में अल्लाह और उसके रसूल से सच्चा प्यार है।" (*अल-जामिउल कबीर कबीर*, अल-सुयूती, हदीस संख्या 715)

दो संभावनाओं के बीच

रसूलुल्लाह (सल्ल०) दुआ करते समय अक्सर कहते थे—"ऐ दिलों को पलटने वाले, मेरा दिल अपने धर्म पर मज़बूत कर दे।" (*सुनन अल-तिर्मिज़ी*, हदीस संख्या 3587) एक दिन हज़रत आयशा ने सुना तो पूछा—ऐ ख़ुदा के रसूल! आप ये दुआ बार-बार क्यों करते हैं? आपने फरमाया—

> हर इंसान का दिल अल्लाह की उँगलियों में से दो उँगलियों के बीच होता है। जब वो चाहता है उसे सीधा कर देता है और जब चाहे तो उसे पलट देता है। (*अल-जामिउल कबीर*, हदीस संख्या 19504)

इससे पता चलता है कि कोई भी इंसान भटकने के ख़तरे से पूरी तरह सुरक्षित नहीं है। हर किसी को अपने ईमान की लगातार देखभाल करनी है। हर वक़्त अल्लाह से ये दुआ माँगनी चाहिए कि वो हमें भटकने या ग़लती करने से बचाए। जिस पल अल्लाह की मदद इंसान से हट जाएगी, उसी पल वो रास्ता भटक जाएगा। इंसान हमेशा हिदायत और गुमराही के बीच खड़ा होता है और सिर्फ़ अल्लाह की मदद ही उसे सही रास्ते पर टिकाए रख सकती है।

ज़बान और दिल—सबसे अच्छे भी, सबसे बुरे भी

लुक़्मान हकीम एक हब्शी ग़ुलाम थे। उनके मालिक ने एक दिन कहा—एक बकरी ज़बह करो और उसमें से दो सबसे अच्छे टुकड़े निकालो। लुक़्मान ने बकरी ज़बह की और ज़बान और दिल निकालकर मालिक को दे दिए। कुछ दिन बाद मालिक ने फिर कहा—एक बकरी ज़बह करो और उसमें से दो सबसे बुरे टुकड़े निकालो। लुक़्मान ने बकरी ज़बह की और फिर ज़बान और दिल निकालकर सामने रख दिए। मालिक ने हैरानी से पूछा—जब मैंने सबसे अच्छे टुकड़े माँगे तो तुमने ज़बान और दिल निकाले, और जब सबसे बुरे टुकड़े माँगे तब भी यही निकाले। क्यों? लुक़्मान हकीम ने जवाब दिया—अगर ज़बान और दिल ठीक हों तो इनसे अच्छी कोई चीज़ नहीं, और अगर ये बिगड़ जाएँ तो इनसे बुरी भी कोई चीज़ नहीं। (*तफ़्सीर इब्ने कसीर*, खंड 11, पृष्ठ 50)

हर हाल में पैग़म्बर (सल्ल०) की आज्ञा मानना

हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से कहा कि मैं फ़लाँ की बेटी से शादी करना चाहता हूँ। आपने कहा—पहले जाकर उसे देख लो। वे लड़की के माँ-बाप के पास गए, अपना इरादा बताया और रसूल का पैग़ाम सुनाया। माँ-बाप को यह बात अच्छी नहीं लगी कि उनकी बेटी किसी अजनबी के सामने आए और वह उसे देखे। उस वक़्त लड़की घर के अंदर थी और परदे के पीछे से बातें सुन रही थी। उसने ज़ोर से कहा—अगर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने हुक्म दिया है तो आकर मुझे देख लो। और अगर उन्होंने हुक्म नहीं दिया है तो मैं तुम्हें ख़ुदा की क़सम देती हूँ कि ऐसा बिलकुल मत करना। (*अस्सुननुल कुबरा*, अल-बैहक़ी, हदीस संख्या 13490)

इस्लाम के कलिमा की वास्तविकता—
इख़्लास (निष्ठा) और परहेज़गारी है

हज़रत उस्मान बिन अफ्फान कहते हैं—मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को कहते सुना कि मैं ऐसा कलिमा जानता हूँ, जो भी इंसान उसे दिल से कहेगा, उस पर आग हराम हो जाएगी। हज़रत उमर फ़ारूक़ ने कहा—मैं बताता हूँ कि वह कलिमा क्या है। वह है निष्ठा (इख़लास) का कलिमा, जिसे अल्लाह ने मुहम्मद (सल्ल०) और उनके साथियों पर फ़र्ज़ किया था। यह परहेज़गारी (तक़्वा) का कलिमा है, जिसकी सीख अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने अपने चाचा अबू तालिब को मौत के वक़्त दी थी। वह है इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के योग्य नहीं है। (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 447)

ईमान की असलियत यह है कि इंसान
अदृश्य वास्तविकताओं को देखने लगे

हज़रत मालिक बिन अनस कहते हैं कि हज़रत मुआज़ बिन जबल, अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास आए। रसूल (सल्ल०) ने उनसे पूछा—“मुआज़, तुम्हारी सुबह किस हाल में हुई?” उन्होंने कहा—“मैंने अल्लाह पर ईमान रखते हुए सुबह की।” रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया—“हर बात का एक आधार होता है और हर बात की वास्तविकता होती है। तो जो तुम कह रहे हो, उसका साक्ष्य क्या है?” उन्होंने कहा—“ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी कभी ऐसी सुबह नहीं हुई जिसमें मुझे यह ख़याल न आया हो कि शायद शाम तक मैं ज़िंदा न रहूँ। और कभी ऐसी शाम नहीं हुई जिसमें यह ख़याल न आया हो कि शायद मैं सुबह तक न पहुँचूँ। मैंने कभी कोई क़दम ऐसा नहीं उठाया जिसमें यह डर न रहा हो कि शायद अगला क़दम न उठा पाऊँ। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं घुटनों के बल गिरी हुई सारी क़ौमें

देख रहा हूँ, जिन्हें उनके कर्म-पत्र (आमालनामे) की तरफ़ बुलाया जा रहा है और उनके साथ उनका नबी है। और उनके साथ वे मूर्तियाँ भी हैं जिन्हें वे अल्लाह के सिवा पूजते थे। और मुझे ऐसा मालूम होता है जैसे मैं जहन्नम वालों की सज़ा और जन्नत वालों का इनाम अपनी आँखों से देख रहा हूँ।" यह सुनकर रसूल (सल्ल०) ने कहा—"तुम मारिफ़त (सच्चे बोद्ध) तक पहुँच गए हो, अब उसी पर क़ायम रहो।" (*हिल्यतुल औलिया व तबक़ातुल अस्फिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 242)

क़ुरआन नसीहत के लिए है, न कि सिर्फ़ तिलावत के लिए

हज़रत आयशा (रज़ि०) को बताया गया कि कुछ लोग रात को क़ुरआन पढ़ते हैं और एक रात में पूरा क़ुरआन एक-दो बार ख़त्म कर डालते हैं। हज़रत आयशा ने कहा—"उन्होंने पढ़ा लेकिन असल में उन्होंने नहीं पढ़ा। मैं रातभर रसूल (सल्ल०) के साथ खड़ी रहती थी। आप सूरह बक़रा, सूरह आल-ए-इमरान और सूरह निसा पढ़ते। जब भी आप किसी ऐसी आयत से गुज़रते जिसमें अल्लाह से डर का ज़िक्र होता, तो आप अल्लाह से दुआ करते और उसकी पनाह माँगते। और जब भी ऐसी आयत आती जिसमें खुशख़बरी होती, तो आप अल्लाह से दुआ करते और उसे पाने की तमन्ना करते।" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 24609)

दुनियावी तकलीफ़ों को सब्र के साथ सहने से इंसान के गुनाह मिट जाते हैं।

हज़रत अबू बक्र ने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के सामने यह आयत पढ़ी: "जो व्यक्ति कोई बुराई करेगा, वह उसका बदला पाएगा।" और पूछा कि: अब हमारे

लिए भलाई की क्या सूरत है? जो भी बुराई हमने की है, उसकी सज़ा तो हमें मिलेगी। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: “ऐ अबू बकर, अल्लाह तुम्हें माफ़ करे, क्या तुम बीमार नहीं होते? क्या तुम्हें थकान नहीं होती? क्या तुम ग़मगीन नहीं होते? क्या तुम पर मुसीबत नहीं आती? क्या तुम्हें ठोकर नहीं लगती?” उन्होंने कहा: “हाँ, यह सब तो होता है।” आप ने फ़रमाया: “यह उन्ही गुनाहों का बदला है।” (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 68)

बड़ों को चाहिए कि वे छोटे या ग़रीब लोगों के जनाज़े में भी शरीक हों

मदीना में एक काले रंग की पागल-सी औरत थी। वह मस्जिद की सफ़ाई किया करती थी। उसका निधन हो गया तो कुछ लोगों ने उसे दफ़ना दिया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इसकी ख़बर न दी। जब आपको पता चला तो आपने फ़रमाया: “मुसलमानों में से किसी का भी निधन हो तो मुझे उसकी सूचना दिया करो।” और फिर बाद में आपने उसकी नमाज़-ए-जनाज़ा अदा की। (*अस्सुननुल कुबरा, अल-बैहक़ी*, हदीस संख्या 6999)

ईमान की विशेषताएँ

केवल जानकारी से कोई विद्वान नहीं बनता

हज़रत मालिक बिन अनस का कथन है कि—"इल्म (ज्ञान) एक रोशनी है, जो केवल ऐसे दिल में ठहरता है जो अल्लाह से डरने वाला और विनम्र हो।" (*तर्तीबुल-मदारिक वा त़क़रीबुल-मसालिक*, खण्ड 2, पृष्ठ 60)

ख़ुशहाली ज़्यादा बड़ी परीक्षा है

सअद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया:

> "मुझे तुम्हारे लिए गरीबी की परीक्षा से ज़्यादा, अमीरी की परीक्षा का डर है। तुमने तंगहाली में सब्र किया, लेकिन यह दुनिया बहुत मीठी, हरी-भरी और लुभाने वाली है।" (*मुस्नद अबी यअला*, हदीस नं० 780; *मुस्नद अल-बज़्ज़ार*, हदीस नं० 1168)

तबरानी ने औफ़ बिन मालिक के ज़रिए ये अल्फ़ाज़ बताए हैं:

> "उसकी क़सम जिसके इख़्तियार में मेरी जान है! तुम्हारे ऊपर दुनिया की नेमतें खूब बरसेंगी यहाँ तक कि मेरे बाद अगर तुम्हारे दिल भटके तो उसकी वजह सिर्फ़ दुनिया ही होगी।" (*सुनन इब्न माजह*, हदीस नं० 5)

अल्लाह के यहाँ घमंड की माफ़ी नहीं

सुफ़यान सौरी (रह०) ने कहा: "जो गुनाह मन की इच्छा से होता है, उसकी माफ़ी की उम्मीद रहती है। लेकिन जो गुनाह घमंड से होता है, उसकी माफ़ी की उम्मीद नहीं। क्योंकि इब्लीस का गुनाह घमंड से था और आदम की ग़लती इच्छा से थी। आदम को तौबा के बाद माफ़ कर दिया गया, लेकिन इब्लीस

हमेशा के लिए रहमत से दूर कर दिया गया।" (*नसाइहुल-इबाद*, इब्न हजर अस्क़लानी, पृ० 11)

जिसके बुरे काम उसके बाद भी चलते रहें

एक हकीम ने कहा: बरकत उसी के लिए है कि जब वह मरे तो उसके गुनाह भी उसके साथ चले जाएँ, और बदक़िस्मती उस के लिए है कि जब वह मरे तो उसके गुनाह उसके बाद भी बाक़ी रहें। (*अल-मुवाफिक़ात,* खण्ड 1, पृष्ठ 361)

बातचीत बंद करना जायज़ नहीं

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: "किसी मुसलमान के लिए यह जायज़ नहीं कि वह अपने भाई से तीन दिन से ज़्यादा बोलचाल बंद रखे। दोनों आपस में मिलें तो यह उससे मुँह मोड़े और वह इससे मुँह मोड़े और उन दोनों में सबसे बेहतर वही है जो पहले सलाम करे।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 6077)

जब हर चीज़ आख़िरत की याद दिलाने लगे

इब्ने कसीर ने सूरह तौबा की तफ़्सीर के आखिर में एक हदीस बयान की है:

> अबू ज़र (रज़ि०) कहते हैं: "हमने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इस हाल में पाया कि अगर कोई चिड़िया भी अपने पंख हवा में फड़फड़ाती, तो आप उस से भी हमें कोई न कोई सीख या नसीहत देते थे।" (*अल-मोजम अल-कबीर*, अल-तबरानी, हदीस संख्या 1647)

सुधार तभी होगा जब हम रसूलुल्लाह (सल्ल०) के दौर जैसे काम करें

इमाम मालिक (रह०) ने कहा, "इस उम्मत का आख़िरी हिस्सा उसी तरह सुधरेगा, जैसे इसका पहला हिस्सा सुधरा था।" (*मुसनद अल-मुवत्ता,* अल-जौहरी, असर संख्या 783)

क़ीमत काम की है, सिर्फ़ कल्पनाओं की नहीं

हज़रत अली (रज़ि०) ने कहा: अल्लाह के बन्दो! मैं तुम्हें और अपने आप को अल्लाह से डरने और उसकी आज्ञा के पालन की नसीहत करता हूँ। अच्छे काम आगे भेजो और बेकार की ख़्वाहिशें छोड़ दो। क्योंकि अगर कोई अपने कर्मों में कमी करता है तो सिर्फ़ उम्मीदें उसे कोई फ़ायदा नहीं दे सकतीं। (*अल-इक़्दुल फ़रीद*, खंड 4, पृष्ठ 158)

दुश्मन से भी नफ़रत मत करो

उहुद की जंग में दुश्मनों ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) पर पत्थर फेंके। पत्थर लगने से आपके दाँत टूट गए और चेहरे से ख़ून बहने लगा। इस जंग में आपके चाचा हज़रत हम्ज़ा शहीद हो गए और बहुत से साथी मारे गए। कुछ सहाबा ने कहा कि इन दुश्मनों के लिए बद्दुआ कीजिए। आपने फ़रमाया: "मैं लानत (धिक्कार) करने के लिए नहीं भेजा गया हूँ, बल्कि आह्वानकर्ता और रहमत बनाकर भेजा गया हूँ।" (*अल-जामिअ लि-अहकामिल क़ुरआन*, हदीस संख्या 6077)

सच्चे ईमान वाला वही है जो अल्लाह की पुकार पर तुरंत लब्बैक (मैं हाज़िर हूँ) कहे

कुरान की सूरह माएदा में यह हुक्म उतरा—“ऐ ईमान वालो! शराब, जुआ, बुत (मूर्तियाँ) और पांसे (जुए के खेल में इस्तेमाल होने वाला dice) ये सब नापाक चीज़ें हैं—शैतान के कामों में से हैं। इनसे बचो, ताकि तुम सफल हो सको। शैतान चाहता है कि शराब और जुए के ज़रिए तुममें दुश्मनी और नफ़रत पैदा करे और तुम्हें अल्लाह की याद और नमाज़ से रोक दे। तो क्या अब भी तुम इनसे बाज़ न आओगे?” जब यह आयत नबी (सल्ल०) पर उतरी तो उन्होंने हमेशा की तरह इसे सहाबा को पढ़कर सुनाया। जब आप पढ़ते हुए इस हिस्से पर पहुंचे—“तो क्या अब भी तुम बाज़ न आओगे?”—तो हर सहाबी ज़ोर से बोल उठा—“ऐ हमारे रब, हम रुक गए! ऐ हमारे रब, हम रुक गए!” (*तफ़सीर अल-तबरी*, खण्ड 8, पेज 21)

लोगों के लिए सबसे अच्छा वही है, जो दूसरों के मामले में अल्लाह से डरता हो

मुअम्मर ताबिई कहते हैं कि सहाबा अक्सर यह कहा करते थे—“तुम्हारा सबसे ज़्यादा भलाई चाहने वाला वही है, जो तुम्हारे बारे में अल्लाह से डरता हो।” (*अल-अम्र बिल-मारूफ़ वन्नही अनिल-मुंकर*, इब्न अबिद्दुनिया, असर नं. 59)

वे लोग जो पैग़म्बर के फ़ैसले से पीछे नहीं हटते थे

पैग़म्बर (सल्ल०) ने अपनी ज़िंदगी के आख़िरी दिनों में रोमियों से लड़ाई के लिए एक फ़ौज तैयार की थी। तीन हज़ार लोगों की इस फ़ौज में बड़े-बड़े सहाबी (साथी) शामिल थे। इस फ़ौज का सेनापति उसामा बिन ज़ैद को बनाया गया था, जो उस समय नौजवान थे। हसन बिन अबी अल-हसन बताते हैं कि पैग़म्बर (सल्ल०) के निधन के बाद जब अबू बक्र (रज़ि०) खलीफ़ा बने तो "उसामा की फ़ौज" रास्ते में ही थी। उसामा बिन ज़ैद ने हज़रत उमर से कहा—"आप खलीफ़ा-ए-रसूल (यानी अबू बकर) के पास जाकर कहें कि हमें मदीना लौटने की इजाज़त दे दें। इस समय सबसे पहले हमें उन लोगों का मुक़ाबला करना चाहिए जो इस्लाम से फिर गए हैं और मदीना के लिए ख़तरा बन रहे हैं।" हज़रत उमर ने जाकर अबू बक्र (रज़ि०) से यह बात कही। अबू बक्र (रज़ि०) ने जवाब दिया— "अगर कुत्ते और भेड़िए मुझे फाड़ भी डालें, तब भी मैं उस फ़ैसले को नहीं बदलूँगा, जो पैग़म्बर (सल्ल०) ने ख़ुद किया है।" हज़रत उमर ने कहा—"अंसार का कहना है कि फ़ौज का अमीर ऐसा होना चाहिए जो उम्र में उसामा से बड़ा हो।" यह सुनकर अबू बक्र (रज़ि०) बैठे-बैठे झपट पड़े और उमर की दाढ़ी पकड़कर बोले—

> "अरे ख़त्ताब के बेटे! तेरी मां तुझे खो दे! पैग़म्बर (सल्ल०) ने उन्हें सेनापति बनाया है और तुम कहते हो कि मैं उनसे ये पद छीन लूँ?" (*तारीख़ अत्तबरी*, खंड 3, पृष्ठ 226)

अल्लाह का नाम सुनते ही सर झुका देना

हज़रत आयशा (रज़ि०) बताती हैं कि पैग़म्बर (सल्ल०) मेरे कमरे में थे। उसी समय उन्होंने ऊँची आवाज़ें सुनीं। दरवाज़े के बाहर दो आदमी झगड़ रहे थे। एक ने दूसरे को क़र्ज़ दिया था। जिसे क़र्ज़ चुकाना था, वह कह रहा था—"क़र्ज़ की

रकम थोड़ी कम कर दो।" मगर जिसने क़र्ज़ दिया था, वह मान नहीं रहा था। उसने ग़ुस्से में आकर कहा—"ख़ुदा की क़सम, मैं ऐसा नहीं करूँगा।" पैग़म्बर (सल्ल०) बाहर आए और फरमाया—"यह कौन है जो अल्लाह की क़सम खाकर कह रहा है कि वह भलाई का काम नहीं करेगा?"

यह सुनकर वह व्यक्ति नम्र हो गया और बोला—"ऐ अल्लाह के रसूल, वह व्यक्ति मैं हूँ। अब से वही होगा जो अल्लाह चाहेगा, और मेरे लिए वही पसंद है जो वह पसंद करे।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 1557)

नजात (छुटकारा) सिर्फ़ उनके लिए जो पैग़म्बर और उनके साथियों के रास्ते पर चलें

यहूदी इकहत्तर (71) टुकड़ियों में बँट गए, ईसाई बहत्तर (72) टुकड़ियों में बँट गए। यह उम्मत (मुस्लमान) तिहत्तर (73) टुकड़ियों में बँट जाएगी। इन सब में से एक को छोड़कर बाक़ी सब जहन्नम में जाएँगे। लोगों ने पूछा, वो कौन हैं ऐ अल्लाह के रसूल, फ़रमाया: वो जो उस रास्ते की पैरवी करें जिस पर मैं और मेरे साथी हैं। (*मुस्तदरक अल-हाकिम*, हदीस संख्या 444)

अल्लाह की याद सबसे बड़ी इबादत है

इब्न अब्बास (रज़ि०) ने कहा: रात का कुछ हिस्सा दीनी बात-चीत में बिताना, मुझे पूरी रात इबादत करने से ज़्यादा प्रिय है। (*जामे बयानुल इल्म व फज़्लिही*, खंड 1, पृष्ठ 117)

इंसान से कम, अल्लाह से ज़्यादा

सौर बिन ज़ैद कहते हैं: मैंने तौरात में पढ़ा कि ईसा (अलैहिस्सलाम) ने अपने साथियों (हवारियों) से कहा: "ऐ लोगो! अल्लाह से ज़्यादा बातें करो और इंसानों से कम बातें करो।" उन्होंने पूछा: "हम अल्लाह से ज़्यादा बातें कैसे करें?" ईसा (अलैहिस्सलाम) ने कहा: "तन्हाई में अल्लाह से मन की बात करो, तन्हाई में उससे दुआ करो।" (*हिल्यतुल औलिया*, खंड 6, पृष्ठ 195)

अल्लाह वाले वे हैं जो क़ुरआन वाले हैं

अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: "लोगों में कुछ अल्लाह वाले होते हैं।" पूछा गया: "ऐ अल्लाह के रसूल! वे कौन लोग हैं?" आप ने फ़रमाया: "वे क़ुरआन वाले हैं।" (*सुनन इब्न माजह*, हदीस संख्या 215)

नफ़रत और मोहब्बत से ऊपर उठकर व्यवहार करना

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) मक्का से हिजरत करके मदीना गए, उस समय काबा की चाबी उस्मान बिन तल्हा के पास थी। यह चाबी उनके परिवार में पुराने समय से चली आ रही थी। हिजरत से पहले एक बार आपने उस्मान बिन तल्हा से चाबी माँगी, तो उन्होंने देने से मना कर दिया और आपको अपशब्द कहे। आपने उनकी सारी कटु बातें सह लीं और बस इतना कहा—"उस्मान! हो सकता है एक दिन यह चाबी मेरे हाथ में हो और मैं जिसे चाहूँ, उसे दूँ।" उस्मान बिन तल्हा ने जवाब दिया—"वह दिन क़ुरैश की बर्बादी का दिन होगा, जब यह चाबी तुम्हारे जैसे आदमी को मिल जाएगी।" मक्का की विजय के बाद आपने काबा की चाबी मँगवाई। चाबी आपके हाथ में थी कि आपके चचेरे भाई और दामाद अली बिन

अबी तालिब खड़े हुए और बोले—"यह चाबी मुझे दे दीजिए।" आपने कोई जवाब नहीं दिया और पूछा—"उस्मान बिन तल्हा कहाँ हैं?" जब वे आए तो आपने कहा—

> "उस्मान, यह लो अपनी चाबी। आज का दिन भलाई और निष्ठा का दिन है।" (*अल-बिदाया वन्निहाया,* खण्ड 3, पृष्ठ 301)

जिहालत (अज्ञानता) के सामने धैर्य और सहनशीलता

ज़ैद बिन सअना, मदीना के एक यहूदी विद्वान थे, जो बाद में मुसलमान हो गए। वे कहते हैं—जब मैंने मोहम्मद (सल्ल०) को देखा, तो उनके चेहरे पर नबूवत की सारी निशानियाँ पाईं। लेकिन दो निशानियाँ देखनी बाकी थीं: एक यह कि आप हमेशा सब्र और सहनशीलता दिखाएँगे, और दूसरा यह कि अगर कोई अज्ञानता के कारण अत्याचार करेगा, तो आपकी सहनशीलता और बढ़ जाएगी। ज़ैद कहते हैं—एक दिन मैंने देखा कि आप आ रहे थे और आपके साथ अली बिन अबी तालिब भी थे। तभी एक आदमी ऊँट पर बैठा आया। वह देखने में बद्दु (देहाती) लग रहा था। उसने कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल! मेरी जाति के लोग फलाँ गाँव में इस्लाम अपना चुके हैं। मैंने उनसे कहा था कि अगर इस्लाम लाओगे तो रोज़ी-रोटी में बरकत होगी। अब वहाँ अकाल पड़ गया है। डर है कि कहीं वे लालच में इस्लाम न छोड़ दें, जैसे लालच में अपनाया था। अगर आप सही समझें तो उनकी मदद के लिए कुछ भेज दीजिए।" आप (सल्ल०) ने अली की तरफ देखा। अली ने कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल, इस वक़्त हमारे पास कुछ भी नहीं बचा।" ज़ैद कहते हैं—मैं पास गया और बोला, "मोहम्मद! अगर आप चाहें तो खजूरों के बदले मुझसे रकम ले लीजिए।" आपने मान लिया। मैंने 80 मिस्क़ाल सोना आपको दिया, जिसे आपने पूरा का पूरा उस आदमी को दे दिया और कहा—"उनकी मदद करो और सबके बीच बराबरी से बाँट दो।"

ज़ैद कहते हैं—तय समय से दो-तीन दिन पहले मैं आपको एक दीवार के पास मिला। आपके साथ कई साथी भी थे। मैं आपके पास गया, आपका कपड़ा पकड़ लिया और सख्ती से बोला—“मोहम्मद! मेरा हक़ क्यों नहीं देते? ख़ुदा की कसम, जहाँ तक मैं जानता हूँ, सारे बनू अब्दुल मुत्तलिब टाल-मटोल करने वाले हैं।” उमर (रज़ि०) उस वक़्त आपके साथ थे। यह सुनकर वे बहुत गुस्सा हो गए और बोले — “ऐ अल्लाह के दुश्मन! तुम रसूलुल्लाह (सल्ल०) के लिए ऐसी बातें कह रहे हो! उस ख़ुदा की कसम, जिसके हाथ में मेरी जान है, अगर आप (सल्ल०) का ख्याल न होता तो मैं अभी तुम्हें तलवार से मार डालता।” लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने पूरी शांति से मेरी तरफ देखा। फिर आपने उमर (रज़ि०) से कहा:

> “उमर! मैं और ज़ैद, दोनों बेहतर व्यवहार के हक़दार थे। तुम मुझे कहते कि भलाई के साथ भुगतान करो और ज़ैद को कहते कि अच्छे अंदाज़ से माँगो। उमर! इन्हें ले जाओ, इनका हक़ अदा कर दो और बीस साअ खजूर और दे दो, क्योंकि तुमने इन्हें डराया-धमकाया है।” (अल-मोजम अल-कबीर, हदीस संख्या 5147)

ग़ुस्से को पी जाना ईमान को बढ़ाता है

अब्दुल्लाह इब्न अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया:

> “अल्लाह को सबसे प्यारी चीज़ यह है कि इंसान अपना ग़ुस्सा पी जाए। जब भी कोई बंदा अल्लाह के लिए अपना ग़ुस्सा पी जाता है, तो अल्लाह उसके दिल को ईमान से भर देता है।” (*अल-जामिउस-सग़ीर व ज़ियादतुहू*, हदीस संख्या 11946)

ख़ुशामद और तारीफ़ से प्रभावित न होना

ज़ुबैर बिन नुफैर कहते हैं कि कुछ लोगों ने उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) से कहा—"ख़ुदा की क़सम! हमने आप जैसा इंसाफ़ करने वाला, सच बोलने वाला और मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) पर सख़्ती करने वाला कोई नहीं देखा। ऐ अमीरुल मोमिनीन! आप रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बाद सबसे अच्छे इंसान हैं।" उस वक़्त औफ़ बिन मालिक (रज़ि०) भी बैठे थे। उन्होंने कहा—"ख़ुदा की क़सम! तुम लोग ग़लत कह रहे हो। हमने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के बाद उनसे भी बेहतर देखा है।" लोगों ने पूछा—"कौन?" औफ़ बिन मालिक ने कहा—"अबू बक्र।"

उमर (रज़ि०) ने कहा—"औफ़ ने सच कहा और तुम लोगों ने ग़लत। ख़ुदा की क़सम! अबू बक्र कस्तूरी से भी ज़्यादा ख़ुशबूदार थे, और मैं तो अपने घर के ऊँटों से भी ज़्यादा भटका हुआ हूँ।" (हिल्यतुल औलिया व तबक़ातुल अस्फ़िया, खण्ड 5, पृष्ठ 134)

मुँह पर तारीफ़ करना बर्बादी है

हज़रत हसन (रज़ि०) कहते हैं कि एक आदमी हज़रत उमर (रज़ि०) के पास आया और उनकी तारीफ़ करने लगा। उमर (रज़ि०) ने कहा: "तुम मुझे भी बर्बाद कर रहे हो और ख़ुद को भी बर्बाद कर रहे हो।" (*अस्सम्तु व आदाबुल-लिसान*, खंड 1, पृष्ठ 275)

हक़ माँगने वाले की सख़्ती सहना बरकत लाता है

अबू सईद (रज़ि०) कहते हैं कि: अल्लाह के रसूल (सल्ल.) के पास एक देहाती (बद्दू) आया। उसने आपसे अपना क़र्ज़ माँगा जो आप पर बाक़ी था। उसने कहा: "अगर आपने अदा न किया तो मैं आप पर सख़्ती करूँगा।" आपके साथियों ने उस बद्दू को डाँटा और कहा: "तुझे शर्म नहीं आती? तुझे पता है, तू किससे बात कर रहा है?" उसने कहा: "मैं तो बस अपना हक़ माँग रहा हूँ।" रसूलुल्लाह (सल्ल.) ने फ़रमाया: "तुम लोग हक़ माँगने वाले का साथ क्यों नहीं देते?" फिर आपने ख़ौला बिन्त क़ैस के पास आदमी भेजा और कहलवाया: "अगर तुम्हारे पास खजूर हों तो हमें उधार दे दो, जब हमारे पास आएँगी तो चुका देंगे।" खजूरें लेकर आपने उस बद्दू को दीं और उसे खाना भी खिलाया। बद्दू ने कहा: "आपने वफ़ा किया, अल्लाह भी आपसे वफ़ा करे।" रसूलुल्लाह (सल्ल.) ने फ़रमाया: "सबसे अच्छे लोग वो हैं जो अपना हक़ खुशी-खुशी अदा करते हैं।"

फिर कहा: "अल्लाह उस क़ौम को बरकत नहीं देता जिसमें कमज़ोर अपना हक़ ताक़तवर से आसानी से न ले पाए।" (*सुनन इब्न माजह*, हदीस संख्या 2426)

तारीफ़ से अभिमान नहीं, बल्कि विनम्रता पैदा होनी चाहिए

हज़रत नाफ़े कहते हैं कि एक आदमी अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) के सामने उनकी तारीफ़ करते हुए बोला: "ऐ सबसे अच्छे इंसान! ऐ सबसे अच्छे इंसान के बेटे!" हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) ने कहा:

मैं लोगों में सबसे अच्छा नहीं हूँ, न ही सबसे अच्छे लोगों का बेटा हूँ। मैं तो बस अल्लाह का एक साधारण बंदा हूँ। उसी से उम्मीद रखता हूँ और उसी से डरता हूँ।

ख़ुदा की क़सम! तुम किसी आदमी की इतनी तारीफ़ करोगे कि आखिरकार उसे बरबाद ही कर दोगे। (*हिल्यतुल औलिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 307)

वो समाज अच्छा नहीं जिस में नसीहत (सच्ची सलाह) को बुरा माना जाए

अदी बिन हातिम (रज़ि०) कहते हैं कि "आज जो चीज़ तुम्हें सही लगती है, वो पहले ग़लत मानी जाती थी। और आज जो ग़लत लग रही है, वो आने वाले वक्त में सही मानी जाएगी। तुम लोग उस वक्त तक सही रास्ते पर रहोगे, जब तक बुराई को बुराई मानते रहोगे और अच्छाई से मुँह नहीं मोड़ोगे। और जब तक तुम्हारा हाल ये रहेगा कि तुम्हारा आलिम (विद्वान) खड़ा होकर तुम्हें समझाए और लोग उसकी बात को हल्का न समझें।" (*अल-जामिउल-कबीर*, हदीस संख्या 460)

हाकिम (शासक) से भिड़ने के बजाय अपने दायरे में काम करना

अबू ज़र गिफ़ारी (रज़ि०) बताते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उनसे पूछा: "अबू ज़र! जब ऐसा होगा कि तुम्हारे अमीर (हाकिम) आम लोगों से ज़्यादा हिस्सा (टैक्स) लेने लगेंगे, तब तुम क्या करोगे?" अबू ज़र ने कहा: "ऐ ख़ुदा के रसूल! मैं तलवार उठाऊँगा।" रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा: "तुम तलवार मत उठाना, बल्कि सब्र करना। यहाँ तक कि (आख़िरत में) मेरे पास आ जाओ।" (*अल-तबक़ातुल कुबरा*, इब्न साद, खण्ड 4, पृष्ठ 212)

अबू ज़र ने अगरचे हमेशा सच कहा, लेकिन कभी भी शासक के खिलाफ़ तलवार नहीं उठाई। और इसी हाल में उनकी मौत हुई।

नसीहत की बात कहने में किसी से न डरो

तुममें से कोई ये न सोचे कि वो छोटा है और सच्ची बात कहने का हक़ नहीं रखता। अगर उसने कोई गलत चीज़ देखी है तो उसका फ़र्ज़ है कि सच कहे, चाहे वो कमज़ोर ही क्यों न हो। लेकिन अगर डर की वजह से चुप रहा, तो क़ियामत के दिन जब अल्लाह के सामने खड़ा होगा और वो वक़्त भूल चुका होगा, तब अल्लाह उससे पूछेगा: "तूने सच क्यों नहीं कहा?" वो कहेगा: "परवरदिगार! मैं लोगों से डर गया था।" अल्लाह कहेगा: "क्या अल्लाह तेरे सामने नहीं था, जिससे तू डरता?" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 11868)

खुद को तौल लो, इससे पहले कि तुम्हें तौला जाए

हज़रत साबित बिन हज्जाज कहते हैं कि हज़रत उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने कहा: "खुद को तौलो, इससे पहले कि तुम्हें तौला जाए। आज ही अपने कामों का हिसाब कर लो, इससे पहले कि कल तुम्हारा हिसाब किया जाए। क्योंकि आज का हिसाब आसान है, कल के हिसाब से और बड़ी पेशी (आख़िरत की अदालत) के लिए अपने को तैयार कर लो।" (*सुनन अत्तिर्मिज़ी*, हदीस संख्या 2459)

एक ने मार खाई, दूसरा बच गया

सालिम बिन अबी जअद कहते हैं कि हज़रत अबू दरदा के सामने से दो बैल गुज़रे जो एक गाड़ी में जुते हुए थे। उनमें से एक काम करता रहा और दूसरा रुक गया।

यह देखकर हज़रत अबू दरदा ने कहा—इसमें भी सीख है। यानी जो रुक गया उसे डंडा पड़ा और दूसरा बच गया। (*हिल्यतुल औलिया व तबक़ातुल असफ़िया*, खंड 1, पृष्ठ 209)

सोचना और सीख लेना सबसे बड़ा अमल (कर्म) है

हज़रत औन बिन अब्दुल्लाह बिन उतबा कहते हैं कि मैंने हज़रत उम्मे दरदा से पूछा कि हज़रत अबू दरदा का अधिकतर अमल क्या होता था। उन्होंने जवाब दिया—सोचना और सीख लेना। (*हिल्यतुल औलिया व तबक़ातुल असफ़िया*, खंड 1, पृष्ठ 208)

सहाबा की इबादत—ख़ुदा और आख़िरत पर चिंतन।

हज़रत मुहम्मद बिन वासेअ कहते हैं कि हज़रत अबू ज़र्र की मृत्यु के बाद एक व्यक्ति बसरा से सवार होकर मदीना आया और उनकी पत्नी उम्मे ज़र्र से मिला ताकि हज़रत अबू ज़र्र की इबादत के बारे में पूछ सके। उम्मे ज़र्र ने कहा—वे पूरा दिन तन्हाई में रहकर चिंतन करते थे। (*हिल्यतुल औलिया व तबक़ातुल असफ़िया*, खंड 1, पृष्ठ 164)

हर चीज़ में सीख और नसीहत है

हज़रत दारानी ने कहा—जब मैं अपने घर से निकलता हूँ तो जिस चीज़ पर भी मेरी नज़र पड़ती है, उसमें मुझे अल्लाह की कोई न कोई नेमत (कृपा) नज़र आती है और मेरे लिए उसमें एक सीख होती है। (*तफ़्सीर इब्ने कसीर*, खंड 1, पृष्ठ 539)

सच्चे ईमान वाले व्यक्ति की पहचान क्या है?

अक़्लमंद इंसान के लिए ज़रूरी है कि जब तक वह अपने होश व हवास में रहे, वह अपने लिए कुछ समय खास कर ले। एक समय जब वह अपने ख़ुदा से बातें करे। एक समय जब वह आत्म-मंथन करे। एक समय जब वह ख़ुदा की बनाई हुई चीज़ों पर सोचे। और एक समय जब वह अपनी खाने-पीने की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए अलग रहे। अक़्लमंद को सिर्फ़ तीन कामों के लिए ही चलना चाहिए—आख़िरत (परलोक) की तैयारी के लिए, या अपनी रोज़ी-रोटी कमाने के लिए, या उस लज़्ज़त (आनंद) के लिए जो उसके लिए मना (हराम) नहीं है। अक़्लमंद के लिए यह भी ज़रूरी है कि वह अपने दौर (समय) को जानने वाला हो। अपने कामों की तरफ ध्यान देने वाला हो। अपनी ज़बान पर काबू रखे। और वह अपने काम के लिए उतना ही बोले जितना ज़रूरी हो। (*सहीह इबन हिब्बान*, खण्ड 1, पृष्ठ 534)

इबादत

ख़ुदा की इबादत करना और लोगों को तकलीफ़ न देना

अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) कहते हैं: मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा—"ऐ अल्लाह के रसूल! कौन सा काम सबसे अच्छा है?" आपने फ़रमाया—"नमाज़ को वक़्त पर पढ़ना।" मैंने फिर पूछा—"उसके बाद कौन सा काम सबसे अच्छा है?" आपने फ़रमाया—"ये कि लोग तुम्हारी ज़बान से सुरक्षित रहें।" (*अल-मोजम अल-कबीर*, हदीस संख्या 9802)

अल्लाह को पहचानना सबसे बड़ी इबादत है

अनस बिन मालिक (रज़ि०) बयान करते हैं कि एक आदमी रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया और उसने पूछा, "अल्लाह के रसूल! सबसे बेहतरीन अमल कौन-सा है?"

आपने फ़रमाया, "अल्लाह को जानना।" उसने फिर वही सवाल दोहराया।

आपने कहा, "अल्लाह की मारिफ़त हासिल करना।" इस पर उस आदमी ने कहा, "मैं अमल के बारे में पूछ रहा हूँ और आप इल्म की बात कर रहे हैं।" तब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया—

> "इल्म के साथ किया गया थोड़ा-सा अमल भी फ़ायदेमंद होता है, लेकिन बिना इल्म के किया गया ज़्यादा अमल भी कोई लाभ नहीं देता।" (*जामे बयानुल-इल्म व फ़ज़्लिहि*, खण्ड 1, पृष्ठ 202)

दीन (धर्म) में असल अहमियत अच्छे किरदार की है

तबरानी ने अब्दुर्रहमान बिन हारिस बिन अबी मिर्दास सुलमी से रिवायत की है: वो कहते हैं—हम रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास बैठे थे। आपने वुज़ू के लिए पानी मंगवाया, उसमें हाथ डाला और वुज़ू किया। हमने उस पानी को लिया और पी लिया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने पूछा—"तुम्हें ये करने पर किसने तैयार किया?" हमने कहा—"अल्लाह और उसके रसूल की मोहब्बत।" आपने फ़रमाया—"अगर तुम चाहते हो कि अल्लाह और उसका रसूल तुमसे मोहब्बत करें, तो जब तुम्हें अमानत दी जाए, उसे पूरा करो। जब बात करो, तो सच्चाई से बोलो। और अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा बर्ताव करो।" (*अल-मोजम अल-अवसत*, हदीस संख्या 6517)

रिवाजी नहीं, सजग और बौद्धिक इबादत चाहिए

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया: "इन्सान नमाज़ पढ़ता है, रोज़ा रखता है, ज़कात देता है, हज और उमरा करता है—यहाँ तक कि उसने सब अच्छे काम कर लिये। लेकिन क़ियामत के दिन उसे इन सब का इनाम उसकी अक़्ल के हिसाब से ही मिलेगा।" (*शुअबुल ईमान*, हदीस संख्या 4316)

सबसे श्रेष्ठ अमल है—अल्लाह की याद दिल में समाई हो

सालिम बिन अबी जअद कहते हैं कि अबू दरदा (रज़ि०) से किसी ने कहा: "अबू सअद बिन मुनब्बेह ने सौ ग़ुलाम आज़ाद किये हैं।" अबू दरदा ने कहा: "ये

सचमुच बड़ी बात है कि कोई अपने पैसे से सौ ग़ुलामों को आज़ाद करे। लेकिन अगर चाहो तो मैं तुम्हें बताऊँ, इससे भी बढ़िया काम कौन सा है।" फिर उन्होंने कहा: "वो ईमान जो हर पल दिल में समाया रहे, और जिसकी वजह से तुम्हारी ज़बान सदा अल्लाह की याद में तर रहे।" (*शुअबुल ईमान*, हदीस संख्या 618)

अल्लाह का ज़िक्र हर वक़्त की नमाज़ है

हज़रत इब्न मसऊद (रज़ि०) ने कहा: "आलिम (दीन की समझ रखने वाला) हर वक़्त नमाज़ में रहता है।" लोगों ने पूछा: "वो कैसे हर वक़्त नमाज़ में रहता है?" उन्होंने जवाब दिया: "क्योंकि अल्लाह की याद उसके दिल और ज़बान दोनों पर रहती है।" (*जामि बयानुल इल्म*, खंड 1, पृष्ठ 232)

नमाज़ पढ़ने वाला अल्लाह की ज़िम्मेदारी में आ जाता है

सलमान फ़ारसी (रज़ि०) कहते हैं: "मैं अबू बक्र (रज़ि०) के पास गया और कहा—मुझे नसीहत कीजिए। उन्होंने कहा: 'ऐ सलमान! अल्लाह से डरते रहो। जान लो, जल्द ही फ़तहें (जीत) होंगी। उसमें तुम्हारा हिस्सा वही होगा, जो तुम खा लो या पहन लो। और याद रखो—जिसने पाँचों नमाज़ें पढ़ीं, वो सुबह और शाम अल्लाह की हिफ़ाज़त में होता है। तो किसी ऐसे बन्दे को मत मारना, जो अल्लाह की हिफ़ाज़त में हो। अगर ऐसा किया तो अल्लाह अपनी हिफ़ाज़त हटा देगा और तुम्हें मुँह के बल जहन्नम में डाल देगा।'" (*अल-जामिउल कबीर*, हदीस संख्या 97)

ईमान वाले की मदद करना बड़ी इबादत है

तबरानी और बैहक़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) का वाक़िया बयान किया है। वे मस्जिद-ए-नबवी में एतकाफ़ (ध्यान) में थे। एक आदमी आया, और सलाम कर के बैठ गया। इब्न अब्बास ने कहा: "तुम उदास और ग़मगीन लग रहे हो।" उसने कहा: "हाँ, ऐ रसूलुल्लाह (सल्ल०) के चचेरे भाई! मेरे ऊपर फलाँ आदमी का क़र्ज़ है। और इस क़ब्र वाले (अल्लाह के रसूल) की इज़्ज़त की क़सम, मैं उसे चुका नहीं सकता।" इब्न अब्बास ने कहा: "क्या मैं तुम्हारे लिए उससे बात करूँ?" आदमी ने कहा: "हाँ, अगर आप चाहें।" फिर इब्न अब्बास ने जूते पहने और मस्जिद से बाहर चले गये। आदमी ने कहा: "शायद आप भूल गये कि आप एतकाफ़ में हैं।" इब्न अब्बास (रज़ि०) ने कहा: "नहीं, मैं भूला नहीं। मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह कहते सुना है (और यह कहते हुए उनकी आँखों में आँसू आ गये):

> "'जो शख़्स अपने भाई की मदद के लिए निकला और पूरी कोशिश की, तो यह उसके लिए दस साल के एतकाफ़ से भी बेहतर है।'" (*शुअबुल ईमान*, अल-बैहक़ी, हदीस संख्या 3679)

मुफ़लिस (निर्धन) वह है जो आखिरत में मुफ़लिस रहे

अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि एक दिन हम रसूलुल्लाह (सल्ल.) के पास बैठे हुए थे। आपने कहा—"क्या तुम जानते हो कि मुफ़लिस कौन है?" लोगों ने कहा —"हमारे बीच मुफ़लिस वह है जिसके पास न पैसा है और न कोई सम्पत्ति।" आपने फ़रमाया—"मेरी उम्मत में मुफ़लिस वह है जो क़ियामत के दिन नमाज़, रोज़ा और ज़कात के साथ आएगा। मगर वह इस हालत में आएगा कि उसने किसी को गाली दी होगी, किसी पर झूठा इल्ज़ाम लगाया होगा, किसी का माल

खा लिया होगा, किसी का ख़ून बहाया होगा, किसी को मारा-पीटा होगा। तो उसकी कुछ नेकियाँ एक को दी जाएँगी, कुछ नेकियाँ दूसरे को। और जब उसकी सारी नेकियाँ ख़त्म हो जाएँगी और हिसाब बाक़ी रहेगा, तब दूसरों के गुनाह लेकर उसके ऊपर डाल दिए जाएँगे और फिर उसे आग में झोंक दिया जाएगा।" (*सुनन अल-तिर्मिज़ी*, हदीस संख्या 2418)

परेशानियों के दौर में नमाज़ की पनाह लेना

हुज़ैफ़ा (रज़ि०) कहते हैं—ग़ज़वा-ए-ख़ंदक में हमारी तादाद लगभग तीन सौ थी। यह एक बेहद कठिन रात थी। ऊपर की तरफ़ अबू सुफ़ियान और उनकी फ़ौज थी, नीचे की तरफ़ बनू क़ुरैज़ा थे, जिनकी ओर से हम अपने घर-परिवार को बिल्कुल असुरक्षित समझते थे। सर्दी बहुत सख़्त थी। इसके बाद तेज़ हवा चली जिसमें बिजली की कड़क-चमक थी। पत्थर उड़कर गिर रहे थे। अँधेरा इतना था कि कुछ दिखाई नहीं देता था।

ऐसी हालत में रसूलुल्लाह (सल्ल.) ने मुझे हुक्म दिया कि ख़ंदक के पार जाकर विरोधियों के पड़ाव की ख़बर लाओ—कि वे वापसी की बात कर रहे हैं या अभी डटे हुए हैं। मैं लोगों में सबसे ज़्यादा डरने वाला था और मुझे सर्दी भी बहुत लगती थी। लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल.) का हुक्म पाकर उठ खड़ा हुआ। आपने मेरे लिए हिफ़ाज़त की दुआ की। मैं अपने मिशन पर निकला और अबू सुफ़ियान की फ़ौज में घूम-फिरकर ख़बर लाया। वे लोग "अल-रहील, अल-रहील" (वापस चलो, वापस चलो) कह रहे थे।

जब मैं रसूलुल्लाह (सल्ल.) के पास पहुँचा तो आप चादर ओढ़े नमाज़ में मशग़ूल थे।

रसूलुल्लाह (सल्ल.) की आदत थी कि जब भी कोई कठिन मामला पेश आता तो आप नमाज़ पढ़ते। (*कन्ज़ुल उम्माल*, खण्ड 7, पृष्ठ. 69)

क़ुरआन से अपने दिलों को हरकत दो

अबू हम्ज़ा ने अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) से कहा—“मैं तेज़ पढ़ने वाला आदमी हूँ। कभी-कभी एक ही रात में एक-दो बार पूरा क़ुरआन पढ़ लेता हूँ।” हज़रत इब्न अब्बास (रज़ि०) ने जवाब दिया—“मुझे तुम्हारे इस काम से ज़्यादा अच्छा लगेगा अगर तुम एक सूरह पढ़ो। लेकिन जब पढ़ो, तो ऐसे पढ़ो कि तुम्हारे कान उसकी तिलावत को महसूस करें और तुम्हारा दिल उसकी बातों को अपना ले। क़ुरान ऐसे पढ़ो कि उसकी गहराई पर ठहर सको, और वह तुम्हारे दिल को झकझोर कर ज़िंदा कर दे। तुम्हारी कोशिश यह न हो कि बस किसी तरह आख़िर तक पहुँच जाओ।” (*मुख़्तसर ज़ादुल मआद*, खण्ड 1, पृ.26)

नमाज़ इंसान को अल्लाह की पनाह में रखती है

मुआज़ बिन जबल (रज़ि०) से एक लम्बी रिवायत का एक हिस्सा यह है:

> “जो व्यक्ति फ़र्ज़ नमाज़ जानबूझकर छोड़ दे, तो वह अल्लाह की हिफ़ाज़त से बाहर हो जाता है।” (*अल-मोजम अल-कबीर*, हदीस संख्या 233)

जुमा की नमाज़ का उद्देश्य अल्लाह के करीब होना है

नबी (सल्ल.) ने हिजरत से पहले मुसअब बिन उमैर (रज़ि०) को सामूहिक इबादत करने के बारे में तहरीरी हिदायत भेजी थी। दारे क़ुतनी की रिवायत के मुताबिक़

उसका एक वाक्य यह था: "जुमे के दिन जब सूरज आधे दिन से ढल जाए, तो दो रकअत नमाज़ के ज़रिये अल्लाह की निकटता हासिल करो।" (*अल-जामिउत्तफ़्सीर अल-इमाम इब्न रजब हनबली*, खण्ड 2, पृष्ठ 436)

दुनियादारी इंसान को ख़ुदा से दूर करती है

दुनियादार (लोभी) आलिमों के बारे में एक हदीस-ए-क़ुदसी में आया है: "सबसे छोटी सज़ा जो मैं उन्हें दूँगा, वह यह होगी कि मैं उनके दिलों से दुआ की मिठास और रूह छीन लूँगा।" (*जामे बयानुल इल्म व फ़ज़लिही*, खण्ड 1, पृष्ठ 668)

ख़ुशू आदमी के दिल से जुड़ा होता है, बाहरी सज-धज से नहीं

हज़रत आयशा (रज़ि०) ने एक बुज़ुर्ग को देखा। वह बहुत कमज़ोर और बुझी हुई हालत में चल रहे थे। आपने पूछा: इनका क्या हाल है? जवाब दिया गया: ये क़ुर्रा में से हैं (यानि क़ुरआन पढ़ाने-पढ़ने वाले और तालीम व इबादत में लगे रहने वाले)। यह सुनकर हज़रत आयशा (रज़ि०) ने कहा: "उमर (रज़ि०) क़ुर्रा के सरदार थे, लेकिन उनका हाल यह था कि जब चलते तो मज़बूती से चलते, जब बोलते तो ताक़त के साथ बोलते।" (*मदारिजुस्सालिकीन*, इब्न क़य्यिम, खण्ड 1, पृष्ठ 517)

हलाल चीज़ों से रोज़ा रखना, हराम चीज़ों से इफ़्तार करना

अनस बिन मालिक (रज़ि०) कहते हैं: दो औरतों ने रोज़ा रखा और साथ बैठकर लोगों की ग़ीबत (पीठ पीछे बुराई) और शिकायत करने लगीं। जब अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को उनके बारे में मालूम हुआ तो आपने फ़रमाया:

> "इन दोनों ने रोज़ा नहीं रखा। उस शख़्स का रोज़ा कैसे हो सकता है जो रोज़ा रखकर भी लोगों का मांस (ग़ीबत) खाता रहे?" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 2221)

एक और रिवायत में यह आता है:

"इन दोनों औरतों ने उस चीज़ से रोज़ा रखा जो अल्लाह ने उनके लिए हलाल (जायज़) की थी, और उस चीज़ से रोज़ा तोड़ा जो अल्लाह ने उनके लिए हराम की थी। एक औरत दूसरी के पास बैठ गई और दोनों लोगों के मांस खाती रहीं (बुराई करती रहीं)।" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 23654)

नमाज़ के बाद थोड़ी देर नमाज़ जैसी हालत बनी रहनी चाहिए

अबू रम्सा (रज़ि०) कहते हैं: मैंने नबी (सल्ल०) के साथ नमाज़ पढ़ी। नमाज़ खत्म करने के बाद आपने सलाम फेरा। एक आदमी, जो शुरू से नमाज़ में था, तुरंत सुन्नत पढ़ने के लिए खड़ा हो गया। उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) उसके पास पहुँचे, कंधे पकड़कर झकझोरा और कहा—बैठ जाओ! "अहल-ए-किताब (यहूदी-ईसाई) इसी वजह से बर्बाद हुए कि उनकी नमाज़ों में कोई फस्ल (गैप) नहीं होता था।" (यानी एक नमाज़ ख़त्म करके तुरंत दूसरी शुरू कर देते थे)। नबी

(सल्ल०) ने ऊपर देखा और कहा—“इब्न-ए-ख़त्ताब! अल्लाह ने तुम्हारे ज़रिए हक़ व सवाब (सत्य बात और पुन्य नेकी) तक पहुँचा दिया।” (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 23121)

ख़ुदा को सुनाने के लिए ऊँची आवाज़ की ज़रूरत नहीं

लोगों ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा, “क्या हमारा रब हमारे क़रीब है कि हम उससे धीमे बोलें, या वह दूर है कि ज़ोर से पुकारें?”

इस पर क़ुरान की आयत उतरी: “और जब मेरे बंदे तुमसे मेरे बारे में पूछें तो मैं निकट हूं, पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूं जब वह मुझे पुकारता है।” (क़ुरआन 2:186) अबू मूसा अशअरी (रज़ि०) बताते हैं कि सफ़र के दौरान जब लोग किसी घाटी पर चढ़ते तो “अल्लाहु अकबर” कहते हुए आवाज़ें ऊँची हो जातीं। एक बार दुआ करते वक़्त भी लोगों ने आवाज़ें ऊँची कर लीं, तो नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया: “लोगो, अपने ऊपर आसानी करो। तुम किसी बहरे या ग़ैरहाज़िर को नहीं पुकार रहे हो। जिसे पुकार रहे हो, वह तुम्हारे साथ है—वह सुनने वाला है, बहुत क़रीब है, और उसकी शान बहुत ऊँची है।” (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 2992)

दीन बेअसर हो जाता है, यदि उसका लक्ष्य केवल दुनिया कमाना रह जाए

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) बताते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: “अगर कोई ऐसा इल्म (ज्ञान) सीखे, जो असल में अल्लाह की ख़ुशी के लिए है, लेकिन वह उसे दुनिया कमाने के लिए सीखे, तो क़ियामत के दिन उसे जन्नत की ख़ुशबू

भी न मिलेगी।" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 3664; *सुनन इब्न माजह*, हदीस संख्या 252; *मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 8457)

असल इबादत अल्लाह के सामने नम्र होकर झुकना और गिड़गिड़ाना है

अब्दुल्लाह बिन जुदआन, इस्लाम से पहले के ज़माने में बहुत मेहमाननवाज़ और लोगों की मदद करने वाला था। वह हज़रत आयशा (रज़ि०) का रिश्तेदार था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) के नबी बनने से पहले ही उसकी मौत हो गई थी। एक दिन हज़रत आयशा (रज़ि०) ने पूछा: "या रसूलुल्लाह! अब्दुल्लाह बिन जुदआन लोगों की बहुत सेवा करता था, खाना खिलाता था। क्या क़ियामत के दिन उसे इसका फ़ायदा मिलेगा?" आप (सल्ल०) ने जवाब दिया: "नहीं। क्योंकि उसने कभी यह दुआ नहीं की, (ऐ मेरे रब, हिसाब-किताब के दिन मेरी ग़लतियाँ माफ़ कर देना)।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 214)

अल्लाह को अपने बन्दे की विनम्र पुकार पसंद है

जब कोई बंदा अपने रब से दुआ करता है और अल्लाह उससे मोहब्बत करता है, तो वह कहता है: "ऐ जिब्रील! मेरे बन्दे की दुआ तुरन्त पूरी मत करना। मुझे अच्छा लगता है कि मैं उसकी बेबस आवाज़ सुनता रहूँ।" (*जामिउल उलूम वल हिकम*, खण्ड 2, पृष्ठ 403)

सतर्क ज़िन्दगी कैसी होती है?

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ (रह.) ने कहा: "जिस काम में हिदायत (सही रास्ता) दिखाई दे, उसकी पैरवी करो। जिसमें नुक़सान साफ़ दिखे, उससे बचो और जो काम समझ में न आए, उसे अल्लाह पर छोड़ दो।" (*तख़रीजु अहादीसिल इहया*, खण्ड 9, पृष्ठ 277)

अच्छाई का ज़िक्र करना और बुराई को छिपाना

अबू हारुन कहते हैं कि मैं अबू हाज़िम के पास गया और उनसे पूछा—"दोनों आँखों का शुक्र (कृतज्ञता) क्या है?"

उन्होंने कहा—"जब तुम अपनी आँखों से अच्छाई देखो तो उसका उल्लेख करो, और जब आँखों से बुराई देखो तो उसे छुपा लो।" फिर मैंने पूछा—"दोनों कानों का शुक्र क्या है?" उन्होंने कहा—"जब तुम अपने कानों से अच्छाई सुनो तो उसे याद रखो, और जब अपने कानों से बुराई सुनो तो उसे भुला दो।" (*शुअबुल ईमान*, हदीस संख्या 4244)

तीन ऐसी बातें हैं जिनके अंदर बाकी सारी बातें समा जाती हैं

उम्मे अनस (रज़ि०) ने कहा—"ऐ अल्लाह के रसूल! मुझे कोई नसीहत कीजिए।" आपने फ़रमाया—गुनाह छोड़ दो, यही सबसे बड़ी हिजरत है। नमाज़-रोज़े जैसे फ़र्ज़ अदा करो, यही सबसे बड़ा जिहाद है। और अल्लाह को खूब याद करो,

क्योंकि अल्लाह के पास तुम्हारी सबसे प्यारी चीज़ उसकी याद ही होगी। (*अल-मोजम अल-कबीर*, हदीस संख्या 313)

असली इल्म वही है जो अल्लाह का डर पैदा करे

औफ़ बिन मालिक अशजई कहते हैं कि नबी (सल्ल०) के पास आपके साथी बैठे थे। आपने आसमान की ओर देखा और कहा—“वो वक़्त आने वाला है जब इल्म (ज्ञान) उठा लिया जाएगा।” अनसार में से एक शख़्स, ज़ियाद बिन लबीद ने कहा—“ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हमसे इल्म चला जाएगा, जबकि हमारे पास अल्लाह की किताब है और हम अपने बच्चों और औरतों को सिखा रहे हैं?” नबी (सल्ल०) ने कहा—“मैं तो तुम्हें मदीना का सबसे समझदार आदमी मानता था। क्या तुम यहूदियों की गुमराही (भटकाव) नहीं देखते? उनके पास भी अल्लाह की किताब थी।” इसके बाद जुबैर बिन नुफैर की मुलाक़ात शद्दाद बिन औस से हुई। उन्होंने ये हदीस सुनाई। शद्दाद ने पूछा—“जानते हो इल्म उठने का मतलब क्या है?” उन्होंने कहा—“नहीं।” शद्दाद ने कहा—“बरतन के चले जाने जैसा (यानि जिसमें इल्म रखा जाता है वही चला जाए)।” फिर शद्दाद ने कहा—“क्या जानते हो सबसे पहला इल्म कौन सा उठेगा?” उन्होंने कहा—“नहीं।” शद्दाद ने कहा—“ख़ुशू (अल्लाह का डर, नम्रता) उठ जाएगा, यहाँ तक कि तुम किसी को भी सच्चा ख़ुशू करने वाला नहीं देखोगे।” (*अल-इस्तीआब फ़ी मारिफ़तिल-अस्हाब*, खण्ड 2, पृष्ठ 534)

हर किसी को भटकने का खतरा है

नबी (सल्ल०) ने कहा—"ये उम्मत (क़ौम) पहले अल्लाह की किताब पर अमल करेगी। फिर कुछ समय तक अल्लाह के रसूल की सुन्नत पर अमल करेगी। उसके बाद लोग अपनी सोच पर चलेंगे। और जब वे राय पर चलने लगेंगे, तो भटक जाएंगे।" (*मुस्नद अबू याला*, हदीस संख्या 5856)

बुज़ुर्ग-परस्ती धीरे-धीरे मूर्ति-पूजा बन जाती है

सूरह नूह में पुराने ज़माने की कई मूर्तियों का ज़िक्र है—वद, सुवा, यगूस, यऊक़ और नस्र। मुफ़स्सिर इब्न जरीर तबरी ने मोहम्मद बिन क़ैस के हवाले से बताया है कि इन मूर्तियों के नाम असल में उनकी क़ौम के नेक बुज़ुर्गों के नाम पर रखे गए थे। ये लोग अल्लाह के अच्छे बंदे थे जो हज़रत आदम और हज़रत नूह के बीच के दौर में पैदा हुए। इनके बहुत से मानने वाले थे। जब ये लोग मर गए तो उनके चाहने वालों ने कहा—अगर हम इनकी मूर्तियाँ बना लें तो हमारी इबादत (पूजा) का शौक़ और बढ़ जाएगा। इसलिए उन्होंने इनकी मूर्तियाँ बना लीं। फिर जब दूसरी पीढ़ी आई तो शैतान ने उन्हें और गुमराह किया। उसने कहा—तुम्हारे बुज़ुर्ग इन मूर्तियों के पास जो पूजा करते थे, दरअसल वही इन बुज़ुर्गों की पूजा थी, और यही बुज़ुर्ग बारिश कराते हैं और सारे काम बनाते हैं। इस तरह धीरे-धीरे मूर्ति-पूजा शुरू हो गई। (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 4920)

अल्लाह के क़ानून में किसी के लिए छूट नहीं

सूरह माइदह में बनी इस्राईल का ज़िक्र करते हुए कहा गया है कि उनमें से जो लोग अल्लाह के बताए हुक्म के मुताबिक़ फ़ैसला नहीं करते, वे काफ़िर हैं, ज़ालिम हैं और फ़ासिक़ (गुनहगार) हैं। हुज़ैफ़ा (रज़ि०) से किसी ने कहा कि सूरह माइदह की ये आयतें तो बनी इस्राईल के लिए उतरी हैं, हमारे लिए नहीं। यानी यहूदियों में से जो अल्लाह के हुक्म से हटे वही काफ़िर, ज़ालिम और फ़ासिक़ है, हम नहीं। इस पर हुज़ैफ़ा (रज़ि०) ने कहा—बनी इस्राईल कितने अच्छे भाई हैं तुम्हारे! कड़वा सब उनके लिए और मीठा सब तुम्हारे लिए? हरगिज़ नहीं, ख़ुदा की क़सम! तुम क़दम-क़दम पर उनके जैसा करोगे। (*तफ़्सीर अत्तबरी*, खण्ड 8, पृष्ठ 459)

जब जन्नत वाले जन्नत में जाने से रोक दिए जाएंगे

अब्दुल्लाह बिन मोहम्मद बिन अकील कहते हैं—मैंने जाबिर बिन अब्दुल्लाह को यह कहते सुना कि मुझे पता चला एक सहाबी ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से एक हदीस सुनी थी। मैंने एक ऊँट खरीदा, उस पर काठी बाँधी और सफ़र शुरू किया। मैं एक महीने तक चलता रहा और फिर शाम (सीरिया) पहुँचा। वहाँ मैं अब्दुल्लाह बिन उनैस (रज़ि०) के घर गया। मैंने दरबान से कहा—मालिक से कहो कि जाबिर दरवाज़े पर हैं। उन्होंने पूछा—क्या अब्दुल्लाह के बेटे जाबिर? मैंने कहा—हाँ। फिर अब्दुल्लाह बिन उनैस बाहर आए और मुझे गले लगाया। मैंने कहा—मुझे पता चला है कि आपने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से एक हदीस सुनी है। मुझे डर था कि कहीं मैं मर न जाऊँ इससे पहले कि वह सुन लूँ। उन्होंने कहा—मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह कहते सुना: क़ियामत के दिन लोग नंगे, बिना खतना किए और

बिना सामान के उठाए जाएंगे। अल्लाह सबको आवाज़ देगा—दूर वाले भी वैसे ही सुनेंगे जैसे पास वाले। अल्लाह कहेगा: मैं बादशाह हूँ, मैं इंसाफ़ करने वाला हूँ। कोई जन्नती जन्नत में नहीं जाएगा अगर उसने किसी जहन्नमी पर ज़ुल्म किया हो और वह उसका बदला चाहता हो। और कोई जहन्नमी जहन्नम में नहीं जाएगा अगर उसने किसी जन्नती पर ज़ुल्म किया हो और वह बदला चाहता हो। मैंने पूछा—यह कैसे होगा जबकि हम सब नंगे और बिना सामान के उठाए जाएंगे? जवाब मिला—भलाइयों और बुराइयों के ज़रिए बदला चुकाया जाएगा। (*अल-अदबुल मुफरद*, अल-बुख़ारी, हदीस संख्या 970)

वही अमल (कर्म) क़बूल है जिसमें सांसारिक लाभ और ख़्याति की चाह न हो

अबू उमामा (रज़ि अल्लाहु अन्हु) कहते हैं कि एक आदमी रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया और बोला: "अगर कोई शख़्स जिहाद करे और उसके साथ-साथ सांसारिक लाभ और ख़्याति की चाह करे तो उसे क्या मिलेगा?"

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा: "उसके लिए कुछ नहीं है।"

उसने यही सवाल तीन बार किया और हर बार आपने यही जवाब दिया: "कुछ नहीं है।"

फिर आपने कहा: "अल्लाह वही अमल (अच्छा कर्म) क़बूल करता है जो सिर्फ़ उसी के लिए और उसी की रज़ा (प्रसन्नता) के लिए हो।" (*सुनन अल-नसई*, हदीस संख्या 3140)

उम्मीद और डर के बीच

हज़रत उमर (रज़ि अल्लाहु अन्हु) कहते हैं: "अगर आसमान से कोई आवाज़ आए कि ऐ लोगो! तुम सब जन्नत में जाओगे, सिवाए एक आदमी के, तो मुझे डर होगा कि कहीं वो मैं न होऊँ। और अगर आवाज़ आए कि ऐ लोगो! तुम सब जहन्नम में जाओगे, सिवाए एक आदमी के, तो मुझे उम्मीद होगी कि वो मैं ही हूँ।" (*हिल्यतुल औलिया*, खंड 1, पृष्ठ 53)

लोगों को माफ़ कर देना भी सदक़ा है

अबू अब्स बिन जबर (रज़ि अल्लाहु अन्हु) बताते हैं: रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक दिन लोगों से कहा कि अल्लाह की राह में सदक़ा दो। लोग अपनी हैसियत के मुताबिक़ लेकर आए। सहाबा में एक उल्बा बिन ज़ैद (रज़ि अल्लाहु अन्हु) थे। उनके पास कुछ भी न था। रात को उठे, नमाज़ पढ़ी और रोते हुए अल्लाह से बोले:

> "ऐ अल्लाह! मेरे पास कुछ नहीं है देने को। इसलिए मैं अपनी इज़्ज़त उन लोगों को सदक़ा करता हूँ (माफ़ करता हूँ) जिन्होंने मेरी बेइज़्ज़ती की है।"

सुबह जब लोग जमा हुए तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने पूछा: "कल रात किसने अपनी इज़्ज़त सदक़ा की थी?" किसी ने जवाब न दिया। आपने तीन बार पूछा, फिर उलबा बिन ज़ैद (रज़ि अल्लाहु अन्हु) खड़े हुए। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा: "अल्लाह ने तुम्हारा सदक़ा क़बूल कर लिया है।" (*शुअबुल ईमान*, हदीस संख्या 7729)

एक दूसरी हदीस में ये शब्द हैं:

> "खुशख़बरी है! उस अल्लाह की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, तुम्हें मक़बूल (स्वीकृत) ज़कात देने वालों में लिख दिया गया है।" (*अल-बिदाया वन्निहाया*, खण्ड 5, पृष्ठ 5)

आदमी अपने बारे में गलतफहमी (भ्रम) का शिकार हो जाता है

अनस रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मिक़दाद बिन असवद रज़ि० को एक जगह आमिल (अधिकारी) बना कर भेजा। कुछ दिन बाद जब वे लौटे तो आपने पूछा—“तुम्हें यह काम कैसा लगा?” मिक़दाद रज़ि० ने कहा—“लोग मुझे उठाते और बैठाते रहे (यानि मुझे इज़्ज़त देते रहे), यहाँ तक कि मुझे लगने लगा कि मुझे लोगों पर कोई श्रेष्ठता मिल गई है।” रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया—“हुकूमत और ज़िम्मेदारी तो इसी तरह की चीज़ है। अब चाहे तुम इसे स्वीकार करो या छोड़ दो।” मिक़दाद रज़ि० ने कहा—“उस ख़ुदा की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ भेजा है, अब मैं दो लोगों पर भी कभी ज़िम्मेदार नहीं बनूँगा।” (*हिल्यतुल औलिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 174)

जिस दिल में ख़ुदा का डर न हो वह खुदा के गुणों को नहीं समझ सकता

तबूक की जंग बहुत कठिन हालात में हुई। अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुसलमानों से कहा कि वे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करें। लोगों ने अपनी क्षमता के अनुसार देना शुरू किया। सबसे अधिक दान करने वालों में से एक अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० थे। उन्होंने दो सौ ऊक़िया (सोना) दिया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उनसे पूछा—“क्या अपने बच्चों के लिए कुछ छोड़ा?” उन्होंने कहा—“हाँ।” आपने पूछा—“क्या छोड़ा?” उन्होंने कहा —“जो मैंने दान किया है उससे बेहतर।” आपने पूछा—“क्या?” अब्दुर्रहमान ने कहा—“वह भलाई और नेक काम जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने वादा किया है।”

अबू अक़ील अंसारी रज़ि० एक साअ (लगभग साढ़े तीन सेर) खजूर लाए। उन्होंने कहा—“सारी रात मैंने एक यहूदी के यहाँ पानी खींचा और दो साअ खजूर पाई। एक साअ मैंने अपने घर वालों को दिया और एक साअ यहाँ लाया हूँ। ख़ुदा की क़सम इसके अलावा मेरे पास कुछ नहीं।” वे यह कहते हुए शर्मिंदा हो रहे थे।

दूसरी ओर मदीना के मुनाफ़िक़ (पाखंडी) का हाल यह था कि जब कोई मुसलमान अधिक दान करता तो कहते—“यह दिखावा है।” और जो थोड़ा दान करता उसके बारे में कहते—“यह तो अपने उस एक साअ का खुद ज़्यादा ज़रूरतमंद था।” (*कंज़ुल उम्माल*, खण्ड 2, पृष्ठ 428)

दिखावे से बचने वाला जवाब

हज़रत उरवा कहते हैं कि उमर रज़ि० ऐला (फ़िलिस्तीन) आए और उनके साथ मुहाजिरीन और अंसार का एक दल था। आपने वहाँ के ईसाई पेशवा (असक़फ़) को अपना कुर्ता दिया जो मोटे कपड़े का और पैवंदों वाला था। लंबे सफ़र में सवारी करने से कुरता पीछे से फट गया था। आपने वह कुर्ता असक़फ़ को दिया कि वह इसे धोकर सिल दे।

असक़फ़ कुर्ता लेकर गया और ठीक करने के साथ एक और नया कुर्ता (पतले कपड़े का) सीकर लाया। उमर रज़ि० ने देखा और पूछा—“यह क्या है?” असक़फ़ ने कहा—“यह तो आपका कुर्ता है, मैंने इसे धोकर पैवंद लगाया और यह दूसरा मेरी ओर से आपके लिए तोहफ़ा है।” उमर रज़ि० ने उसे देखा, हाथ से छुआ और फिर अपना पुराना कुर्ता पहन लिया तथा नया कुर्ता असक़फ़ को वापस कर दिया और कहा—“यह पुराना कुर्ता पसीना सोखने के लिए ज़्यादा अच्छा है।” (*तारीख़ अत्तबरी*, खण्ड 4, पृष्ठ 64)

अल्लाह को पुकारने के लिए ऊँची आवाज़ की ज़रूरत नहीं

अबू मूसा अशअरी (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल.) ख़ैबर की लड़ाई के लिए निकले। लोग एक वादी (घाटी) के पास पहुँचे तो उन्होंने ऊँची आवाज़ में तकबीर कही—"अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाह।"

रसूलुल्लाह (सल्ल.) ने फ़रमाया: "ऐ लोगो! अपने ऊपर नर्मी करो। तुम किसी बहरे और अनुपस्थित को नहीं पुकार रहे हो। तुम उस ज़ात को पुकार रहे हो जो सुनने वाला है, पास है और तुम्हारे साथ है।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 2992)

आख़िरत की पूछताछ और हिसाब-किताब के खौफ़ से काँप उठना

अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने एक चिड़िया को पेड़ पर बैठे देखा। उन्होंने कहा: "ऐ चिड़िया! तू कितनी खुश-नसीब है। काश मैं भी तेरे जैसा होता। तू पेड़ पर बैठती है, उसका फल खाती है और उड़ जाती है। तेरे ऊपर न कोई हिसाब है न सज़ा। ख़ुदा की क़सम! मुझे तो यह ज़्यादा पसंद है कि मैं रास्ते के किनारे का एक पेड़ होता। एक ऊँट आता, मुझे तोड़ता, अपने मुँह में डालता, चबाता, निगलता और फिर गोबर के रूप में बाहर निकाल देता—और मैं इंसान न होता।" (*अल-जामिउल कबीर*, हदीस संख्या 1237)

अपने अमल (कर्म) को बे-क़ीमत समझना

अब्दुल्लाह बिन उमर कहते हैं कि उमर (रज़ि०) अबू मूसा अशअरी (रज़ि०) से मिले और उनसे कहा: "ऐ अबू मूसा! क्या तुम्हें यह अच्छा लगेगा कि जो काम तुमने रसूलुल्लाह (सल्ल.) के साथ किए वही तुम्हारे लिए हों और उनके सिवा तुम्हारे सारे काम बराबर-सराबर हो जाएँ—न सवाब मिले न सज़ा?"

अबू मूसा अशअरी (रज़ि०) ने कहा: "नहीं, ऐ अमीरुल मोमिनीन (ख़लीफा)! ख़ुदा की क़सम, मैं बसरा आया तो वहाँ ज़ुल्म फैला हुआ था। फिर मैंने लोगों को क़ुरआन और सुन्नत सिखाई। उनके साथ अल्लाह की राह में लड़ा। और मैं इन कामों के ज़रिए अल्लाह के फ़ज़्ल (अनुग्रह) की उम्मीद रखता हूँ।"

उमर (रज़ि०) ने कहा: "लेकिन मुझे तो यह पसंद है कि मैं अपने अमल से इस तरह निकल जाऊँ कि न मेरा किसी पर कोई हक़ बाक़ी हो और न ही मुझ पर किसी का। बस मेरे लिए वही अमल रह जाएँ जो मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल.) के साथ रह कर किए।" (*अल-जामिउल कबीर*, हदीस संख्या 3112)

मेहनत की कमाई से ख़र्च करना

हज़रत हसन कहते हैं कि एक आदमी ने उस्मान (रज़ि०) से कहा: "ऐ मालदारो! तुम लोग भलाई में आगे बढ़ गए। तुम लोग सदक़ा करते हो, हज करते हो, खर्च करते हो।" उस्मान (रज़ि०) ने कहा: "क्या तुम लोग हमसे जलते हो?" आदमी ने कहा: "हाँ।" उन्होंने फ़रमाया: "ख़ुदा की क़सम, वह एक दिरहम (मुद्रा) जो कोई अपनी मेहनत की कमाई से ख़र्च करता है, उन दस हज़ार दिरहमों से बेहतर है, जो एक बड़े ढेर से ख़र्च किए गए हों।" (*शुअबुल ईमान*, हदीस संख्या 3456)

काश मैं एक तिनका होता

आमिर बिन रबीअह कहते हैं कि उमर (रज़ि०) ने एक तिनका ज़मीन से उठाकर हाथ में लिया और कहा: “काश मैं यह तिनका होता। काश मेरी माँ मुझे जन्म न देती। काश मैं कुछ भी न होता। काश मैं भुला दिया गया होता।” (*कंज़ुल उम्माल*, हदीस संख्या 35914)

इख़्लास

(सच्चे भाव और निष्ठा से अल्लाह के लिए काम करना)

इख़लास यह है कि आदमी हराम (निषिद्ध चीज़ों) से बचे

ज़ैद बिन अरक़म (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: "जो व्यक्ति इख़लास (सच्चे दिल) से कहे कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, वह जन्नत में दाख़िल होगा।" पूछा गया: उसका इख़लास क्या है? आप (सल्ल०) ने फ़रमाया: "यह कि यह कलिमा उसे अल्लाह की हराम (अवैध) की हुई चीज़ों से रोक दे।" (*अल-मोजम अल-औसत*, हदीस संख्या 5074)

ज्ञान को अपनी शान बढ़ाने का ज़रिया न बनाओ

उबैय बिन काब (रज़ि०) ने कहा: "इल्म (ज्ञान) हासिल करो और उस पर अमल भी करो। इसे इसीलिए मत सीखो कि तुम इससे अपनी शोभा बढ़ाओ या सज-धज का ज़रिया बनाओ।

क्योंकि एक समय ऐसा आएगा जब लोग ज्ञान को भी उसी तरह दिखावे और प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए इस्तेमाल करेंगे जैसे वे अच्छे कपड़े पहनकर अपनी सजावट करते हैं।" (*अल-जामिउल कबीर*, हदीस संख्या 1510)

शोहरत की चाह सबसे बड़ा फ़ितना (ख़राबी) है

हज़रत शद्दाद बिन औस (रज़ि०) की मौत का समय आया तो उन्होंने कहा: "मुझे तुम पर सबसे ज़्यादा जिस चीज़ का डर है, वह है रिया (दिखावा) और छुपी हुई कामना।"

सुफ्यान सौरी ने कहा: “छुपी हुई कामना यह है कि आदमी अपनी नेकियों पर तारीफ़ सुनना चाहे।” यज़ीद बिन अबी हबीब कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा गया कि छुपी हुई कामना क्या है। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया: “वह आदमी जो दीन का ज्ञान सीखता है और चाहता है कि लोग उसके पास आकर बैठें।” (*जामि' बयानुल-इल्म व फ़ज़्लिही*, खण्ड 1, पृष्ठ 661)

वहाँ अमल करना जहाँ लोग देखें

अबू हुरैरा कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया: “तुम लोग अल-हुज़्न की गहरी खाई से अल्लाह की पनाह माँगो।” लोगों ने पूछा: “ऐ अल्लाह के रसूल, यह अल-हुज़्न क्या है?” आपने फ़रमाया: “यह जहन्नम (नरक) में एक घाटी है, जिससे खुद जहन्नम रोज़ाना चार सौ बार पनाह माँगती है।” लोगों ने पूछा: “ऐ अल्लाह के रसूल, इसमें कौन जाएगा?” आपने फ़रमाया: “वो आलिम (विद्वान) जो अपने काम लोगों को दिखाने के लिए करते हैं। और अल्लाह के नज़दीक सबसे नापसंद क़ारी (क़ुरआन पढ़कर सुनाने वाले) वो हैं जो हाकिमों और अमीरों के यहाँ जाते हैं।” (*सुनन इब्न माजह*, हदीस संख्या 256)

अपने ऊपर क़ियास (अनुमान लगा कर) कर के बदगुमानी से बचना

इफ़्क़ (झूठा इल्ज़ाम) के क़िस्से में, जब हज़रत आयशा (रज़ि०) पर ग़लत इल्ज़ाम लगाया गया, तो बहुत सी बातें कही जाने लगीं। उन्हीं में से एक वाक़िया यह है कि हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि०) की बीवी ने उनसे कहा: “लोग आयशा के बारे में ऐसी-वैसी बातें कहते हैं।” उन्होंने जवाब दिया: “कहने वाले झूठ बोलते हैं।”

फिर उन्होंने अपनी बीवी से पूछा: "बताओ, क्या तुम ऐसा काम कर सकती हो?" बीवी ने कहा: "हरगिज़ नहीं!" तो अबू अय्यूब ने कहा: "तो फिर आयशा तुमसे कहीं ज़्यादा पाक और साफ़ हैं। उनकी बारे में बुरा गुमान क्यों किया जाए?" (*तफसीर इब्न कसीर*, खण्ड 10, पृष्ठ 192)

ईमान वाले की भलाई पर खुश होना

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) ने कहा:

> "जब मुझे यह पता चलता है कि किसी शहर के ईमान वालों पर बारिश हुई है, तो मुझे खुशी होती है—भले ही वहाँ मेरा न कोई पशु चरता हो और न ही मुझे कोई फ़ायदा मिलता हो।" (*शुअबुल ईमान*, हदीस संख्या 11137)

अल्लाह की खातिर बदला लेने से रुक जाना

ग़ज़्वा-ए-बनी मुस्तलिक से वापसी पर, एक इत्तेफ़ाक़ी ग़लती से हज़रत आयशा (रज़ि०) क़ाफ़िले से पीछे रह गईं। बाद में एक सहाबी ने उन्हें मैदान में देखा, तो अपने ऊँट से उतरकर उन्हें उस पर बैठाया और खुद ऊँट की रस्सी पकड़कर चलते रहे, यहाँ तक कि उन्हें मदीना पहुँचा दिया। इस घटना को मदीना के मुनाफ़िक़ों (पाखंडियों) ने एक अफ़वाह बना दिया और हज़रत आयशा के खिलाफ़ झूठ फैलाने लगे। इस झूठी मुहिम से प्रभावित होने वालों में मिसतह बिन उसासह भी थे, जो अबू बक्र (रज़ि०) के रिश्तेदार थे। अबू बक्र उन्हें हर महीने मदद के तौर पर कुछ रक़म देते थे। जब अबू बक्र (रज़ि०) को मालूम हुआ कि मिसतह भी इस साज़िश में शामिल हैं, तो उन्होंने कहा: "ख़ुदा की क़सम! अब मैं मिसतह को

कुछ भी नहीं दूँगा।" फिर क़ुरआन में यह हुक्म उतरा: "जो लोग माल और ताक़त रखते हैं, उन्हें यह क़सम नहीं खानी चाहिए कि वे अपने रिश्तेदारों, ग़रीबों और अल्लाह की राह में हिजरत करने वालों की मदद नहीं करेंगे। उन्हें चाहिए कि माफ़ करें और दरगुज़र करें। क्या तुम यह पसंद नहीं करते कि अल्लाह तुम्हें माफ़ कर दे? और अल्लाह तो माफ़ करने वाला और मेहरबान है।" (24:22) जब ये आयत उतरी तो अबू बक्र (रज़ि०) ने कहा: "हाँ, ख़ुदा की क़सम! मुझे यह बहुत पसंद है कि अल्लाह मुझे माफ़ कर दे।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 6679) और इसके बाद उन्होंने फिर से मिसतह की मदद शुरू कर दी।

अल्लाह उसे क़ियामत के दिन आग से बचाएगा

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया: जो व्यक्ति अपने भाई को बेईज्ज़त होने से बचाए, क़ियामत के दिन अल्लाह उसे आग से बचाएगा। (*सुनन अल-तिर्मिज़ी*, हदीस संख्या 2044)

नेक और बुरे की पहचान

हज़रत आयशा (रज़ि०) से एक आदमी ने पूछा: मैं अपने आप को नेक कब समझूँ? उन्होंने जवाब दिया: जब तुझे अपने बुरे होने का एहसास होने लगे। उसने फिर पूछा: मैं अपने आप को बुरा कब समझूँ? उन्होंने कहा: जब तू अपने आप को नेक समझने लगे। (*इहया उलूमुद्दीन*, खण्ड 3, पृष्ठ 370)

धर्म के नाम पर दुनिया कमाना दिल को कठोर कर देता है

हसन बसरी ने कहा: आलिम (धार्मिक विद्वान) की सज़ा उसके दिल का मर जाना है। पूछा गया: दिल के मरने का मतलब क्या है? उन्होंने कहा: आख़िरत के काम से सांसारिक लाभ लेना। (*शुअबुल ईमान*, अल-बैहक़ी, हदीस संख्या 1696)

मौत का दिन इन्सान के जागने का दिन है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया: लोग सोए हुए हैं, जब मरेंगे तो जाग उठेंगे। यानी इंसान दुनिया में इतना व्यस्त है कि आख़िरत से ग़ाफ़िल हो गया है। मानो वह दुनिया में जाग रहा है लेकिन आख़िरत में सो रहा है। जब मौत उसकी आँख का पर्दा हटा देगी, तब उसे पता चलेगा कि असल चीज़ वही थी जिसे उसने गैर-ज़रूरी समझकर भुला दिया था। (*हिल्यतुल औलिया व तबक़ातुल अस्फिया*, खण्ड 7, पृष्ठ 52)

दुनिया से मोह इंसान को आख़िरत के विषय में कमज़ोर कर देता है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया: एक समय आएगा जब तुम सैलाब में बहते कूड़े-करकट की तरह बेहैसियत हो जाओगे। सहाबा ने पूछा: ऐ अल्लाह के रसूल, इसका कारण क्या होगा? आपने कहा: तुम्हारे अंदर “वहन” पैदा हो जाएगा। लोगों ने पूछा: वहन क्या है? आपने फरमाया: दुनिया की मोहब्बत और मौत का डर। (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या, 4297)

इंसान अपने आपको जहन्नम के किनारे खड़ा हुआ पाएगा

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) हिजरत करके मदीना पहुँचे, तो आपने अपने पहले ख़ुत्बे में फ़रमाया:

> "ऐ लोगो! अपने लिए आगे भेज लो—यानी आख़िरत के लिए अच्छे कर्म कर लो। यक़ीनन तुम उसे जान लोगे। ख़ुदा की क़सम! तुममें से हर एक पर एक दिन बेहोशी, यानी मौत आएगी, और इंसान इस तरह दुनिया छोड़ जाएगा जैसे कोई चरवाहा अपनी बकरियाँ छोड़कर चला जाए और उनके लिए कोई रखवाला न रहे।" फिर उसका परवरदिगार उससे पूछेगा—और उसके और अल्लाह के बीच न कोई अनुवादक होगा और न कोई रुकावट: क्या मेरे रसूल तुम्हारे पास नहीं आए? क्या उन्होंने तुम्हें मेरा संदेश नहीं पहुँचाया? क्या मैंने तुम्हें माल-दौलत नहीं दिया और तुम पर कृपा नहीं की? तो फिर तूने अपने लिए क्या आगे भेजा? उस समय इंसान दाएँ-बाएँ देखेगा लेकिन वहाँ कुछ न पाएगा। आगे देखेगा तो वहाँ सिर्फ़ जहन्नम ही दिखाई देगी। इसलिए जो भी अपने चेहरे को आग से बचा सके, उसे ज़रूर बचाना चाहिए—चाहे वह सिर्फ़ खजूर का एक टुकड़ा देकर ही क्यों न हो। और अगर वह भी न हो तो मीठी बात बोले, क्योंकि उसका भी इनाम मिलेगा। और नेक काम का इनाम दस गुना से शुरू होकर सात सौ गुना तक मिलता है। (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीथ संख्या 3595)

अपने कामों को बेमहत्व समझो

सईद बिन जुबैर (ताबई) से किसी ने पूछा—सबसे बढ़कर इबादत करने वाला कौन है? उन्होंने जवाब दिया—वह इंसान जो गुनाहों में पड़ा रहा, फिर तौबा कर ली। और इसके बाद जब भी अपने गुनाहों को याद किया तो उनके सामने अपने नेक कामों को बेकार समझा। (*हिल्यतुल औलिया व तबक़ातुल अस्फिया*, खण्ड 4, पृष्ठ 279)

सबसे बड़ा काम वही है जिसके लिए खुद को मजबूर करना पड़े

एक रिवायत के मुताबिक़ रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया—सब कामों में तीन काम सबसे कठिन हैं: अपने ही मामले में दूसरों के साथ इंसाफ़ करना, अपने माल (धन) से भाइयों की मदद करना, हर हाल में अल्लाह को याद करना। (*हिल्यतुल औलिया व तबक़ातुल अस्फिया*, खण्ड 3, पृष्ठ 183)

किसी रूप से धर्म के काम आ जाना जन्नत के लिए काफी नहीं

अबू हुरैरा (रज़ि०) बयान करते हैं कि ख़ैबर की लड़ाई में एक आदमी ने हिस्सा लिया और बड़ी बहादुरी से लड़ा। जब उसकी मौत की खबर फैली तो लोगों ने कहा—यह तो ज़रूर शहीद हुआ होगा। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया—यह दोज़ख़ियों में से है। लोगों को उसकी बहादुरी देखकर शंका हुई। आपने कहा—जाकर पता करो वह कैसे मरा। मालूम हुआ कि वह घायल होकर गिर पड़ा,

और रात को ज़ख़्म की तकलीफ़ से उसने खुदकुशी कर ली, तब सबको यक़ीन हो गया कि वह शहीद नहीं हुआ बल्कि हराम (अवैध) मौत मरा। इसकी ख़बर रसूलुल्लाह (सल्ल०) को दी गई तो आपने कहा की जाओ लोगों में ये एलान कर दो कि "जन्नत में सिर्फ़ वही जाएगा जो सच्चे ईमान वाला हो। और अल्लाह इस दीन की मदद फ़ासिक (बुरे) आदमी से भी करता है। (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 3062)

अपने अमल (कर्म) को बेक़ीमत समझना

हज़रत उमर (रज़ि०) से किसी ने कहा, "आपने दीन की बहुत सेवाएँ की हैं, अल्लाह के यहाँ आपका दर्जा बहुत ऊँचा होगा।"

उन्होंने जवाब दिया, "अगर हिसाब बराबर निकल आए—न मेरे हक़ में, न मेरे ख़िलाफ़—तो वही मेरे लिए बहुत है।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 7218)

छोटा काम करना किसी को छोटा नहीं बनाता

ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ एक रात बातचीत कर रहे थे। देर हो गई और दिया (चराग़) बुझने लगा। किसी ने कहा—मैं नौकर को जगा देता हूँ। आपने मना किया और खुद उठकर तेल लाए और चराग़ में डाल दिया। फिर कहा—तेल डालने से पहले भी मैं उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ था और अब भी वही हूँ। (*सीरत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़*, पृष्ठ 44)

संबंध में बिगाड़ के बावजूद हक़ अदा करने में कमी न करना

ख़लीफ़ा उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने एक शख़्स से कहा—मुझे तुमसे मोहब्बत नहीं। उसने पूछा—क्या आप मेरे हक़ में कोई कमी कर देंगे? हज़रत उमर ने कहा—नहीं। उसने कहा—तो फिर मोहब्बत से तो सिर्फ़ औरतें ही खुश हो सकती हैं। (*अल-फ़ख़री फ़ी आदाबिस सुल्तानिया व अल-दुवलुल इस्लामिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 40)

अल्लाह के दिए पर राज़ी होना और हमेशा सीखने वाला बने रहना

हज़रत अबू क़िलाबा से किसी ने पूछा—सबसे अमीर कौन है? उन्होंने कहा—जो अल्लाह की दी हुई चीज़ पर राज़ी हो जाए। फिर पूछा—सबसे बड़ा आलिम कौन है? उन्होंने कहा—जो दूसरों के ज्ञान से अपने ज्ञान में इज़ाफ़ा करता है। (*अत्तबक़ातुल कुबरा*, अल-बैहक़ी, असर संख्या 3058)

आदमी वही चीज़ खो रहा है जिसे वह पाना चाहता है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया—मैंने जन्नत जैसी कोई चीज़ नहीं देखी जिसका चाहने वाला सोया हुआ हो। और मैंने जहन्नम जैसी कोई चीज़ नहीं देखी जिससे भागने वाला भी सोया हुआ हो। (*शुअबुल ईमान*, अल-बैहक़ी, हदीस संख्या 384)

किसी से बुराई पहुँचे तो उसे अल्लाह के हवाले कर दो

इमाम ज़ैनुल आबिदीन (हज़रत हुसैन बिन अली के बेटे) करबला से अकेले ज़िंदा लौटे। किसी ने उनसे कहा—फ़लाँ आदमी आपकी बुराई करता है। उन्होंने कहा की मुझे उसके पास ले चलो, वह उसके पास गए और सलाम के बाद कहा—अगर तुमने मेरे बारे में जो कहा वह सच है तो मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि वह मुझे माफ़ कर दे। और अगर वह झूठ है तो मैं अल्लाह से दुआ करता हूँ कि वह तुमको माफ़ कर दे। (*अल-फ़ुसूलुल मुहिम्मा फ़ी मारिफ़तिल-अइम्मा*, इब्न सब्बाग़, खण्ड 2, पृष्ठ 859)

अपने गुनाह देखो, न कि दूसरों के

हज़रत रबीअ बिन ख़ैसमा कभी किसी की बुराई नहीं करते थे। उन्होंने कहा—लोगों का अजीब हाल है। वे दूसरों के गुनाहों पर तो अल्लाह से डरते हैं, लेकिन अपने गुनाहों से बेपरवा रहते हैं। (*हिल्यतुल औलिया व तबक़ातुल अस्फिया*, खण्ड 2, पृष्ठ 110)

अल्लाह और रसूल की बात के आगे झुक जाना

अबू जुहैफ़ा (रज़ि०) अच्छे खाने के शौकीन थे। एक दिन उन्होंने बढ़िया खाना खूब खाया और फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) की मजलिस में पहुँचे। वहीं उन्हें डकार आ गई। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया—दुनिया में जो सबसे ज़्यादा पेट भरते हैं, क़ियामत में वही सबसे ज़्यादा भूखे होंगे।

यह सुनकर अबू जुहैफ़ा इतने प्रभावित हुए कि फिर कभी पेट भरकर खाना नहीं खाया। (*सुनन अल-तिर्मिज़ी*, हदीस संख्या 2478)

जन्नती वही है जिसका दिल बैर से खाली हो

रसूलुल्लाह (सल्ल०) एक बार सहाबा के साथ बैठे थे। आपने फ़रमाया—इस रास्ते से एक जन्नती आ रहा है। थोड़ी देर बाद एक मुसलमान उस रास्ते से आया। लोगों ने उससे पूछा—तुम क्या अमल करते हो कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने तुम्हें जन्नती कहा? उसने कहा—मेरे पास कोई ख़ास अमल नहीं। बस मैं अपने दिल में किसी ईमान वाले के खिलाफ़ ज़रा भी बैर या द्वेष नहीं रखता। (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 12697)

दूसरों के सुधार की कोशिश करना और अपने सुधार के लिए तैयार रहना

अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि० जब ख़लीफ़ा चुने गए तो आपने अपने पहले भाषण में कहा: "लोगो, तुम्हारा मामला मेरे सुपुर्द किया गया है, जबकि मैं तुमसे बेहतर नहीं हूँ। मेरी नज़र में कमज़ोर आदमी तुममें सबसे ताक़तवर है, जब तक कि मैं उसका हक़ उसको न दिला दूँ। और मेरी नज़र में ताक़तवर आदमी तुममें सबसे कमज़ोर है, जब तक कि मैं उससे हक़ वसूल न कर लूँ। लोगो, मैं सिर्फ़ तुम्हारी तरह एक इन्सान हूँ। जब तुम देखो कि मैं सही राह पर हूँ तो मेरी पैरवी करो, और अगर मैं टेढ़ा हो जाऊँ तो मुझे सीधा कर दो।" (*सीरत इब्न हिशाम*, खण्ड 2, पृष्ठ 661)

अमल (कर्म) का आख़िरी दर्जा यह है कि आदमी किसी को नुक़सान न पहुँचाए

यह्या बिन मुआज़ राज़ी ने कहा: "ईमान वाले को अगर तुम फ़ायदा न पहुँचा सको, तो कम से कम उसे नुकसान भी मत पहुँचाओ। अगर तुम उसे खुश न कर सको तो ग़मगीन भी मत करो। और अगर तुम उसकी तारीफ़ न कर सको तो बुराई भी मत करो।" (*जामिउल-उलूम वल-हिकम*, खण्ड 2, पृष्ठ 223)

इबादत ज़ाहिरी रस्मों का नाम नहीं

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि एक दिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) लोगों को नसीहत कर रहे थे। आपने देखा कि एक शख़्स धूप में खड़ा है। आपने उसका हाल पूछा, बताया गया कि वे अबू इस्राईल अंसारी हैं। उन्होंने रोज़ा रखा है और यह मन्नत मानी है कि वे न छाँव में जाएँगे, न बैठेंगे, बल्कि खड़े रहेंगे, और किसी से बात भी नहीं करेंगे। आप (सल्ल०) ने फ़रमाया: "उनसे कहो कि वे बातें करें, छाँव में जाएँ और बैठें, और अपने रोज़े को पूरा करें।" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 3300)

ख़ुदा बनने की कोशिश न करो

हमदून क़स्सार नीशापुरी (देहांत 271 हिजरी) से किसी ने पूछा कि "खुदा का बंदा कौन है?" उन्होंने जवाब दिया: "वह जो इबादत करे और यह न चाहे कि लोग उसकी इबादत करें।"

इबादत इस तरह न की जाए कि किसी को तकलीफ़ हो

रसूलुल्लाह (सल्ल०) मस्जिद में एतक़ाफ़ में थे। आपने सुना कि कुछ लोग ऊँची आवाज़ में क़ुरआन पढ़ रहे हैं। आपने परदा उठाया और कहा: "देखो, तुम सब अपने परवरदिगार से बात कर रहे हो। इसलिए कोई आदमी दूसरे को तकलीफ़ न दे, और क़ुरआन पढ़ते समय एक-दूसरे पर अपनी आवाज़ ऊँची न करे।" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 1332)

बरकत वाली शादी वही है जो साधारण (सीधी-सादी) हो

आयशा रज़ि० कहती हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: "सबसे ज़्यादा बरकत वाला निकाह वही है, जिसमें खर्च सबसे कम हो।" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 25167)

दिखावे वाली बातों में ज़्यादा सख़्ती करना ग़लत है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने तीन बार कहा: "बर्बाद हो गए वो लोग जो हर चीज़ में बेवजह सख़्ती करते हैं।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 2670)

आसानी का तरीक़ा अपनाओ, कठिनाई का नहीं

एक सहाबी का वाक़िया है, वे मैदान में थे। नमाज़ का वक़्त आ गया। उन्होंने घोड़े की लगाम पकड़े हुए नमाज़ पढ़ी। एक आदमी ने ऐतराज़ किया कि देखो, ये सहाबी हैं और घोड़े की लगाम पकड़े नमाज़ पढ़ रहे हैं। सहाबी ने जवाब दिया: "मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को देखा है कि वे आसानी को पसंद करते थे। अगर मैं घोड़े को छोड़ देता तो वह भाग जाता। मैं पैदल चलने में सक्षम नहीं था, और मुझे बेवजह परेशानी उठानी पड़ती।" (*शरह अल-सियरुल कबीर*, अल-सर्खसी, पृष्ठ 237)

ग़ैर ज़रूरी तकलीफ़ उठाना नेकी नहीं है

जाबिर (रज़ि०) कहते हैं: रसूलुल्लाह (सल्ल०) एक सफ़र में थे। आपने देखा कि एक शख़्स को लोग घेरे हुए हैं और उस पर छाँव किए हुए हैं। आपने पूछा: "क्या मामला है?" लोगों ने कहा: "वह रोज़ेदार है।" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया: "सफ़र में रोज़ा रखना कोई नेकी नहीं है।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 1115)

इमाम को आम लोगों की आसानी का ख्याल रखना चाहिए

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह कहते हैं कि हज़रत मुआज़ ने मग्रिब की नमाज़ पढ़ाई। उसमें उन्होंने सूरह बक़रह और सूरह निसा पढ़ी। जब अल्लाह के रसूल को यह बात मालूम हुई तो आपने कहा—"ऐ मुआज़, क्या तुम लोगों को परेशानी में

डालने वाले हो? क्या तुम्हारे लिए यह काफी न था कि तुम सूरह त़ारिक़ या सूरह शम्स जैसी सूरतें पढ़ते?"

जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी कहते हैं: एक आदमी अपने दो ऊँटों को लेकर आया, उस समय रात हो चुकी थी। उसने मुआज़ को नमाज़ पढ़ाते पाया। उसने ऊँट छोड़ दिए और मुआज़ के पीछे नमाज़ के लिए खड़ा हो गया। मुआज़ ने सूरह बक़रह या सूरह निसा पढ़ डाली। उस आदमी ने नमाज़ अधूरी छोड़ दी और चला गया। बाद में उसे पता चला कि मुआज़ ने उसके बारे में कुछ कहा है। वह नबी (सल्ल०) के पास पहुँचा और शिकायत की। तब नबी (सल्ल०) ने मुआज़ से कहा—"ऐ मुआज़, क्या तुम लोगों को फितने (परेशानी) में डालने वाले हो?"—आपने यह बात तीन बार दोहराई—"क्यों न तुम सूरह सब्बिहिस्मा रब्बिक, सूरह शम्स व ज़ुहाहा, और सूरह वल-लैल इज़ा यग़शा जैसी सूरतें पढ़ते? क्योंकि तुम्हारे पीछे बूढ़े, कमज़ोर और ज़रूरतमंद लोग भी नमाज़ पढ़ते हैं।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 705)

महानता दिल से होती है, सिर्फ़ दिखने वाले कर्मों से नहीं

अबू बक्र मुज़नी ने कहा: अबू बक्र (रज़ि०) की श्रेष्ठता दूसरे साथियों पर इस कारण नहीं थी कि वे सबसे ज़्यादा रोज़े रखते थे या सबसे ज़्यादा नमाज़ें पढ़ते थे। बल्कि उनकी यह श्रेष्ठता उस चीज़ की वजह से थी जो उनके दिल में थी। इब्न उलय्यह ने अबू बक्र मुज़नी की इस बात की व्याख्या करते हुए कहा: अबू बक्र (रज़ि०) के दिल में जो चीज़ थी, वह अल्लाह से सच्चा प्यार और अल्लाह के बंदों के लिए भलाई की चाह थी। (*जामिअुल उलूम वल हिकम*, खण्ड 1, पृष्ठ 235)

इस्लाम में आसानी है, मुश्किलें नहीं

गुज़ैफ़ बिन हारिस कहते हैं: मैंने हज़रत आयशा (रज़ि०) से पूछा—"क्या आप ने देखा कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) जनाबत (ग़ुस्ल की स्थिति) से रात के शुरू में नहाते थे या रात के आखिर में?" हज़रत आयशा (रज़ि०) ने जवाब दिया: कभी आप रात के शुरू में ग़ुस्ल करते और कभी रात के आखिर में। मैंने कहा: "अल्लाह सबसे बड़ा है! शुक्र है अल्लाह का जिसने धर्म (दीन) में आसानी और सहूलियत रखी।" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 226)

अल्लाह नीयत को देखता है, केवल कर्म को नहीं

हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ि०) बयान करते हैं: मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) को यह कहते हुए सुना—" कर्म का आधार नीयत पर है। और हर इंसान के लिए वही है जिसकी उसने नीयत की।" "जिसकी हिजरत (migration) अल्लाह और उसके रसूल के लिए होगी, तो उसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल के लिए मानी जाएगी। और जिसकी हिजरत दुनिया कमाने के लिए हो, या किसी औरत से शादी करने के लिए हो, तो उसकी हिजरत उसी चीज़ के लिए होगी जिसके लिए उसने हिजरत की।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 1)

तक़वा

(हर समय अल्लाह को याद रखते हुए और उससे डरते हुए जीवन बिताना)

बुराइयों से बचकर निकल जाने का नाम तक़्वा है।

अबू हुरैरा (रज़ि०) से पूछा गया—"तक़्वा क्या है?" उन्होंने पूछने वाले से कहा—"क्या तुम कभी कांटेदार रास्ते से गुज़रे हो?" उसने कहा—हाँ। उन्होंने पूछा—"तब तुमने क्या किया?" पूछने वाले ने कहा—"जब मैंने कांटा देखा तो किनारे हो गया और उससे बचकर निकल गया।" अबू हुरैरा (रज़ि०) ने कहा—यही तक़्वा है। (*अज़्ज़ूह्दुल कबीर*, अल-बैहक़ी, असर संख्या, 963)

अपने आप को अल्लाह के हवाले करना और लोगों के लिए भलाई चाहना

जरीर (रज़ि०) इस्लाम स्वीकार करने के लिए आए। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा—"ऐ जरीर, बैअत (वचन) के लिए हाथ बढ़ाओ।" उन्होंने कहा—"किस बात पर?" आप (सल्ल०) ने कहा—"अपने आप को अल्लाह के हवाले कर दो और हर मुसलमान की भलाई चाहो।" जरीर (रज़ि०) ने आप के हाथ पर बैअत की। वे बहुत समझदार व्यक्ति थे। जब बैअत करने लगे तो कहा—"या रसूलल्लाह, जितना मुझसे हो सकेगा।" इसके बाद यही उसूल सबके लिए तय हो गया—कि इंसान से उसकी सामर्थ्य के मुताबिक़ ही चाहा जाएगा। (*अल-मोजम अल-कबीर*, अल-तबरानी, हदीस संख्या 2365)

दुनिया का लालच इंसान को नष्ट कर देता है

अम्र बिन औफ़ अंसारी (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अबू उबैदा बिन जर्राह (रज़ि०) को जज़िया (कर) लाने के लिए बहरीन भेजा। वे बहरीन से

माल लेकर आए। जब अंसार (मदीना के लोगों) ने सुना कि अबू उबैदा (रज़ि०) आ गए हैं तो वे सुबह की नमाज़ में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ शामिल हुए। नमाज़ के बाद वे आपके सामने आए। आप (सल्ल०) उन्हें देखकर मुस्कुराए और कहा—"मुझे लगता है तुमने सुन लिया है कि अबू उबैदा बहरीन से कुछ लेकर आए हैं।" उन्होंने कहा—हाँ।

आप (सल्ल०) ने कहा—"ख़ुश हो जाओ और उम्मीद रखो। अल्लाह की क़सम, मुझे तुम्हारे फ़क्र (ग़रीबी) का डर नहीं है। मुझे डर है कि तुम्हारे सामने दुनिया उसी तरह फैला दी जाएगी जैसे तुमसे पहले वालों के सामने फैलाई गई थी। फिर तुम भी उसमें लालच करोगे जैसे उन्होंने किया था। और जिस तरह वह लालच उन्हें बरबाद कर गया, उसी तरह वह तुम्हें भी हलाक कर देगा।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 4015)

सबसे ज़्यादा बुद्धिमान, सबसे ज़्यादा कमज़ोर

हसन बिन अली (रज़ि०) जब मुआविया (रज़ि०) के हक़ में खिलाफ़त से हट गए, तो उन्होंने कूफ़ा की मस्जिद में ख़ुत्बा (भाषण) दिया और वजह बताते हुए कहा—"मुत्तक़ी (अल्लाह से डरने वाला) सबसे ज़्यादा बुद्धिमान है, और गुनाहगार सबसे ज़्यादा कमज़ोर।" (*अल-मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा*, असर संख्या 32729)

रिश्तेदारों का पक्ष नहीं लेना

अब्दुल्लाह बिन अरक़म, उमर (रज़ि०) के पास आए और कहा—"ऐ अमीरुल मोमिनीन! बैतुल माल में जलुला (ईरान) से आए हुए कुछ गहने और चाँदी के

बर्तन हैं। आप उन्हें देख लीजिए और हमें उनके बारे में हुक्म दीजिए।” उमर (रज़ि०) ने कहा—“जब मुझे फ़ारिग़ (खाली) देखना तो बता देना।” फिर एक दिन वे आए और कहा—“आज आप फ़ारिग़ हैं।” आप (रज़ि०) ने कहा—“हाँ।” फिर आप बैतुल माल गए और गहनों और बर्तनों को निकलवाया। उन्हें देखकर आपने सूरह आले-इमरान की आयत 14 पढ़ी और दुआ की—“हे अल्लाह! हमसे यह नहीं हो सकता कि तूने जो चीजें हमारे लिए सजाई हैं उन्हें देखकर ख़ुश न हों। अल्लाह! हमें यह ताक़त दे कि हम उसे हक़ (सही जगह) में खर्च करें और इसके बुरे असर से तेरी पनाह चाहते हैं।” उसी समय उमर (रज़ि०) का एक बेटा आया और कहा—“अब्बा जान, मुझे एक अंगूठी दे दीजिए।” उमर (रज़ि०) ने कहा—“अपनी माँ के पास जाओ, वह तुम्हें सत्तू पिलाएगी।” और उन्होंने बेटे को कुछ नहीं दिया। (*तारीख़ुल मदीनह, इब्न शब्बा*, खंड 2, पृष्ठ 699)

दूसरों से पहले अपनी फ़िक्र करो

क़ासिम कहते हैं—एक व्यक्ति ने अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से कहा—“मुझे नसीहत कीजिए।” उन्होंने कहा—“अपने घर में रहो, अपनी ज़बान रोके रखो और अपनी ग़लतियों को याद करके रोया करो।” (*हिल्यतुल-औलिया व तुबक़ातुल-अस्फिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 135)

हैसियत से फायदा न उठाना

मालिक बिन औस बिन हदसान बताते हैं—रोम के बादशाह का एक क़ासिद (दूत) उमर (रज़ि०) के पास आया। उमर (रज़ि०) की पत्नी ने उससे एक दीनार उधार लिया, इत्र खरीदा और शीशे की बोतलों में भरकर उस क़ासिद के ज़रिए रोम की मलिका के पास भेज दिया। जब मलिका ने वह इत्र पाया तो बोतलें खाली

कीं और उन्हें जवाहरात से भरकर क़ासिद से कहा—“इन्हें उमर की पत्नी के पास ले जाओ।” जब वह जवाहरात उमर (रज़ि०) के घर पहुँचे, तो उनकी पत्नी ने सब बिस्तर पर रख दिए। उमर (रज़ि०) घर आए और पूछा—“यह क्या है?” पत्नी ने पूरा हाल सुनाया। उमर (रज़ि०) ने वह जवाहरात लिए, सारे बेच डाले और उन पैसों में से एक दीनार अपनी पत्नी को दिया और बाक़ी सब बैतुल माल में जमा कर दिया। (*अल-मुजालसा व जवाहिरुल इल्म*, खंड 2, पृष्ठ 83)

शिकायत के वक़्त हक़ पर क़ायम रहना

उमर (रज़ि०) ने कहा—“जो व्यक्ति तुम्हारे मामले में अल्लाह की नाफ़रमानी करे, तुम उसके मामले में अल्लाह की आज्ञा का पालन करो। यही उसका सबसे अच्छा बदला है।” (*अल-बिदाया वन्निहाया*, खंड 12, पृष्ठ 83)

इंसान से कुछ न माँगना

सौबान (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फरमाया: “कौन मेरी ओर से यह ज़िम्मेदारी लेता है कि वह लोगों से कुछ नहीं माँगेगा, और मैं उसके लिए जन्नत की ज़िम्मेदारी लेता हूँ?” सौबान (रज़ि०) ने कहा—“मैं”। इसलिए उसके बाद वे किसी से कोई चीज़ नहीं माँगते थे। (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 1643)

हालात ही इंसान की भावनाओं को जन्म देते हैं

अबू उमामा कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया: “मेरे पास अल्लाह का फ़रिश्ता आया और उसने कहा—ऐ मुहम्मद! अल्लाह ने आपको सलाम

कहा है और फ़रमाया है कि यदि आप चाहें तो मक्का की पत्थरीली ज़मीन को सोने से बदल दिया जाए।" आप (सल्ल०) ने आसमान की ओर सिर उठाया और कहा: "नहीं, ऐ मेरे रब! बल्कि मुझे यह पसंद है कि एक दिन मैं पेट भर कर खाऊँ और एक दिन भूखा रहूँ। जब भूखा रहूँ तो तेरे आगे गिड़गिड़ाऊं और तुझसे मांगूँ और जब पेट भरे तो तेरा शुक्र अदा करूँ और तेरी तारीफ़ करूँ।" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 22190)

दिल का सख़्त हो जाना सबसे बड़ी सज़ा है

मालिक बिन दीनार ने कहा—"दिल का सख़्त हो जाना किसी इंसान के लिए सबसे बड़ी सज़ा है।" (*तफ़्सीर अल-क़ुर्तुबी*, खंड 15, पृष्ठ 248)

नाराज़ होने पर भी किसी की बर्बादी न चाहो

हज़रत उमर (रज़ि०) ने फरमाया: "किसी के साथ मोहब्बत में दीवाने मत बनो और दुश्मनी के समय उसे तकलीफ़ पहुँचाने का प्रयास न करो।" रावी कहते हैं कि मैंने पूछा, "कैसे?" आपने कहा: "इस तरह कि जब तुम मोहब्बत करो तो बच्चों की तरह मुहब्बत करो, और जब किसी से नाराज़ हो तो उसकी तबाही और बर्बादी मत चाहो।" (*अल-अदबुल-मुफ़्रद*, खण्ड 1, पृष्ठ 448)

माँगकर मिलने वाली चीज़ और अपने-आप मिलने वाली चीज़ में फ़र्क़ होता है।

अता बिन यसार कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उमर (रज़ि०) को एक तोहफ़ा भेजा। उमर (रज़ि०) ने उसे वापस कर दिया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उनसे पूछा: "तुमने इसे क्यों लौटाया?" उन्होंने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल! क्या आपने हमें नहीं बताया कि हमारी भलाई इसी में है कि हम किसी से कोई चीज़ न

लें।” रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: “यह बात मैंने माँगने के बारे में कही थी। लेकिन जो चीज़ बिना माँगे आ जाए, वह तो वही रोज़ी है जो अल्लाह ने तुम्हें दी है।” उमर (रज़ि०) ने कहा: “उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, अब मैं किसी चीज़ के लिए किसी से सवाल नहीं करूँगा। लेकिन जो चीज़ बिना माँगे मेरे पास आएगी, उसे ज़रूर लूँगा।” (*मुवत्ता इमाम मालिक*, हदीस संख्या 9)

शोहरत (प्रसिद्धि) से दूर रहना

साद बिन अबी वक़्क़ास (रज़ि०) बाद के समय में बकरियाँ चराने लगे थे। वे मदीना से दूर एक मैदान में बकरियाँ चरा रहे थे। एक दिन उनका बेटा उमर बिन साद घोड़े पर सवार होकर उनके पास आया और बोला: “क्या आपको यह अच्छा लगता है कि आप भेड़-बकरियों में लगे रहें, जबकि लोग मदीना में हुकूमत और राजनीति के मामलों पर चर्चा कर रहे हैं?” साद (रज़ि०) ने अपने बेटे के सीने पर हाथ मारा और कहा: “चुप रहो! मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह कहते हुए सुना है कि अल्लाह उस बंदे को पसंद करता है जो परहेज़गार हो, बेनियाज़ (आत्मनिर्भर) हो और गुमनाम रहता हो।” (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 2965)

इल्म नाम है अल्लाह से डरने का

इब्न मसऊद (रज़ि०) ने कहा: “ज्ञान बहुत सारी रिवायतें (कहानियाँ या घटनाएँ) बयान करने का नाम नहीं है। ज्ञान तो यह है कि आदमी अल्लाह से डरने लगे।” (*जामि बयानुल-इल्म व फज़्लिह*, खण्ड 1, पृष्ठ 758)

आख़िरत की चिंता ने उन्हें दीवाना बना दिया था

हसन बसरी ताबिई ने बड़ी संख्या में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सहाबा को देखा था। उन्होंने अपने समय के लोगों से कहा: मैंने बद्र की लड़ाई में शामिल सत्तर सहाबा को देखा है। उनका पहनावा ज़्यादातर ऊन का होता था। अगर तुम उन्हें देखते, तो शायद कहते कि ये सीधेसादे लोग हैं। और अगर वे तुम्हारे अच्छे लोगों को देखते, तो कहते—'इनका धर्म में कोई हिस्सा नहीं।' और अगर वे तुम्हारे बुरे लोगों को देखते, तो कहते—'ये लोग हिसाब के दिन पर ईमान ही नहीं रखते।'

मैंने ऐसे लोगों को देखा है जिनके लिए यह दुनिया पैरों की मिट्टी से भी अधिक बेकार और बिना कीमत की थी।" (*हिल्यतुल-औलिया व तुबक़ातुल अस्फिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 134)

सबसे बुरी चीज़: आत्ममोह

हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया: "तीन चीज़ें बचाने वाली हैं और तीन चीज़ें बर्बाद करने वाली। बचाने वाली: छुपकर और खुले में अल्लाह का डर रखना, ख़ुशी और नाराज़गी दोनों में सच कहना, अमीरी और ग़रीबी दोनों स्थिति में संतुलन रखना।

बर्बाद करने वाली चीजें हैं: इच्छाओं के पीछे चलना, कंजूसी करना, और अपने आप पर घमंड करना। और यह आख़िरी चीज़ सबसे बुरी है।" (*हिल्यतुल-औलिया व तुबक़ातुल अस्फिया*, खण्ड 2, पृष्ठ 343)

कमज़ोरों के मामले में अल्लाह से डरना

जंग-ए-बद्र (624 ई.) में जिन 70 लोगों को पकड़कर मदीना लाया गया, उनमें से एक सुहैल बिन अम्र थे। नबी (सल्ल०) से कहा गया: "सुहैल बहुत अच्छा बोलने वाला है, आपके खिलाफ़ भाषण करता रहता है। उसके दाँत तुड़वा दीजिए।" नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया: "अगर मैं उसके दाँत तुड़वाऊँ तो अल्लाह मेरे दाँत तोड़ देगा, चाहे मैं रसूल ही क्यों न हूँ।" रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने क़ैदियों को अलग-अलग सहाबा के घरों में बाँट दिया और हिदायत दी: "क़ैदियों के साथ अच्छा सुलूक करो।" उनमें से एक क़ैदी अबू अज़ीज़ कहते हैं: "जिन अंसारी के घर में मैं था, वे सुबह-शाम मुझे रोटी खिलाते और ख़ुद सिर्फ़ खजूरें खाकर रह जाते।" इसी तरह यमामा के सरदार सुमामा बिन उसाल जब क़ैद हुए, तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) के हुक्म से उन्हें कैद में अच्छा खाना और दूध दिया जाता रहा। (*अल-मोजम अल-कबीर अल-तबरानी*, हदीस संख्या 977)

सच्चे ईमान वाला हमेशा याद रखता है कि उसकी आखिरी मंज़िल क़ब्र है

हज़रत उरवा बताते हैं कि हज़रत उमर (रज़ि०) एक दिन हज़रत अबू उबैदा (रज़ि०) के पास गए। आपने देखा कि वे ऊँट की काठी के टाट पर लेटे हुए हैं और एक गठरी को तकिया बनाया हुआ है। हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा—"तुमने वह नहीं किया जो तुम्हारे साथियों ने किया है।" हज़रत अबू उबैदा (रज़ि०) ने कहा—"ऐ अमीरुल मोमिनीन! यह मेरी आरामगाह (क़ब्र) तक पहुँचाने के लिए काफ़ी है।" (*हिल्यतुल औलिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 101)

आख़िरत की सज़ा का एहसास इंसान को हर चीज़ से मोह-मुक्त कर देता है

हज़रत अबू दरदा (रज़ि०) इस्लाम से पहले व्यापार करते थे। इस्लाम के बाद उनका व्यापार छूट गया। इब्न असाकिर की एक रिवायत के मुताबिक उन्होंने कहा—"उस हस्ती की क़सम जिसके कब्ज़े में अबू दरदा की जान है, आज मुझे यह भी अच्छा नहीं लगता कि मस्जिद के दरवाज़े पर मेरी एक दुकान हो और मेरी कोई जमात की नमाज़ न छूटे, मैं रोज़ाना चालीस दीनार मुनाफ़ा कमाऊँ और सबका सब अल्लाह के रास्ते में दे दूँ।" उनसे पूछा गया—"ऐ अबू दरदा! किस चीज़ ने आप के लिए इसको नापसंद कर दिया?" उन्होंने जवाब दिया—"हिसाब-किताब की सख़्ती।" (*हिल्यतुल औलिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 209)

आदमी बड़े-बड़े इंतज़ाम करता रहता है, जबकि उसकी ज़िंदगी थोड़े समय में ही खत्म होने वाली है

अबू नुऐम कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने जब अपना घर बनाया तो उन्होंने हज़रत अम्मार बिन यासिर (रज़ि०) से कहा—"आओ देखो मैंने क्या बनाया है।" अम्मार (रज़ि०) गए और उनका मकान देखा। फिर कहा—"तुम दूर की उम्मीद कर रहे हो, जबकि जल्द ही मर जाओगे।" (*शुअबुल ईमान*, हदीस संख्या 10256)

आख़िरत से पहले दुनिया में बदला

अबू फरात कहते हैं कि हज़रत उस्मान (रज़ि०) का एक ग़ुलाम था। एक दिन आपने अपने ग़ुलाम से कहा—"मैंने तुम्हारा कान मरोड़ दिया था, तुम मुझसे उसका बदला ले लो।" उसने आपका कान पकड़ा। आपने कहा—"ज़ोर से पकड़ो!" फिर कहा—"कितना अच्छा है कि बदला दुनिया में हो जाए और आख़िरत के लिए न रहे।" (*तारीख़ वासित*, खण्ड 1, पृष्ठ 184)

मौत के क़रीब पहुँच कर

हज़रत बिलाल बिन रबाह (रज़ि०) के निधन का समय आया तो उनके घर के लोग इकट्ठा हुए और कहा—"हाय ग़म!" तो हज़रत बिलाल ने जवाब दिया—"हाय खुशी! कल मैं अपने प्यारे दोस्तों से मिलूँगा—मुहम्मद और उनके साथियों से।" (*शज़रातुज़ ज़हब*, खण्ड 1, पृष्ठ 171)

दूसरे ख़लीफ़ा हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) का आख़िरी समय आया तो आपकी ज़बान से निकला—"अगर मैं बराबरी पर छूट जाऊँ, न सज़ा मिले और न इनाम, तो यक़ीनन मैं सफल रहा।" (*तारीख़ अत्तबरी*, खण्ड 4, पृष्ठ 228)

सबसे ज़्यादा फ़िक्र जहन्नम के अज़ाब से बचने की

रसूलुल्लाह (सल्ल०) की पत्नी उम्मे हबीबा ने एक दिन दुआ की: "ऐ ख़ुदा! मेरे पति रसूल अल्लाह, मेरे पिता अबू सुफियान और मेरे भाई मुआविया की उम्र लंबी कर।"

यह सुनकर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया: उम्मे हबीबा! सबकी उम्रें अल्लाह ने पहले से ही तय कर दी हैं। तुम्हें तो यह दुआ करनी चाहिए थी कि अल्लाह तुम्हें जहन्नम की सज़ा से बचाए। (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 2663)

ईमान वाले की असली खुशी—उसकी औलाद का नेक होना

मिक़दाद (रज़ि.) बताते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ज़माने में अक्सर ऐसा होता था कि एक ही घर में कोई इस्लाम को मानने वाला होता और कोई उसे न

मानने वाला। एक मुसलमान अपने पिता, बेटे या भाई को बिना ईमान के देखता, और यह उसके लिए बहुत बड़ी तकलीफ़ होती। क्योंकि अल्लाह ने उसके दिल को ईमान के लिए खोल दिया होता, और उसे पूरा यक़ीन रहता कि अगर यह रिश्तेदार इसी हालत में मर गया तो बर्बाद हो जाएगा और आग की सज़ा पाएगा। यही वजह थी कि अपने इतने क़रीबी लोगों को देखकर भी उसके दिल को सुकून नहीं मिलता था। (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 23810)

इन्हीं हालतों के बारे में अल्लाह ने कुरआन में दुआ सिखाई है:

> "ऐ हमारे रब! हमारी पत्नियों और हमारी औलाद को हमारे लिए आंखों की ठंडक बना दे, और हमें परहेज़गारों का सरदार (इमाम) बना।" (25:74)

जन्नत पाने की चाह

बशीर असलमी (रज़ि०) कहते हैं कि मक्का के मुसलमान जब मदीना हिजरत करके आए तो यहाँ का पानी उन्हें अच्छा नहीं लगा। बनी ग़िफ़ार क़बीले के एक आदमी के पास एक कुआँ था जिसे "बिरे रूमह" कहते थे। मुहाजिरीन को उसका पानी अच्छा लगता था। लेकिन उसका मालिक एक मश्क पानी एक "मुद्द" (साअ का चौथा हिस्सा) के बदले बेचता था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उस आदमी से कहा: "यह कुआँ मुझे जन्नत के एक सोते के बदले बेच दो।"

उसने जवाब दिया: "मेरे और मेरे घरवालों के पास इसके अलावा कोई सहारा नहीं है, मैं इसे ऐसे नहीं दे सकता।" यह ख़बर उस्मान (रज़ि०) को मिली। उन्होंने बिरे रूमह को 35 हज़ार दिरहम देकर खरीद लिया। फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आकर कहा: "अल्लाह के रसूल! क्या इस कुएं के बदले मेरे लिए भी जन्नत का सोता मिलेगा?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया: "हाँ।" इसके बाद उस्मान

(रज़ि०) ने यह कुआँ आम मुसलमानों के लिए दान कर दिया। (*अल-मोजम अल-कबीर*, अत्तबरानी, हदीस संख्या 1226)

एक के लिए बरकत, दूसरे के लिए बोझ

सईद बिन मुसय्यब कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हकीम बिन हिज़ाम (रज़ि०) को ग़ज़वा-ए-हुनैन के बाद कुछ इनाम दिया। हज़रत हकीम को वह कम लगा। आपने दोबारा दिया। उन्होंने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! आपके दिए हुए में कौन सा बेहतर था? आपने कहा: पहला। फिर आपने कहा:

> "ऐ हकीम बिन हिज़ाम! यह माल हरा-भरा और मीठा है। जिसने इसे खुले दिल से और अच्छे तरीके से लिया, उसके लिए इसमें बरकत दी जाएगी। और जिसने इसे लालच से और बुरे तरीक़े से लिया, उसके लिए इसमें बरकत नहीं होगी। और वह उस आदमी की तरह होगा जो खाता है मगर कभी पेट नहीं भरता। और देने वाला हाथ लेने वाले हाथ से बेहतर है।" उन्होंने पूछा: "ख़ुद आपसे लेना भी" आपने (सल्ल०) कहा: "हाँ, मुझसे भी।" (*अल-मोजम अल-कबीर*, हदीस संख्या 3078)

दुनिया में दिखावा, आखिरत में शर्मिंदगी

अबू मिजलज़ कहते हैं कि हज़रत मुआविया बाहर निकले और एक जगह पहुँचे जहाँ अब्दुल्लाह बिन आमिर (रज़ि०) और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि०) बैठे थे। हज़रत मुआविया को देखकर अब्दुल्लाह बिन आमिर खड़े हो गए और अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर बैठे रहे। हज़रत मुआविया ने कहा: रसूलुल्लाह (सल्ल०)

ने फ़रमाया है: "जिस इंसान को यह अच्छा लगे कि अल्लाह के बंदे उसके लिए खड़े रहें, तो वह अपना ठिकाना जहन्नम में बना ले।" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 16845)

आखिरत के लिए दुनिया छोड़ना

अब्दुर्रहमान बिन अबी लैला कहते हैं कि हज़रत उमर (रज़ि०) के पास इराक़ से कुछ लोग आए। खाने का समय हुआ तो आपने उनके सामने एक बड़ा प्याला रखा, जिसमें मोटे आटे की रोटी और ज़ैतून का तेल था। आपने कहा: खाओ। उन्होंने धीरे-धीरे बहुत कम खाना शुरू किया। हज़रत उमर ने कहा: "ऐ इराक़ वालो! जो कुछ तुम कर रहे हो, मैं देख रहा हूँ। सुनो! अगर मैं चाहूँ तो मेरे लिए भी अच्छा और मुलायम खाना तैयार हो सकता है, जैसा तुम्हारे लिए होता है। लेकिन हम अपनी दुनिया में इसे छोड़ देते हैं ताकि उसे आखिरत में पा सकें। क्या तुमने नहीं सुना कि अल्लाह ने एक क़ौम से कहा था: 'तुम अपनी अच्छी चीज़ें दुनिया की ज़िंदगी में ही ख़त्म कर चुके।'" (*मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा*, हदीस संख्या 305612)

एक और रिवायत में है कि आपने कहा: "तुम लोग क्या चाहते हो? मीठा और नमकीन, गर्म और ठंडा? जो भी खाओगे, पेट में जाकर कचरा ही बनेगा।" (*हिल्यतुल औलिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 49)

दुनिया के मामलों में बेनफ़्सी (निस्वार्थता)

ज़ुह्द (त्याग) यह नहीं है कि तुम ह़लाल चीज़ों को हराम कर लो, या धन को बरबाद करो। बल्कि असली त्याग यह है कि तुम्हें अपने पास मौजूद वस्तुओं से

ज़्यादा भरोसा उस पर हो जो अल्लाह के पास है। और मुसीबत आने पर तुम्हारा हाल वही हो जैसा मुसीबत से पहले होता है। और सत्य के मामले में तुम्हारे लिए प्रशंसा करने वाला और निंदा करने वाला—दोनों समान हो जाएँ। (*शुअबुल ईमान*, असर संख्या 10774)

ख़ुदा को हमारे दिल की तड़प चाहिए

अब्दुल्लाह बिन जुदआन एक बहुदेववादी लेकिन नेकदिल अरब था। वह पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) के पैग़म्बरी मिलने से पहले मर गया। उसने अज्ञानता के ज़माने में बहुत से ऐसे काम किए जो आम तौर पर अच्छे काम माने जाते थे। पैग़म्बर (सल्ल०) से उसके बारे में पूछा गया कि क्या उसे इन कामों का बदला मिलेगा। आपने फ़रमाया—उसकी ज़बान से कभी यह नहीं निकला: "ऐ अल्लाह, आखिरत में मेरे गुनाह माफ़ कर दे।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 518)

इससे साफ़ होता है कि अल्लाह अपने बंदों से असल में यही चाहता है कि उनके भीतर विनम्रता और असहायता की भावना हो। वे गहराई से महसूस करें कि सब कुछ केवल अल्लाह का है। वही देगा तो मिलेगा, अगर वह न दे तो कुछ भी नहीं मिल सकता। इस सच्चाई को अपने भीतर उतार लेने का नाम ईमान है। जो इस स्तर तक न पहुँचा उसकी पूरी ज़िंदगी बेकार है—यहां तक कि उसके अच्छे दिखने वाले काम भी।

अल्लाह के यहाँ वही काम क़बूल होता है जो केवल उसी की खातिर किया गया हो। सिर्फ़ मानवीय हमदर्दी या सेवा-भाव से किया गया काम अल्लाह को पसंद नहीं, क्योंकि वह इंसान की अपनी बड़ाई की तृप्ति के लिए होता है—जबकि इस दुनिया में बड़ाई का हक़ केवल अल्लाह को है।

किसी मामले में कमी चाहिए और किसी मामले में बढ़ोतरी

पैग़म्बर (सल्ल०) ने फ़रमाया—भाग्यशाली है वह व्यक्ति जिसने अपनी ज़बान को ज़्यादा बोलने से रोका और अपने ज़्यादा धन को खर्च किया और अपने इल्म के मुताबिक अमल किया। (*शुअबुल ईमान*, असर संख्या 3116)

दुनियावी स्वार्थ रुकावट बन जाते हैं

नजरान (यमन) का ईसाई प्रतिनिधि-दल हिजरत के दसवें साल मदीना आया। उसके लंबे किस्से में यह घटना बयान हुई है कि मदीना से लौटते समय उनका बड़ा पादरी अबू हारिसा बिन अलक़मा एक खच्चर पर सवार था। खच्चर ने एक जगह ठोकर खाई और पादरी ज़मीन पर गिर पड़ा। पादरी का भाई कुरज़िन अलक़मा जो साथ था, उसके मुँह से निकला—" तेइसल अबअद" (यानी "मुहम्मद का बुरा हो")। पादरी ने तुरंत कहा—"तइसत उम्मक" (तेरी माँ का बुरा हो)। कुर्ज़ बिन अल्क़मः हैरानी से बोला—आपने ऐसा क्यों कहा?

पादरी ने जवाब दिया—"खुदा की क़सम, हम अच्छी तरह जानते हैं कि यह वही इंतज़ार किए हुए नबी हैं जिनकी खुशखबरी हमारी किताबों में दी गई है।" यह सुनकर कुर्ज़ बिन अलक़मा ने कहा—फिर आप लोग उनकी पैग़म्बरी का इकरार क्यों नहीं करते? पादरी ने कहा—

> "क्योंकि ये राजा हमें बहुत सा धन देते हैं और हमारी इज़्ज़त करते हैं। अगर हम मुहम्मद की नबूवत मान लेंगे तो ये सारी चीज़ें हमसे छीन लेंगे।" (*अल-तफ़सीर अल-कबीर*, खण्ड 7, पृष्ठ 128)

कर्तव्य से ज़्यादा कोशिश करना

रसूलुल्लाह (सल्ल०) अपने साथियों के साथ बद्र के लिए निकले। रोहा पहुँचकर आपने पड़ाव डाला और लोगों के सामने ख़ुत्बा दिया। आपने पूछा—"तुम्हारी क्या राय है?"

पहले हज़रत अबू बक्र ने उत्तर दिया, मगर आपने ध्यान नहीं दिया। फिर दोबारा पूछा—"तुम्हारी क्या राय है?" इस बार हज़रत उमर उठे, मगर आपने ध्यान नहीं दिया। फिर आपने तीसरी बार पूछा—"तुम्हारी क्या राय है?" अब सअद बिन मुआज़ अंसारी उठे। उन्होंने कहा—"ख़ुदा की क़सम, शायद आपका इशारा हमारी तरफ है ऐ अल्लाह के रसूल।" आपने फ़रमाया—"हाँ"।

असल में, अंसार ने आपसे बैअत-ए-निसा की थी, जिसका मतलब था कि वे मदीना में आपकी रक्षा करेंगे। मगर बाहर (बद्र में) दुश्मनों से लड़ना इस बैअत में शामिल नहीं था। इसलिए उनसे राय लेना ज़रूरी था। मिक़दाद बिन अम्र ने कहा—"हम उस तरह नहीं कहेंगे जिस तरह मूसा की क़ौम ने मूसा से कहा था कि तुम और तुम्हारा रब जाकर लड़ो, हम तो यहाँ बैठे रहेंगे।" (क़ुरआन, 5:24)

सअद बिन मुआज़ ने कहा—"हम आपसे वादा कर चुके हैं कि हम आपकी सुनेंगे और आपकी आज्ञा का पालन करेंगे। ऐ अल्लाह के रसूल, चलिए—आप जो भी इरादा करें हम आपके साथ हैं। उस ख़ुदा की क़सम जिसने आपको हक़ देकर भेजा है, अगर आप हमें हुक्म दें कि हम अपनी सवारियों को समुद्र में उतार दें तो हम उन्हें उतार देंगे। अगर आप कहें कि हम अपनी ऊँटनियों को बरक गिमाद (यमन) तक ले जाते हुए उनका कलेजा छलनी कर दें तो हम ऐसा भी करेंगे। हममें से एक आदमी भी पीछे न रहेगा।" रावी कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) अंसार की इस तक़रीर से बहुत प्रसन्न हुए और फ़रमाया—"चलो, अल्लाह ने तुम्हारे लिए जीत और मदद का फ़ैसला कर दिया है।" (*अल-मुस्तदरक*, अल-हाकिम, हदीस संख्या 5486)

ज़िन्दगी उसी की है जो मौत से निडर हो जाए

ख़लीफ़ा-ए-अव्वल हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ (रज़ि०) ने एक बार इस्लामी सेनापति हज़रत ख़ालिद बिन वलीद को नसीहत करते हुए कहा—"ऐ ख़ालिद, मौत के चाहने वाले बन जाओ, तुम्हें ज़िन्दगी मिल जाएगी।" (*अल-मुजालसा व जवाहिरुल इल्म*, खण्ड 3, पृष्ठ 61)

दीन वही है जो आदमी के भीतर गहरी तब्दीली पैदा करे

अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुझसे फ़रमाया—"ऐ अबू हुरैरा, अल्लाह से डरने वाले बनो—तुम सबसे बड़े इबादत करने वाले बन जाओगे। संतुष्ट रहो—तुम सबसे बड़े शुक्र करने वाले बन जाओगे। और लोगों के लिए वही पसंद करो जो तुम अपने लिए पसंद करते हो—तुम सच्चे ईमान वाले बन जाओगे। अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा व्यवहार करो—तुम सच्चे मुसलमान बन जाओगे। और हँसना कम करो, क्योंकि ज़्यादा हँसना दिल को मुर्दा कर देता है।" (*सुनन इब्न माजह*, हदीस संख्या 4217)

तौबा नाम है अपने किए पर पछताने का

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया—"तौबा शर्मिंदगी है" यानी तौबा ये है कि आदमी को अपने किए पर शर्म और पछतावा हो।" (*मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा*, हदीस संख्या 27751)

विनम्रता

बनावटी इज़्ज़त और दिखावटी सम्मान इस्लाम का तरीक़ा नहीं

अनस बिन मालिक (रज़ि०) कहते हैं—हमारे लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से बढ़कर कोई प्रिय न था। लेकिन जब वे हमारे पास आते तो हम उनके लिए खड़े नहीं होते थे, क्योंकि हम जानते थे कि उन्हें यह पसंद नहीं था। (*सुनन अल-तिर्मिज़ी*, हदीस सं० 2754)

आवश्यकता से अधिक चीज़ों की आदत मत डालो

अब्दुल्लाह बिन शरीक अपने दादा से बयान करते हैं—अली बिन अबी तालिब (रज़ि०) के लिए फ़ालूदा लाया गया और उनके सामने रखा गया। उन्होंने कहा—तेरी खुशबू अच्छी है, तेरा रंग भी अच्छा है और तेरा स्वाद भी अच्छा है। लेकिन मैं यह पसंद नहीं करता कि मैं अपने आप को उस चीज़ का आदी बना लूं जिसका आदी मैं नहीं हूँ। (*हिल्यतुल औलिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 81)

घमंड की मानसिकता में पड़ने वाला अल्लाह की रहमत (दया) से दूर हो जाता है

अबू नुऐम ने आयशा (रज़ि०) से बयान किया—वे कहती हैं कि एक बार मैंने नया कुर्ता पहना। मैं उसे देखती थी और खुश होती थी। अबू बक्र (रज़ि०) ने कहा—"तुम क्या देख रही हो? अल्लाह तुम्हारी ओर देखने वाला नहीं।" मैंने पूछा—क्यों? उन्होंने कहा—"क्या तुम्हें मालूम नहीं कि जब बंदे के दिल में दुनिया की सज्जा से घमंड पैदा होता है तो उसका रब उस पर नाराज़ हो जाता

है, जब तक कि वह बंदा उस ज़ीनत (सज्जा) को छोड़ न दे।" आयशा (रज़ि०) कहती हैं—मैंने वह कुर्ता उतारा और उसे सदक़ा कर दिया। अबू बक्र (रज़ि०) ने कहा—"शायद तुम्हारा यह सदक़ा तुम्हारे लिए प्रायश्चित बन जाए।" (*हिल्यतुल औलिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 37)

ग़ुस्से पर क़ाबू पाना सबसे बड़ी बहादुरी है

अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) कहते हैं—अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया—"तुम लोग किसे पहलवान समझते हो?" लोगों ने कहा—"वह जो दूसरों को कुश्ती में पछाड़ दे।" उन्होंने फ़रमाया—"नहीं, बल्कि पहलवान वह है जो ग़ुस्से के समय अपने आप को क़ाबू में रखे।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संखया 107)

हर हाल में अल्लाह का बंदा बनकर रहना

अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) कहते हैं कि ग़ज़वा-ए-बद्र के सफ़र में तीन-तीन आदमी के बीच एक ऊँट था। सब बारी-बारी सवार होते थे। यही हाल रसूलुल्लाह (सल्ल०) का था। आपके साथ अबू लुबाबा (रज़ि०) और अली बिन अबी तालिब (रज़ि०) थे। दोनों ने कहा—"आप सवार रहिए, हम आपकी जगह पैदल चलेंगे।" आपने फ़रमाया—"तुम दोनों मुझसे ज़्यादा ताक़तवर नहीं हो, और न ही मुझे तुमसे कम सवाब की ज़रूरत है।" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 3965)

तक़ल्लुफ़ (लिहाज़) से ज़्यादा ज़रूरत का ख्याल रखना

हिजरत के बाद जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) मदीना आए तो अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि०) के घर ठहरे। घर के ऊपर एक कमरा था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) नीचे रुके और अबू अय्यूब अपने परिवार के साथ ऊपर रहे। उन्हें यह अच्छा नहीं लगा कि रसूल (सल्ल०) नीचे हों और वे ऊपर। उन्होंने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल! आप ऊपर ठहरिए, हम नीचे रहेंगे।" आपने कहा: "इसकी फ़िक्र मत करो। मेरे लिए नीचे रहना बेहतर है, क्योंकि लोगों को मिलने में आसानी होगी।" (*सीरत इब्न हिशाम*, खण्ड 2, पृष्ठ 104)

जानवरों पर रहम

अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) कहते हैं: हम सफ़र में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ थे। एक जगह डेरा डाला। वहाँ एक चिड़िया थी, उसके दो बच्चे थे। हमने बच्चों को पकड़ लिया। चिड़िया चीखने और पंख फड़फड़ाने लगी। रसूलुल्लाह (सल्ल०) को पता चला तो आपने कहा: "किसने इस चिड़िया को तकलीफ़ दी है? इसके बच्चे इसे लौटा दो।" इसी तरह आपने देखा कि किसी ने चींटियों का घर जला दिया है। आपने पूछा: "किसने जलाया?" हमने कहा: "हमने।" आपने फ़रमाया: "आग से सज़ा देना सिर्फ़ आग को बनाने वाले रब का काम है।" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 2675)

किसी खाने को छोटा या तुच्छ न समझो

जाबिर (रज़ि०) के घर मेहमान आए। उन्होंने रोटी और सिरका लाकर कहा: "इसे खाओ, मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को कहते सुना है—सिरका बहुत अच्छा

सालन है।" और आपने कहा: "उस क़ौम के लिए बर्बादी है जो सामने रखी चीज़ को छोटा या तुच्छ समझे।" (*शुअबुल ईमान*, हदीस संख्या 9162)

घमंड अल्लाह को पसंद नहीं

आयशा (रज़ि०) कहती हैं: मेरे पास एक ग़रीब औरत आई। उसके पास थोड़ी सी चीज़ थी जो वह मुझे देना चाहती थी। मुझे रहम आया और मैंने लेना पसंद न किया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा: "तुम उसका तोहफ़ा ले लेतीं और बदले में कुछ दे देतीं। लगता है तुमने उसे छोटा समझा। ऐ आयशा! विनम्रता अपनाओ। अल्लाह विनम्र लोगों को पसंद करता है और घमंडी लोगों से नफ़रत करता है।" (*हिल्यतुल औलिया व तबक़ातुल असफ़िया*, खण्ड 4, पृष्ठ 204)

दिखावे के लिए दावत करना पसंद नहीं

उमर और उस्मान (रज़ि०) को एक दावत में बुलाया गया। दोनों जाने लगे तो उमर (रज़ि०) ने कहा: "मैं चल तो रहा हूँ लेकिन अच्छा होता कि न जाता।" उस्मान (रज़ि०) ने पूछा: "क्यों?" उमर (रज़ि०) ने कहा: "डर है कि यह दावत दिखावे और फ़ख्र के लिए न की गई हो।" (*अहादीस अफ्फ़ान बिन मुस्लिम*, हदीस संख्या 192)

विनम्रता से बुलंदी मिलती है

अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं: रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा: "सदक़ा देने से माल कम नहीं होता। माफ़ करने से इज़्ज़त बढ़ती है। और जो अल्लाह के लिए

विनम्र रहता है, उसका दर्जा अल्लाह बुलंद करता है।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 2588)

रसूलुल्लाह ने अपना हाथ चूमने की इजाज़त न दी

अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं: रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक दुकानदार से कपड़ा ख़रीदा। जब उठे तो दुकानदार ने आपका हाथ चूमना चाहा। आपने हाथ खींच लिया और कहा: "यह काम दुसरे (ग़ैर-अरब) लोग अपने बादशाहों के साथ करते हैं। मैं बादशाह नहीं, मैं तुम में से ही एक आदमी हूँ।" (*अल-मोजम अल-औसत*, अल-तबरानी, हादिस संख्या 6594)

सच्चाई को न मानना घमंड है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सामने घमंड का ज़िक्र हुआ। आपने कहा: "अल्लाह घमंडी और शेख़ीबाज़ को पसंद नहीं करता।" एक आदमी ने कहा: "मुझे साफ़ कपड़े, अच्छे जूते और बढ़िया चीज़ें पसंद हैं।" आपने कहा: "यह घमंड नहीं। असली घमंड है –सच्चाई को न मानना और लोगों को छोटा समझना।" (*अल-मोजम अल-औसत*, अल-तबरानी, हादिस संख्या 1317)

लोगों के बीच बिना फ़र्क किए बैठना

अब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़ि०) कहते हैं: रसूलुल्लाह (सल्ल०) मेरे घर आए। मैंने चमड़े का तकिया रखा। आप ज़मीन पर बैठ गए और तकिया मेरे और आपके बीच रखा रहा। (*सहीह इब्न हिब्बान*, हदीस संख्या 3640)

साधारण आदमी की बात भी ध्यान से सुनना

अबू रिफ़ाआ (रज़ि०) कहते हैं: मैं अपने वतन से रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया। उस वक़्त आप ख़ुत्बा दे रहे थे। मैंने कहा: "ऐ रसूलुल्लाह, मैं मुसाफ़िर हूँ और मुझे दीन नहीं पता।" आप मेरी तरफ़ आए, ख़ुत्बा छोड़ दिया, बैठकर मुझे दीन समझाया, फिर वापस जाकर ख़ुत्बा पूरा किया। (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 876)

बड़ों के आगे चलना गुस्ताख़ी नहीं

अनस (रज़ि०) कहते हैं: रसूलुल्लाह (सल्ल०) की ऊँटनी "अज़्बा" थी। कोई ऊँट उससे आगे न जाता था। एक देहाती अपनी छोटी ऊँटनी पर आया और उसकी ऊँटनी आगे निकल गई। मुसलमानों को बुरा लगा। रसूलुल्लाह (सल्ल०) को इसका पता चला तो आपने कहा: "अल्लाह ने अपने ज़िम्मे ले लिया है कि दुनिया में जो भी चीज़ बहुत ऊँची हो जाएगी, उसे वह नीचा करेगा।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 6501)

जो खुद को छोटा समझे वही अल्लाह के निकट बड़ा है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा: "जो अल्लाह के लिए तवाज़ो (विनम्रता) करता है, अल्लाह उसे बुलंद करता है। वह अपने दिल में खुद को छोटा समझता है, मगर लोगों के बीच बड़ा होता है।" (*सहीह इब्न हिब्बान*, हदीस संख्या 5678)

मध्यम दर्जे का कपड़ा पहनो

हज़रत वक़दान ताबिई कहते हैं कि मैंने हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर से सुना। किसी ने उनसे पूछा—"मैं किस तरह का कपड़ा पहनूँ?" उन्होंने कहा—"ऐसा कपड़ा पहनो कि नादान लोग तुम्हारी बेइज़्ज़ती न करें और समझदार लोग तुम्हें बुरा न कहें।" उस आदमी ने पूछा—"वह कौन-सा कपड़ा होगा?" उन्होंने कहा—"जिसकी क़ीमत पाँच से दस दिरहम के बीच हो।" (*हिल्यातुल औलिया व तबक़ातुल-अस्फिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 302)

खाना हमेशा अपने पास वाली प्लेट से खाना

हज़रत अम्र बिन अबी सलमा बताते हैं कि एक दिन मैं अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के साथ खाना खा रहा था। मैं थाली में इधर-उधर हाथ डालकर गोश्त ले रहा था। यह देखकर अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा—"जो तुम्हारे पास है, उसी से खाओ।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 5377)

अल्लाह अपने नबी से किस चीज़ पर राज़ी हुआ

हज़रत अता ख़ुरासानी ताबेई कहते हैं—मैंने रसूल (सल्ल०) की बीवियों के घर देखे हैं। वे खजूर की टहनियों से बने हुए थे। दरवाज़ों पर टाट के परदे लगे थे जो काले बालों से बने होते थे। फिर ख़लीफ़ा वलीद बिन अब्दुल मलिक ने मदीना के हाकिम को हुक्म भेजा कि मस्जिद-ए-नबवी का नया निर्माण किया जाए, और रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बीवियों के कमरे तोड़कर मस्जिद में शामिल कर दिए जाएँ। यह सुनकर मदीना के बहुत से लोग रो पड़े। हज़रत अबू उमामा अंसारी ने कहा—"काश ये कमरे ऐसे ही रहने दिए जाते और न गिराए जाते, ताकि लोग ऊँची-ऊँची इमारतें बनाने से बचते। और वे देख लेते कि अल्लाह अपने नबी से किस चीज़ पर राज़ी था, जबकि दुनियावी खज़ानों की चाबियाँ उन्हीं के पास थीं।" (*अल-तबक़ात अल-कुबरा*, खण्ड 1, पृष्ठ 388)

बेटी के निकाह के लिए गरीब दीनदार को पसंद करना

हज़रत अबू दर्दा अंसारी की एक गुणवान बेटी थी, जिसका नाम दर्दा था। यज़ीद बिन मुआविया ने उससे निकाह का संदेश भेजा, लेकिन अबू दर्दा ने इंकार कर दिया। उसके बाद एक साधारण मुसलमान ने निकाह का प्रस्ताव रखा। अबू दर्दा ने उसे स्वीकार कर लिया और अपनी बेटी का निकाह उससे कर दिया।

लोगों में बातें होने लगीं कि अमीर मुआविया के बेटे का रिश्ता अबू दर्दा ने ठुकरा दिया, लेकिन एक कमज़ोर मुसलमान का रिश्ता मंज़ूर कर लिया और बेटी उससे ब्याह दी। जब अबू दर्दा ने यह सुना तो कहा:

"मैंने इस रिश्ते में दर्दा का भला देखा। सोचो ज़रा, जब उसके सिरहाने नौकरों की लाइन लगी होती और वह ख़ुद को ऐसे घर में पाती जो चमक-दमक से भरा होता, तो उस वक़्त उसका दीन कहाँ रह पाता?" (*सीरत खम्सीन सहाबी*, खण्ड 1, पृष्ठ 19)

सुख का राज़ है संतोष

हज़रत सअद ने अपने बेटे से कहा: "बेटा, जब भी धन चाहो तो संतोष के साथ चाहो। क्योंकि जिसके अंदर संतोष न हो, उसके लिए धन कभी काफ़ी नहीं होता।" (*तारिख़ दमिश्क़*, इब्न असाकिर, खण्ड 8, पृष्ठ 363)

हर आदमी या तो जन्नत की तरफ़ जा रहा है या जहन्नम की तरफ़

मुस्लिम बिन बशीर बताते हैं कि हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) अपनी बीमारी के दिनों में रो पड़े। किसी ने उनसे पूछा:

"ऐ अबू हुरैरा, आप क्यों रो रहे हैं?" उन्होंने कहा,

"मैं तुम्हारी इस दुनिया के लिए नहीं रो रहा। मैं इसलिए रो रहा हूँ कि मेरी अगली दुनिया का सफ़र बहुत लंबा है और सफ़र का सामान बहुत कम है। मैं एक ऐसे मोड़ पर खड़ा हूँ जहाँ से रास्ता या तो जन्नत की ओर जाता है या जहन्नम की ओर। मुझे नहीं पता कि मुझे किस रास्ते पर ले जाया जाएगा।" (*तारिख दमिश्क़, इब्न असाकिर*, खण्ड 67, पृष्ठ 383)

लोगों के बीच विनम्र बन कर रहो

हज़रत अयाज़ बिन हिमार (रज़ि०) बताते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया:

"अल्लाह ने मुझे यह हुक्म दिया है कि तुम सब विनम्र बनो। न कोई किसी पर घमंड करे और न ही कोई किसी पर ज़ुल्म करे।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 2865)

तवक्कुल
(अल्लाह पर भरोसा)

अल्लाह की नेमतें (अनुग्रह) बेहिसाब हैं

इब्न असाकिर ने अबू दर्दा (रज़ि०) का एक कथन बयान किया है। उन्होंने कहा: "जिसने यह न समझा कि खाने-पीने के अलावा भी उस पर अल्लाह की नेमतें हैं, उसकी समझ बहुत कम है और उसके लिए आज़ाब (सज़ा) तैयार है।" (*अज़-ज़ुह्द, अबू दाऊद*, हदीस संख्या 210)

अल्लाह से रिश्ता रूह (आत्मा) की खुराक है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया: "मैं ऐसी हालत में रात गुज़ारता हूँ कि एक खिलाने वाला मुझे खिलाता है और एक पिलाने वाला मुझे पिलाता है।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 1963)

हर हाल में अल्लाह से डरते रहो

ज़ह्हाक से रिवायत कि ख़लीफ़ा उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) ने अबू मूसा अशअरी को एक ख़त में नसीहत करते हुए लिखा:

> "अल्लाह से डरते रहो। अल्लाह की किताब को सीखो, क्योंकि वही इल्म का असली स्रोत है और दिलों के लिए बहार की तरह ताज़गी देने वाली है।" (*अल-मुसन्नफ़*, इब्न अबी शैबा, हदीस संख्या 36443)

अल्लाह की रहमतों की कोई हद (सीमा) नहीं

हज़रत अली (रज़ि०) कहते हैं: "अल्लाह ऐसा नहीं करता कि किसी बंदे पर शुक्र का दरवाज़ा खोले और बढ़ोतरी का दरवाज़ा बंद कर दे, न ऐसा करता है कि दुआ का दरवाज़ा खोले और क़ुबूलियत (स्वीकृति) का दरवाज़ा बंद कर दे और न ऐसा करता है कि तौबा का दरवाज़ा खोले और मग़फ़िरत (क्षमा) का दरवाज़ा बंद कर दे।" (*नहजुल बलाग़ह*, खंड 4, पृष्ठ 102)

जो कुछ होता है, अल्लाह की तरफ़ से होता है

हज़रत अली (रज़ि०) से कहा गया: "क्या हम आपकी पहरेदारी न करें?" उन्होंने कहा:

> "इंसान की क़िस्मत ही उसकी पहरेदारी करती है।" (*अल-तबक़ात अल-कुबरा*, खण्ड 3, पृष्ठ 32)

एक और रिवायत में उन्होंने कहा:

> "इंसान ईमान का स्वाद तब तक नहीं पाता जब तक यह न जान ले कि जो कुछ उस पर गुज़रा वह उससे टलने वाला न था, और जो कुछ उस पर नहीं गुज़रा वह उस पर आने वाला न था।" (*कंज़ुल उम्माल*, हदीस संख्या 1564)

एक मामूली चीज़ भी बहुत बड़ी नेमत है

हज़रत आयशा (रज़ि०) का कथन है: "जब कोई बंदा सादा पानी पिये और वह बिना तकलीफ़ के अंदर जाए और बिना तकलीफ़ के बाहर निकले तो उस पर

अल्लाह का शुक्र अदा करना अनिवार्य है।" (*किताबुश-शुक्र*, इब्न अबिद्दुनिया, हदीस संख्या 192)

इस्लाम इसलिए है कि इंसान उसके साथ जिये

हुमैद बिन अब्दुर्रहमान बिन औफ़ कहते हैं कि एक आदमी रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया और कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल, मुझे कोई ऐसी बात बताएं जिसके साथ मैं ज़िन्दगी गुज़ारूँ, और ज़्यादा न कहिए कि मैं भूल जाऊँ।" रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फरमाया: "गुस्सा मत करो।" (*मुवत्ता इमाम मालिक*, हदीस संख्या 11)

अल्लाह से इस हाल में मिलो कि किसी का बोझ तुम पर न हो

एक व्यक्ति ने अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) को लिखा कि वे उसे बताएँ कि असली ज्ञान क्या है। उन्होंने जवाब दिया:

> "ज्ञान की बातें इतनी ज़्यादा हैं कि सब कुछ लिखा नहीं जा सकता। बस इतना समझ लो कि अगर तुमसे हो सके तो अल्लाह से इस हालत में मिलो कि तुम्हारी ज़बान लोगों की इज़्ज़त को नुकसान न पहुँचाए, तुम किसी के साथ ज़ुल्म या हिंसा में शामिल न हो, तुम किसी का हक़ न खाओ, और तुम भलाई व एकता के साथ लोगों से जुड़े रहो।" (*सियरू आलामिन्नुबला*, खंड 3, पृष्ठ 222)

आदमी असामान्य हालात में पहचाना जाता है

धैर्य और संयम की असली पहचान तब होती है जब इंसान गुस्से में हो। (*जामे' बयानिल-इल्म व फ़ज़्लिही*, खंड 2, पृष्ठ 302)

अल्लाह की व्यवस्था पर संतुष्ट रहना

हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि नबी (सल्ल०) ने कहा कि अल्लाह का कहना है कि मेरे कुछ बंदों का ईमान सिर्फ़ ग़रीबी से सही रहता है, और अगर मैं उन्हें अमीर बना दूं तो उनका ईमान बिगड़ जाएगा। कुछ बंदों का ईमान केवल दौलत से सही रहता है, और अगर मैं उन्हें गरीबी में डाल दूँ, तो उनका ईमान भी डगमगा जाएगा। कुछ बंदों का ईमान सिर्फ़ सेहत से सही रहता है, और अगर मैं उन्हें बीमार कर दूं तो वे उसे बिगाड़ देंगे। और मेरे बन्दों में कुछ ऐसे ईमान वाले हैं जिनका ईमान सिर्फ़ बीमारी में सही रहता है, अगर मैं उन्हें सेहत दे दूँ तो उनका ईमान बिगड़ जाए। मेरे बंदों के दिलों में जो कुछ भी है, मैं उसे जानता हूं और अपने ज्ञान के मुताबिक उनके मामलों को सुलझाता हूं। (*हिलयतुल-औलिया व तबक़ातुल अस्फिया*, खंड 8, पृष्ठ 318)

बात-चीत के आदाब

उस समाज में कोई भी अच्छाई नहीं है, जहां आलोचना और नसीहत देने का माहौल न हो।

तबरानी ने अब्दुल अज़ीज बिन अबू बकरा रज़ि० का एक वाक़या सुनाया है। कुछ लोगों को उनसे शिकायत हो गई, उन्होंने उनको धक्का देकर गिरा दिया। जब आपके बेटे दौड़े तो आपने कहा, "रुको। ख़ुदा की क़सम, अगर किसी की जान ली जाने वाली हो, तो मुझे ये ज़्यादा पसंद होगा कि मेरी (अबू बक्रा) जान चली जाए।" बेटों ने पूछा, "क्यों?" आपने कहा, "मैं डरता हूं कि ऐसा समय आए, जब मैं अच्छाई की बात न बता सकूं और बुराई से रोक न सकूं, क्योंकि उस वक्त कोई भलाई नहीं होगी।" (*सियरु आलामिन-नुबला*, खण्ड 3, पृष्ठ 7)

उनका विवाद सत्य के लिए होता था

अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ओहदों और वेतन के मामले में पूर्ण समानता रखते थे। जब उनसे कहा गया कि मुहाजिरों और अंसार को दूसरों की तुलना में अधिक दिया जाए, तो उन्होंने इंकार करते हुए कहा: "उनकी असल अहमियत अल्लाह के यहाँ है। यह तो दुनिया का एक साधारण मामला है—इसमें बराबरी ही उचित है। "उनकी श्रेष्ठता तो अल्लाह के पास है, और इस रोज़ी में बराबरी ही बेहतर है।" (*कंज़ुल उम्माल*, हदीस संख्या 11540)

उमर फ़ारूक़ रज़ि० की राय इससे अलग थी। जब वे ख़लीफ़ा बने, तो ओहदों के हिसाब से वेतन का बँटवारा किया। मुहाजिरों और अंसार के लिए पाँच-पाँच हज़ार दिरहम तय किए, और बाक़ी मुसलमानों के लिए चार-चार हज़ार दिरहम। इस हिसाब से उसामा बिन ज़ैद को चार हज़ार दिरहम मिले। हालांकि, अपने बेटे अब्दुल्लाह को सिर्फ़ तीन हजार दिरहम दिए। उन्होंने कहा: "आपने उसामा बिन ज़ैद को चार हज़ार दिरहम दिए और मुझे सिर्फ़ तीन हजार, उनको या उनके पिता को कौन सी ऐसी फ़ज़ीलत है जो मुझमें नहीं?" उमर रज़ि० ने जवाब दिया:

"उनके पिता (ज़ैद) को अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तुमसे ज़्यादा पसंद करते थे, और उसामा को भी तुमसे ज़्यादा पसंद करते थे। इसलिए मैंने अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलेहि वसल्लम) की मुहब्बत को अपनी मुहब्बत पर प्राथमिकता दी।" एक रिवायत के मुताबिक़, उमर रज़ि० ने अपनी ज़िंदगी के आख़िर में कहा कि अबू बक्र रज़ि० की राय ज़्यादा सही थी। "उनकी राय मेरी राय से बेहतर थी।" (*मुस्नद अल-बज़्ज़ार*, हदीस संख्या 286)

क़ुरआन के सामने आते ही रुक जाना

अब्दुल्लाह बिन अब्बास कहते हैं, उयय्ना बिन हिस्न मदीना आए और अपने भतीजे हुर्र बिन क़ैस के यहाँ ठहरे। हुर्र बिन क़ैस उमर रज़ि० के क़रीब थे। उमर रज़ि० की बैठक में क़ुरआन के जानकार लोग होते थे, चाहे वो बूढ़े हों या जवान। उयय्ना ने हुर्र बिन क़ैस से कहा: "ऐ मेरे भतीजे! तुमको अमीर-उल-मु'मिनीन के पास रुतबा मिला है, मेरे लिए उनके पास जाने की इजाज़त दिलवाओ।" उन्होंने इजाज़त माँगी और उमर रज़ि० ने इजाज़त दे दी। उयय्ना आए और कहा: "ओ ख़त्ताब के बेटे! तुम हमें न तो अच्छा पैसा देते हो और न हमारे बीच इंसाफ़ से फैसला करते हो।" उमर रज़ि० यह सुनकर ग़ुस्से में आ गए। वे लगभग उन पर टूट ही पड़े थे कि हुर्र बिन क़ैस ने कहा: "ऐ अमीर-उल-मुमिनीन! अल्लाह ने अपने रसूल से कहा है, 'माफ़ी का रास्ता अपनाओ, अच्छाई का आदेश दो और जाहिलों (अज्ञान लोगों) को नज़र अंदाज़ करो।' और यह शख़्स जाहिल है।" रावी कहते हैं: "ख़ुदा की क़सम, जब उमर रज़ि० ने यह आयत सुनी, तो उन्होंने एक भी शब्द ज़्यादा नहीं कहा। वह हमेशा क़ुरआन के सामने रुक जाने वाले थे।" (*सही अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 4642)

आलोचना को स्वीकार करना

उमर (रज़ि०) ने कहा, “अल्लाह उस शख्स का भला करे, जो मेरे ऐब का तोहफ़ा मुझे भेजे।” (*सुनन अद्दारिमी*, असर संख्या 675)

न्याय में बड़े छोटे का लिहाज़ नहीं

इमाम शाबी ने बताया है कि एक बार अली बिन अबू तालिब (रज़ि०) की एक ज़िरह (कवच) जंग ए जमल में खो गई थी। एक दिन अली (रज़ि०) बाज़ार में चल रहे थे, उन्होंने देखा कि एक ईसाई शख्स ज़िरहें (कवच) बेच रहा है। अली (रज़ि०) ने अपनी खोई हुई ज़िरह को पहचान लिया और कहा, “यह मेरी ज़िरह है, इस मामले में मुस्लिम क़ाज़ी फैसला करेंगे।” उस समय अली (रज़ि०) अमीरुल मुसलमानों के ख़लीफ़ा थे और शुरैह क़ाज़ी के पद पर थे। मामला क़ाज़ी शुरैह के पास लाया गया। अली (रज़ि०) ने कहा, “ऐ शुरैह! मेरे और इसके बीच फैसला करो।” क़ाज़ी शुरैह ने पूछा, “ ओ ऐ मुसलमानों के ख़लीफ़ा, तुम्हारा दावा क्या है?” अली (रज़ि०) ने कहा, “यह ज़िरह मेरी है।” क़ाज़ी शुरैह ने नसरानी से पूछा, “तुम क्या कहते हो?” नसरानी ने कहा, “अमीरुल मोमिनीन ग़लत हैं, यह ज़िरह मेरी है।” क़ाज़ी शुरैह ने अली (रज़ि०) से पूछा, “तुम्हारे गवाह कौन हैं?” अली (रज़ि०) ने अपने बेटे हसन और अपने गुलाम क़ंबर को गवाह पेश किया। क़ाज़ी शुरैह ने कहा, “हसन की जगह कोई और गवाह लाओ।” अली (रज़ि०) ने कहा, “क्या तुम हसन की गवाही को नकार रहे हो?” क़ाज़ी शुरैह ने कहा, “नहीं, पर मैंने तुमसे ही सुना है कि बेटे की गवाही पिता के खिलाफ़ नहीं होती।” (*कंज़ुल उम्माल*, हदीस संख्या 17790)

सभा में बात करने के आदाब

अली बिन अबी तालिब रज़ि० ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की सभा के बारे में बताया: जब आप बात करते थे, तो सभा में बैठे लोग इस तरह सिर झुका लेते थे जैसे उनके सिर पर चिड़ियाँ बैठी हों। जब आप अपनी बात ख़त्म कर लेते थे, तब दूसरे लोग बोलते थे। आपकी सभा में लोग किसी बात पर झगड़ते नहीं थे। एक व्यक्ति बोलता, और बाक़ी लोग चुपचाप सुनते रहते, जब तक बोलने वाला अपनी बात पूरी नहीं कर लेता था। आपकी सभा में हर किसी की बात बराबरी से सुनी जाती थी। (*सुनन अल-तर्मिज़ी*, हदीस संख्या 351)

जवाब में इल्ज़ाम न लगाना

रसूलुल्लाह (सल्ल०) के चाचा अबू तालिब इस्लाम के शुरुआती दौर में आपके संरक्षक और सहारा थे। जब दसवें साल उनका देहांत हो गया, तो मक्का के लोगों को खुला मौका मिल गया और उन्होंने आपको अपने क़बीले की सुरक्षा से अलग कर दिया। अब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को किसी नए मददगार की तलाश थी।

इसी सिलसिले में आप अपने चाचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब के साथ उकाज़ के मेले में गए। वहाँ आपने अलग-अलग क़बीलों से कहा कि वे आपकी मदद करें, ताकि आप अपना संदेश लोगों तक पहुँचाते रहें। लेकिन मक्का वालों के डर की वजह से कोई भी आगे नहीं आया।

अगले साल भी आपने अरब के मेलों में जाकर सहारा ढूँढने की कोशिश की। आख़िरकार यस्रिब (मदीना) के क़बीले औस और ख़ज़रज के छह लोगों से आपकी मुलाक़ात हुई। आपने उन्हें इस्लाम का संदेश दिया। उन्होंने पूछा कि आप पर जो वह्य आती है, वह क्या है। तब आपने उन्हें क़ुरआन की कुछ आयतें सुनाईं। इन आयतों का उनके दिलों पर गहरा असर हुआ और उन्होंने तुरंत इस्लाम स्वीकार कर लिया। यह रात का समय था। आप उनसे बात कर ही रहे थे कि अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब उधर से गुज़रे। उन्होंने आपकी आवाज़ पहचान ली और पास आ गए। उन्होंने पूछा, “भतीजे, ये लोग कौन हैं?”

आपने जवाब दिया:

> "ये यस्रिब के लोग हैं। मैंने इन्हें वही संदेश दिया है जो मैं दूसरे क़बीलों को देता आया हूँ। इन्होंने इसे स्वीकार किया है और मेरी बात की पुष्टि की है। ये मुझे अपने यहाँ ले जाने को भी तैयार हैं।"

यह सुनकर अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब अपनी सवारी से उतर पड़े और ऊँट को बाँध दिया। उन्होंने औस और ख़ज़रज के लोगों से कहा, "ये मेरे भतीजे हैं और मुझे सबसे ज़्यादा प्रिय हैं। अगर तुमने इनकी बात मानी है और इन पर भरोसा किया है, तो मैं तुमसे यह वादा चाहता हूँ कि तुम इनके साथ धोखा या अपमान नहीं करोगे। यस्रिब में यहूदी भी रहते हैं और हालात आसान नहीं हैं, इसलिए मुझे अपने भतीजे की सुरक्षा की चिंता है।" यह बात असअद बिन ज़ुरारह (रज़ि०) को, जो यस्रिब के प्रमुख लोगों में थे, कुछ भारी लगी। उन्होंने कहा, "ऐ अल्लाह के रसूल, क्या मुझे इस बात का जवाब देने की अनुमति है?"

रसूलुल्लाह (सल्ल.) ने फ़रमाया, "तुम जवाब दे सकते हो, लेकिन बात शांति और सम्मान के साथ कहना, आरोप लगाने के अंदाज़ में नहीं।" (*अल-जमिउल-कबीर*, हदीस संख्या 476)

बेकार बातों का जवाब न देना

अबू सुफ़यान (रज़ि०) की पत्नी हिंद बिन्त उत्बा, फतहे मक्का के बाद इस्लाम पर बैअत (वचन देने) करने के लिए आईं। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने बैअत के वक्त कहा: "तुम अपनी औलाद को क़तल नहीं करोगी।" हिंद बिन्त उत्बा ने कहा: "क्या तुम ने हमारी औलाद को जंग बद्र में नहीं मारा?" दूसरी रिवायत में यह कहा गया: "क्या तुम ने हमारी औलाद को ज़िन्दा छोड़ा है, जिन्हें हम मारें?" रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इन बातों का कोई जवाब नहीं दिया और हिंद बिन्त उत्बा की बैअत स्वीकार कर ली। (*मुस्नद अबू याला*, हदीस संख्या 4754)

तंज़ और ताना मारने वाली ज़बान नहीं बोलनी चाहिए

रसूलुल्लाह (सल्ल०) तबूक पहुंचे, और देखा कि काब बिन मालिक (रज़ि०) मौजूद नहीं थे, तो आपने पूछा: "काब ने क्या किया?" बनू सलमा के एक व्यक्ति ने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल, उन्हें उनकी आराम-पसंदी और उनके आत्ममोह ने रोक लिया।" मुआज़ बिन जबल (रज़ि०) ने जवाब दिया: "तुमने बहुत बुरा कहा। ऐ अल्लाह के रसूल, हमने काब में कोई बुराई नहीं देखी।" (*सहीह इब्न हिब्बान*, हदीस संख्या 3370)

ज़बान पर क़ाबू रखना ही सारी भलाई की जड़ और तमाम अच्छाइयों का दरवाज़ा है

मुआज़ बिन जबल (रज़ि०) एक सफ़र में रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ थे। उन्होंने पूछा:

> "ऐ अल्लाह के रसूल, मुझे ऐसा काम बताइए जो मुझे जन्नत की राह दिखाए और बुरे अंजाम से बचाए।"

आपने फ़रमाया:

> "तुमने बहुत अहम सवाल पूछा है, लेकिन यह उस इंसान के लिए आसान हो जाता है, जिसके लिए अल्लाह इसे आसान कर दे।"

फिर आपने कहा:

> "अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को साझी न ठहराओ, नमाज़ क़ायम करो, ज़कात दो, रमज़ान के रोज़े रखो और हज करो।"

इसके बाद आपने फ़रमाया:

"क्या मैं तुम्हें भलाई के रास्ते भी बता दूँ?"

फिर कहा:

"रोज़ा इंसान को बुराई से बचाने की ढाल है। ज़कात गुनाहों को इस तरह मिटा देता है जैसे पानी आग को बुझा देता है। और रात में उठकर इबादत करना भी भलाई का बड़ा ज़रिया है।"

फिर आपने पूछा:

"क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि दीन की बुनियाद क्या है, उसका सहारा क्या है और उसकी सबसे ऊँची मंज़िल क्या है?"

मैंने कहा, "ज़रूर, ऐ अल्लाह के रसूल।"

आपने फ़रमाया:

"दीन की बुनियाद इस्लाम है, उसका सहारा नमाज़ है, और उसकी सबसे ऊँची मंज़िल अल्लाह के रास्ते में पूरी लगन से कोशिश करना है।"

फिर आपने कहा:

"क्या मैं तुम्हें इन सब बातों की जड़ बता दूँ?"

मैंने कहा, "ज़रूर।"

तब आपने अपनी ज़बान की ओर इशारा करते हुए कहा:

"इस पर क़ाबू रखो।"

मैंने पूछा:

"क्या हमारी बातों का भी हिसाब लिया जाएगा?"

आपने फ़रमाया:

"हाँ, इंसान को अपनी बातों के बारे में भी सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि कई बार बिना सोचे कही गई बातें ही बड़े नुकसान का कारण बन जाती हैं।" (*सुनन अल-तर्मिज़ी*, हदीस संख्या 2616)

खाने को बुरा न कहना

जब भी किसी खाने को रसूलुल्लाह (सल्ल०)के सामने पेश किया गया आपने कभी उसे बुरा नहीं कहा। अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कभी किसी खाने की बुराई नहीं की। अगर खाना पसंद आता तो खा लेते, और अगर पसंद नहीं आता तो छोड़ देते। (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 3563)

गुस्सा किए बिना आपत्ति करने वाले को जवाब देना

अलक़मा कहते हैं कि बनू असद की एक औरत, उम्मे याक़ूब, अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) के पास आई और बोली: "मुझे सुनने में आया है कि आप गोदना (tattoo) करने और करवाने वालों पर लानत करते हैं, जबकि मैंने पूरा क़ुरआन पढ़ा है लेकिन उसमें यह बात नहीं पाई। और मुझे तो लगता है कि आपके घरवाले भी ऐसा ही करते होंगे।" अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने कहा: "जाकर मेरे घर में देख लो।" वह औरत अंदर गई और देखा कि किसी पर गुदवाने का निशान नहीं है। जब वापस आई तो अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने उससे पूछा: "क्या तुमने क़ुरआन में यह नहीं पढ़ा कि रसूल जो दे उसे ले लो और जिससे रोके उससे रुक जाओ?" औरत ने कहा: "हाँ, पढ़ा है।" तो उन्होंने कहा: "रसूलुल्लाह ने गुदवाने से मना किया है।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 4886)

किसी को ताने या बुरे शब्दों से न पुकारें

रसूलुल्लाह (सल्ल०)अपनी पत्नी आयशा (रज़ि०) के कमरे में थे। बात करते हुए आयशा की ज़बान से अपनी सौतन सफ़िया (रज़ि०) के बारे में यह निकल गया, "सफ़िया जो ऐसी है।" वह सफ़िया के छोटे क़द के बारे में बात कर रही थीं। यह सुनते ही आपका चेहरा बदल गया। आपने कहा, "तुमने ऐसी बात कह दी कि अगर उसे समुद्र के पानी में मिला दिया जाए, तो समुद्र का पानी भी बदल जाए।" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 4875)

बोलने में सावधानी

अशअस बिन शोबा कहते हैं कि उन्होंने फ़ज़ारी को यह कहते सुना कि उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ से पूछा गया—"जंग-ए-सिफ्फ़ीन में जो लोग लड़े और मारे गए, उनके बारे में आपकी क्या राय है?" उन्होंने जवाब दिया: "यह वह ख़ून है जिससे अल्लाह ने मेरे हाथ को बचाए रखा। मैं नहीं चाहता कि अपनी ज़बान को उस मामले में डालकर उसे गंदा करूँ।" (*जामि बयानुल-इल्म व फ़ज़्लिही*, खण्ड 2, पृष्ठ 934)

आलोचना हो मगर विवाद नहीं

ताऊस और वहब बिन मुनब्बेह दोनों मिले। ताऊस ने वहब से कहा: "ऐ अबू अब्दुल्लाह! मैंने आपके बारे में एक बड़ी गंभीर बात सुनी है।" उन्होंने पूछा: "क्या बात?" ताऊस ने कहा: "आप कहते हैं कि यह अल्लाह ही था जिसने क़ौम-ए-लूत को एक-दूसरे पर सवार किया।" वहब ने यह सुनकर कहा: "अल्लाह की पनाह!" फिर वे चुप हो गए। मैंने पूछा: "क्या दोनों में कोई बहस हुई?" रावी ने कहा: "नहीं।" (*जामि बयानुल-इल्म व फ़ज़्लिही*, खण्ड 2, पृष्ठ 942)

मतभेद को बर्दाश्त करना ही इल्म की निशानी है

सईद बिन अबी अरूबा ने कहा—"जो मतभेद की बातें सुन नहीं सकता, उसे आलिम (विद्वान) मत समझो।" (*जामि बयानुल-इल्म व फ़ज़लिह*, खण्ड 2, पृष्ठ 819)

अमल का आख़िरी दर्जा—ज़बान को काबू करना है

हज़रत बराअ बिन आज़िब (रज़ि०) से रिवायत है कि एक देहाती रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आया और बोला—"मुझे ऐसा काम बताइए जिससे मैं जन्नत में चला जाऊँ।"

आपने कहा—"ग़ुलामों को आज़ाद करो, ऊँटनी का दूध दूसरों को पिलाओ, जो रिश्ता तोड़े उससे रिश्ता जोड़ो, भूखों को खाना खिलाओ, प्यासों को पानी पिलाओ, लोगों को अच्छी बातें बताओ और बुरी बातों से रोको।"

आख़िर में आपने कहा—"अगर यह सब न कर सको, तो कम से कम अपनी ज़बान को रोक लो और उससे सिर्फ़ अच्छी बातें ही निकालो।" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या, 8647)

दूसरों की ग़लतियों को छिपाना अपनी ग़लतियां छिपाना है

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी (रज़ि०) ने एक हदीस रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सुनी थी। बाद में उन्हें शब्दों में शक हुआ। यह हदीस उक़्बा बिन आमिर ने भी सुनी थी,

जो मिस्र चले गए थे। अबू अय्यूब ऊँट लेकर मदीना से मिस्र पहुँचे और उक़्बा बिन आमिर से कहा—“मुझसे वह हदीस दोबारा बताओ जो तुमने किसी मुस्लमान की बदनामी के बारे में कोई राज़ छिपाने के बारे में सुनी थी। अब इसे सुनने वालों में बस तुम और मैं ही बचे हैं।” उन्होंने हदीस सुनाई—“जो शख़्स किसी सच्चे ईमान वाले की दुनिया में कोई (शर्मनाक) बात छुपाएगा, अल्लाह क़ियामत के दिन उसकी इज़्ज़त ढकेगा।” (*मुस्नद अल-हुमैदी*, हदीस संख्या 388)

झूठ बोलने वाला मुनाफ़िक़ (पाखंडी) है

रसूलुल्लाह (सल्ल.) से पूछा गया—“क्या ईमान वाला डरपोक हो सकता है?” आपने कहा—“हाँ।” फिर पूछा गया—“क्या ईमान वाला कंजूस हो सकता है?” आपने कहा—“हाँ।” फिर पूछा गया—“क्या ईमान वाला झूठा हो सकता है?” आपने कहा—“नहीं।” हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान (रज़ि०) ने कहा—“रसूलुल्लाह (सल्ल.) के ज़माने में कोई एक झूठ बोलता था तो कपटी समझा जाता था। और आज मैं देखता हूँ कि तुममें से बहुत से लोग दिन में दस बार झूठ बोलते हैं।” (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या, 23278)

ज़बान संभालकर रखो

अबू उमर कहते हैं कि सहल बिन अब्दुल्लाह तुस्तरी ने कहा: “जो भी इंसान दीन में अपनी तरफ़ से कोई नई चीज़ जोड़ देगा, क़ियामत के दिन उससे इस बारे में पूछा जाएगा। अगर वह चीज़ सुन्नत के मुताबिक़ हुई तो वह बच जाएगा, और अगर नहीं हुई तो उसे नुकसान ही मिलेगा।” (*जामि बयानुल-इल्म व फ़ज़्लिही*, खण्ड 2, पृष्ठ 150)

ज़्यादा बोलना अच्छी निशानी नहीं है

सुफ़यान बिन उयय्ना कहते हैं– “मैंने अय्यूब सिख्तियानी को कहते सुना– ‘फ़तवा देने में सबसे आगे वही लोग होते हैं, जिनके पास इल्म सबसे कम होता है।’” (*जामि बयानुल-इल्म व फ़ज़्लिही*, खण्ड 2, पृष्ठ 816)

झूठा इलज़ाम सबसे बड़ा गुनाह है

हज़रत अली (रज़ि०) से किसी ने पूछा—आसमान से भी भारी क्या चीज़ है? उन्होंने कहा—“किसी बेगुनाह पर झूठा इलज़ाम लगाना।” (*नवादिरुल उसूल*, खंड 1, पृष्ठ 193)

बुरा वह है जो अपनी ज़बान पर काबू न रखे

असमा बिन्त यज़ीद (रज़ि.) कहती हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—क्या बताऊँ कि तुममें सबसे बुरे लोग कौन हैं? लोगों ने कहा—हाँ, बताइए , आप (सल्ल०) ने कहा जो चुगली करते फिरते हैं, दोस्तों के बीच झगड़ा करवाते हैं और बेदाग़ लोगों में भी खोट निकालते हैं। (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 28247)

कम बोलना इंसान की सच्चाई और निष्ठा की पहचान है

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) कहते हैं—मैंने रसूल (सल्ल०) के साथियों से अच्छे लोग नहीं देखे। उन्होंने आपकी वफ़ात तक सिर्फ़ तेरह सवाल किए, और सब क़ुरआन में मौजूद हैं। उन्होंने कहा—सहाबा वही सवाल पूछते थे जो उनके काम के होते थे। (*जामिउल उलूम वल-हिकम*, खण्ड 2, पृष्ठ 141)

ज़बान जन्नत भी दिला सकती है और जहन्नम भी

हज़रत अबू दरदा (रज़ि०) ने फ़रमाया: "ईमान वाले इंसान के जिस्म का सबसे प्यारा हिस्सा अल्लाह को उसकी ज़बान लगती है—क्योंकि वही ज़बान उसे नेकी की राह पर ले जाती है और जन्नत तक पहुँचा देती है। और जिस व्यक्ति के दिल में ईमान नहीं होता, उसके लिए सबसे परेशानी पैदा करने वाली चीज़ उसकी ज़बान ही बनती है—क्योंकि वही उसे गलत रास्तों की ओर धकेल देती है।" (*हिल्यतुल औलिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 219)

चुप रहना भी नेक काम है

रसूल (सल्ल०) ने कहा—चुप रहो, सिवाय इसके कि कोई भली बात कहनी हो। (*अल-मुस्तदरक अल-हाकिम*, हदीस संख्या 7774)

अल्लाह से डरने वाला ज़बान को रोकने वाला होता है

किसी ने हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ि०) से कहा—मुझे नसीहत कीजिए। उन्होंने कहा—अपने घर को ही अपने लिए काफ़ी समझो, अपनी ग़लतियों को याद करके रोओ और अपनी ज़बान को काबू में रखो। (*अल-मोजम अल-औसत*, अल-तबरानी, हदीस संख्या 5799)

सबसे ज़्यादा गुनाह ज़बान से होते हैं

रसूल (सल्ल०) ने कहा—इंसान की ज़्यादातर ग़लतियाँ उसकी ज़बान से होती हैं। (*हिल्यतुल औलिया व तबक़ातुल* , खण्ड 4, पृष्ठ 107)

बोलने के वक़्त बोलना, चुप रहने के वक़्त चुप रहना

हज़रत अबू दरदा (रज़ि.) ने कहा: "जिस तरह तुम बोलना सीखते हो, उसी तरह चुप रहना भी सीखो—क्योंकि चुप रहना बड़ी समझदारी है। सुनाने से ज़्यादा सुनने की आदत डालो। बोलने में जल्दबाज़ी न करो, सिर्फ़ वही बात कहो जिसमें फ़ायदा हो। बिना वजह मत हँसो, और बिना ज़रूरत कहीं मत जाओ।" (*कंज़ुल-उम्माल*, हदीस संख्या 8703)

ख़ुदा का डर आदमी की ज़बान रोक देता है

ख़लीफ़ा उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) ने एक ख़ुत्बा दिया। उन्होंने अल्लाह की हमद (स्तुति) की और कहा—औरतों का महर ज़्यादा मत रखो। अगर मुझे पता चला कि किसी ने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की तय की महर (करीब 400 दिरहम) से ज़्यादा रखी है, तो मैं वह हिस्सा बैतुलमाल में जमा कर दूँगा। जब वे मिम्बर (मस्जिद में उपदेश का स्थान) से उतरे तो क़ुरैश की एक औरत आई और बोली—"ऐ अमीर-उल-मोमिनीन, अल्लाह की किताब माननी चाहिए या आप की बात?" उमर ने कहा—"अल्लाह की किताब।" फिर पूछा—"क्यों पूछा तुमने?" औरत बोली—"आपने लोगों को रोका कि औरतों का महर ज़्यादा मत रखो, जबकि अल्लाह अपनी किताब में कहता है—अगर तुमने किसी को बहुत सा माल दे दिया हो, तो भी उसमें से कुछ वापस मत लो।" (क़ुरआन 4:20) यह सुनकर उमर ने कहा—"हर आदमी उमर से ज़्यादा जानता है।" यह वाक्य उन्होंने तीन बार कहा। फिर दोबारा मिम्बर पर चढ़े और बोले—"मैंने तुम्हें मना किया था, लेकिन अब हर इंसान अपने माल में जो चाहे कर सकता है।" उन्होंने यह भी कहा—"अगर महर आख़िरत में कोई इज़्ज़त और बड़ाई की चीज़ होती, तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बेटियाँ और बीवियाँ इसका सबसे ज़्यादा हक़ रखतीं।" (*कंज़ुल उम्माल*, हदीस संख्या 45796-97)

नसीहत को स्वीकार करना एक सच्चे दीनदार मुसलमान की पहचान

अदी बिन हातिम (रज़ि०) ने कहा—"तुम भलाई पर तब तक क़ायम रहोगे, जब तक बुराई को पहचानते रहोगे और नेकी से दूर नहीं भागोगे। और जब तक तुम्हारे

बीच कोई आलिम मौजूद रहेगा जो नसीहत करता रहेगा—और लोग उसकी बात को हल्का नहीं समझेंगे।" (*कंज़ुल उम्माल*, हदीस संख्या 8478)

ईमान वाला नरम दिल इंसान होता है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा—"अल्लाह उस इंसान पर रहम करे जो खरीदते-बेचते वक्त नरमी से पेश आए और क़र्ज़ की वापसी के वक्त भी नरमी दिखाए।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 2076)

ज़बान बुराई भी कर सकती है और भलाई भी

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया– "भली बात कहो, फायेदे में रहोगे। बुरा मत कहो सलामती (सुरक्षा) पाओगे।" (*अल-मुस्तदरक अल-हाकिम*, हदीस संख्या 7855)

हर चीज़ पर सब्र और शुक्र के साथ राज़ी रहना

हज़रत उम्मे अय्यूब अंसारी से किसी ने पूछा—पैग़ंबर-ए-इस्लाम का मिज़ाज कैसा था? उन्होंने कहा—"आपने कभी किसी खाने की फ़रमाइश नहीं की, और जो खाना सामने आता, उसकी कभी बुराई नहीं की।" (*अंसाबुल-अशराफ़*, अल-बलाज़ुरी, खण्ड 1, पृष्ठ 314)

टकराने से पहले अपनी ताक़त देखो

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर कहते हैं:

> "मैंने हज्जाज का ख़ुत्बा सुना। उसने ऐसी बात कही जो मुझे पसंद नहीं आई। मैं उसका विरोध करना चाहता था, लेकिन मुझे रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बात याद आ गई कि ईमान वाले को ख़ुद को ज़लील नहीं करना चाहिए। मैंने पूछा था, 'कोई ख़ुद को ज़लील कैसे करता है?' तो आपने कहा था— जब इंसान ऐसी मुसीबत से टकरा जाए, जिससे निपटने की ताक़त उसमें न हो।" (*मज्मउज़-ज़वाइद व मंबउल फवाइद*, हदीस संख्या 121169)

ईमान वाले की ज़बान कैसी होती है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा—"ईमान वाला न तो ताने देता है, न गाली देता है, न अपशब्द कहता है, और न ही गंदी भाषा इस्तेमाल करता है।" (*सुनन अल-तिर्मिज़ी*, हदीस संख्या 1977)

अच्छा मुसलमान वो है जिसका चरित्र अच्छा हो

रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा गया—"कौन-सा मुसलमान सबसे अच्छा है?" आपने कहा—"वह जिसके हाथ और ज़बान से दूसरे लोग महफ़ूज़ रहें।" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 6753)

बेफ़ायदा बोलते रहना भी गुनाह है

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं—"क़ियामत के दिन सबसे ज़्यादा गुनहगार वही होंगे जो सबसे ज़्यादा बेफ़ायदा बातें करते रहते हैं।" (*कंज़ुल उम्माल*, हदीस संख्या 8293)

कुछ लोग एक सहाबी के पास उनके आख़िरी वक़्त (मर्ज़-ए-मौत) में आए। सहाबी का चेहरा चमक रहा था। लोगों ने वजह पूछी। सहाबी ने कहा—"मेरे आमाल (कर्म) में सिर्फ़ दो चीज़ें हैं जिन पर मुझे भरोसा है: पहली, मैं बेकार की बातें नहीं करता था। दूसरी, मेरा दिल सबके लिए साफ़ रहता था।" (*सीयर आलामिन-नुबला*, खण्ड 3, पृष्ठ 152)

सामाजिक तौर-तरीक़े

जैसा लोगों के साथ करोगे, वैसा ही ख़ुदा तुम्हारे साथ करेगा

अम्र बिन मुर्रा (रज़ि०) कहते हैं कि मैं ने मुआविया से कहा: रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मैं ने कहते सुना है—"जो शासक ग़रीब और कमज़ोर लोगों के लिए अपने दरवाज़े बंद कर लेगा, तो अल्लाह भी उसकी ज़रूरत और परेशानी के वक़्त उसके लिए आसमान के दरवाज़े बंद कर देगा।" (*सुनन अल-तिर्मिज़ी*, हदीस संख्या 1332)

बुराई का जवाब भलाई से देना

उमर (रज़ि०) ने कहा: "अगर कोई तुम्हारे साथ किसी मामले में अल्लाह की नाफ़रमानी करे, तो उसका सबसे अच्छा जवाब यही है कि तुम उस मामले में अल्लाह की आज्ञा का पालन करो।" (*तफ़्सीर इब्न कसीर*, खंड 7, पृष्ठ. 165)

लोगों की बुराई से बचने के लिए सब्र करो

अहनफ़ बिन क़ैस कहते हैं: " जो इंसान एक कड़वी बात पर सब्र नहीं करता, उसे आगे चलकर और भी कड़वी बातें सुननी पड़ती हैं। मैंने कई बार अपना ग़ुस्सा पी लिया, क्योंकि अगर मैं ऐसा न करता तो बात और बिगड़ जाती। बड़ी मुसीबत से बचने के लिए मैंने कई बार अपना ग़ुस्सा रोके रखा।" (*अल-मुजालसा व जवाहिरुल इल्म*, हदीस 3327)

अगर आप किसी के साथ कुछ गलत कर बैठें, तो उसकी भरपाई के लिए उसके हक़ में दुआ करें

अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने दुआ की: "ऐ अल्लाह! मैं तुझसे एक वादा करता हूँ, तू उसे पूरा कर। मैं इंसान हूँ। अगर मैंने किसी व्यक्ति को तकलीफ़ दी हो, गाली दी हो, उसको मारा हो या लानत की हो—तो तू इसे उसके लिए रहमत और पाकीज़गी बना दे और क़ियामत के दिन उसे तेरे क़रीब आने का ज़रिया बना दे।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस 2601)

जो दूसरे का बुरा चाहता है, असल में वह अपना नुक़सान करता है

अबू अल-ऐना कहते हैं:

> "मैंने अहमद बिन अबी दुआद से शिकायत की कि मेरे कुछ ज़ालिम दुश्मन हैं—सब मेरे ख़िलाफ़ इकट्ठे हो गए हैं। उन्होंने कहा: "अल्लाह का हाथ उनके हाथों के ऊपर है (यानी अल्लाह की ताक़त सबसे बड़ी है)।" मैंने कहा: "वे बहुत हैं और मैं अकेला हूँ।" उन्होंने जवाब दिया: "अक्सर छोटी जमाअतें भी अल्लाह की मदद से बड़ी जमाअतों पर जीत जाती हैं।"

मैंने कहा: "वे मेरे खिलाफ़ चालें चल रहे हैं।" उन्होंने कहा: "बुरी चाल आख़िरकार उसी पर वापस आती है जिसने वह चाल चली।" (क़ुरआन, 2:249; 35:43)" (*तफ़्सीर रूहुल बयान*, खंड 3, पृष्ठ 340)

अन्याय में किसी का साथ देना ग़लत और गुनाह है

वासिला बिन असक़ा (रज़ि०) कहते हैं: मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से पूछा— 'असबियत(पक्षपात) क्या है?' आपने फ़रमाया: "जब तुम ज़ुल्म में अपने लोगों की मदद करो, वही पक्षपात है।" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 5119)

हर किसी से इंसाफ़ करना, चाहे वो कमज़ोर हो या ताक़तवर

मुआविया बिन अबू सुफ़यान ने ज़िरार सुदाई से कहा: "मुझे अली की अच्छाई बताओ।"

उन्होंने कहा: "वो हम सबके बीच बिल्कुल एक आम इंसान जैसे रहते थे। कोई ताक़तवर इंसान ग़लत काम में उनसे उम्मीद नहीं रख सकता था और कोई कमज़ोर उनके इंसाफ़ से कभी निराश नहीं होता था।" (*तारीख़े दमिश्क*, इब्ने असाकिर, खंड 24, पृष्ठ 401)

जो माफ़ी माँगे, उसकी माफ़ी कुबूल करो

अबू हुरैरा रज़ि० बताते हैं कि रसूल (सल्ल०) ने कहा: "अगर तुम्हारा भाई तुम्हारे पास माफ़ी माँगने आए, तो तुम्हें उसका बहाना मान लेना चाहिए, चाहे वो सही हो या ग़लत। अगर तुम उसकी माफ़ी क़ुबूल नहीं करोगे तो हौज़-ए-कौसर पर मुझ तक नहीं पहुँच पाओगे।" (*अल-मुस्तद्रक अल-हाकिम*, हदीस संख्या 7258)

क़ुरआन में ग़ीबत के तीन प्रकार

हसन बसरी ने कहा: "ग़ीबत की तीन क़िस्में हैं—ग़ीबत (backbiting), इफ़्क और बहुतान। ग़ीबत, अपने भाई के बारे में वही बुरी बात कहना जो सचमुच उसमें है। इफ़्क़, वो बात कहना जो तुमने किसी और से सुनी हो। बहुतान, वो बात कहना जो उसके अंदर है ही नहीं।" (*तफ़्सीर क़ुर्तुबी*, खंड 16, पृष्ठ 335)

एक सच्चा मुसलमान लोगों से कैसा बर्ताव करे

अली बिन अबी तालिब रज़ि० ने रसूल (सल्ल०) के बारे में बताया: "आप तीन चीज़ों से हमेशा दूर रहते थे—झगड़ा, घमंड और बेकार के काम। और लोगों को भी तीन चीज़ों से बचाए रखा—किसी की बुराई नहीं करते थे, किसी में ऐब नहीं निकालते थे और किसी की कमज़ोरी नहीं खोजते थे। आप सिर्फ़ उसी विषय पर बात करते थे जिसमें सवाब (नेकी) की उम्मीद होती थी।" (*सुनन अल-तिर्मिज़ी*, हदीस संख्या 351)

कम बोलना और किसी के ख़िलाफ़ द्वेष न रखना

रसूल (सल्ल०) के एक साथी की मौत के समय लोग उनके पास गए। उनका चेहरा चमक रहा था। लोगों ने वजह पूछी तो उन्होंने कहा: "मेरे लिए मेरी दो आदतें सबसे बड़ी पूँजी हैं—पहली, मैं बेकार की बातें नहीं करता था। दूसरी, मेरा दिल सबके लिए हमेशा साफ़ रहता था।" (*सियर आलामिन्नुबला*, खंड 3, पृष्ठ 152)

बुराई का जवाब भलाई से देना

उबादा बिन सामित रज़ि० कहते हैं: रसूल (सल्ल०) ने कहा: “क्या मैं तुम्हें ऐसा काम न बताऊँ जिससे अल्लाह तुम्हारे दर्जे ऊँचे करता है? लोगों ने कहा: हाँ, बताइए ऐ अल्लाह के रसूल। आपने कहा: जो तुम्हारे साथ बुरा बर्ताव करे, उस पर सब्र करो। जो तुम पर ज़ुल्म करे, उसे माफ़ कर दो। जो तुम्हें न दे, उसे तुम दो। जो रिश्ता तोड़े, उससे तुम रिश्ता जोड़ो।” (*मजमउज़्ज़वाइद*, हदीस संख्या 13694)

ग़ुस्सा पी जाने से ईमान बढ़ता है

रसूल (सल्ल०) ने कहा: “जो इंसान ग़ुस्से पर काबू पा ले, जबकि वो चाहे तो उसे दिखा भी सकता हो, अल्लाह उसका दिल ईमान और सुकून से भर देता है।” (*कंज़ुल उम्माल*, हदीस संख्या 5823)

इबादत, एकता और भलाई

सहीह मुस्लिम में अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है: रसूल (सल्ल०) ने कहा: “अल्लाह तीन कामों से प्रसन्न होता है —

> तुम उसी की इबादत करो और उसके साथ किसी को साझी न करो, और अल्लाह की रस्सी को मजबूती से पकड़ो और आपसी फूट में न पड़ो, और जो तुम्हारे मामलों का ज़िम्मेदार हो, उसके साथ भलाई करो।”

मुस्नद अहमद में ज़ुबैर बिन मुतइम (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ख़ुत्बा देते हुए फ़रमाया: "तीन बातें ऐसी हैं जिनमें ईमान वाले का दिल कभी धोखा नहीं खाता—

अल्लाह के लिए पूरी सच्चाई के साथ अमल करना,

हुक्मरानों के लिए दिल से भलाई चाहना, और सबके साथ मिल-जुल कर रहना।" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 13350)

गुमान या शक की बातों के पीछे मत पड़ो

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया: "गुमान की तहक़ीक़ मत करो" अर्थात जब तुम्हें किसी के बारे में शक हो तो उसकी पड़ताल मत करो। (*अल-जामिउल कबीर*, हदीस संख्या 2174)

जिसकी बात हो ख़ुद उससे पूछे बिना न मानो

अबुल आलिया (वफ़ात 93 हिजरी) कहते हैं: "हम बसरा में लोगों से सुनते थे कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथियों ने ऐसा कहा है, लेकिन हम सिर्फ़ सुनकर मान नहीं लेते थे, हम सवारी करके मदीना जाते और खुद उनकी ज़बान से सुनते।" (*अल-किफ़ाया फ़ी मारिफ़ती उसूलि इल्मिर्रिवाया*, खण्ड 2, पृष्ठ 211)

इजाज़त न मिले तो बुरा माने बिना लौट आओ

रसूलुल्लाह (सल्ल०) जब किसी के यहाँ जाते तो तीन बार सलाम करते। अगर इजाज़त मिल जाती तो अंदर जाते, वरना वापस लौट आते। (*मुस्नद अल-बज़्ज़ार*, हदीस संख्या 6872)

माँ-बाप का ख्याल अपने से भी ज़्यादा रखना

हज़रत अबू हुरैरा अपनी माँ का बहुत ध्यान रखते थे। वो बताते हैं: ‘‘मदीना के शुरुआती दिनों में एक बार मैं भूख से घर से निकला और मस्जिद पहुँचा। वहाँ और लोग भी थे। उन्होंने पूछा, ‘क्यों आए हो?’ मैंने कहा, ‘भूख से।’ उन्होंने कहा, ‘खुदा की क़सम, हम भी भूख से आए हैं।’ फिर हम सब रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास गए। आप (सल्ल०) ने पूछा, ‘क्यों आए हो?’ हमने कहा, ‘भूख से।’ आपने खजूरों का एक बर्तन मंगवाया और सबको दो-दो खजूरें दीं। आपने कहा, ‘इन दो खजूरों को खा लो और पानी पी लो, आज के लिए काफ़ी होंगी।’ अबू हुरैरा कहते हैं: ‘मैंने एक खजूर खा ली और दूसरी छुपा ली।’ आप (सल्ल०) ने पूछा: ‘क्यों छुपाई?’ मैंने कहा, ‘अपनी माँ के लिए।’ आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, ‘इसे खा लो, तुम्हारी माँ के लिए हम और दो खजूरें देंगे।’’’ (*शुअबुल ईमान*, हदीस संख्या 9960)

मुसलमान की मुसीबत उसकी अपनी लाई हुई होती है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) एक रात बाहर निकले और बुनू मुआविया की मस्जिद गए। आपने दो रकअत नमाज़ पढ़ी और लंबी दुआ की। हज़रत ख़ब्बाब कहते हैं: "मैंने कहा, 'ऐ रसूलल्लाह, मेरे माँ-बाप आप पर फ़िदा हों, आज आपने ऐसी नमाज़ पढ़ी जैसी मैंने आपको पढ़ते हुए पहले कभी नहीं देखा।'" रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: " हाँ, यह डर और दुआ की नमाज़ थी। मैंने अल्लाह से तीन बातें माँगीं। दो मान ली गईं, और एक नहीं।" मैंने दुआ की कि हमें पिछली क़ौमों की तरह ख़त्म न किया जाए—यह दुआ मान ली गई। मैंने दुआ की कि हमारे अलावा कोई दुश्मन हम पर हावी न हो—यह भी मान ली गई। मैंने दुआ की कि हम आपस में न लड़ें और न बँटें—यह दुआ नहीं मानी गई।" (*सुनन नसाई*, हदीस संख्या 1636; *मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 21053; *सहीह इब्ने हिब्बान*, हदीस संख्या 7236)

सख़्त बात पर ग़ुस्सा न होना

एक दिन हज़रत उमर (रज़ि.) ने लोगों से कहा: "अगर तुम्हें मुझमें कोई टेढ़ी बात या गलती दिखे, तो उसे ठीक कर देना।" तुरंत एक आदमी उठकर बोला: "ख़ुदा की क़सम! अगर हमें आपमें कोई टेढ़ापन दिखा, तो हम उसे तलवार से भी सीधा कर देंगे।" हज़रत उमर (रज़ि.) ने कहा: "अल्लाह का शुक्र है कि इस उम्मत में ऐसे लोग मौजूद हैं जो उमर की गलती को तलवार से भी ठीक कर देंगे।" (*अत्तहसील मिनल-महसूल*, खण्ड 1, पृष्ठ 99)

मिलजुलकर रहना ज़रूरी है

हज़रत अबू दरदा कहते हैं—मैंने अल्लाह के रसूल को कहते सुना—"किसी बस्ती या जंगल में अगर तीन आदमी हों और वे नमाज़ जमात से न पढ़ें, तो उन पर शैतान क़ाबू पा लेता है। इसलिए जमात को ज़रूरी समझो। भेड़िए अकेली भेड़ को खा जाते हैं, इसी तरह शैतान अकेले इंसान को गुमराह कर देता है।" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 21710, 22029)

मतभेद को रिश्तों के बिगड़ने की वजह न बनने देना

इमाम तबरी बताते हैं कि एक बार हज़रत ख़ालिद बिन वलीद और हज़रत सअद बिन अबी वक़्क़ास में किसी निजी मसले पर मतभेद हो गया। बाद में किसी ने हज़रत सअद के सामने ख़ालिद की बुराई करनी चाही। हज़रत सअद ने तुरंत रोका और कहा—"उसे छोड़ो। हमारे बीच मतभेद है, लेकिन इसका हमारे धार्मिक रिश्तों को प्रभावित नहीं कर सकता।" (*अल-मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा*, हदीस संख्या 25535)

नफ़रत इंसान का ईमान खा जाता है

नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया—"द्वेष मूंडने वाली चीज़ है। मैं यह नहीं कहता कि वह बाल मूंडती है, बल्कि वह धर्म को मूंड देती है। उस अल्लाह की क़सम, जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है—तुम जन्नत में नहीं जा सकते जब तक ईमान वाले न बनो, और ईमान वाले नहीं बन सकते जब तक आपस में मोहब्बत न करो।" (*सुनन अल-तिर्मिज़ी*, हदीस संख्या 2510)

लड़ाई-झगड़ा अच्छे कर्म नष्ट कर देता है

अव्वाम बिन हौशब ने कहा—“लोगो! धर्म में झगड़े से बचो, क्योंकि इससे इंसान के अच्छे काम भी बर्बाद हो जाते हैं।” (*जामे बयानुल-इल्म*, खण्ड 2, पृष्ठ 932)

ज़्यादा बहस गिरावट की निशानी है

औज़ाई कहते हैं—“जब अल्लाह किसी क़ौम के लिए बुराई चाहता है, तो उन्हें बहस में उलझा देता है और उन्हें अच्छे कामों से रोक देता है।” (*जामे बयानुल-इल्म*, खण्ड 2, पृष्ठ 933)

ईमान वाले के लिए असली लज़्ज़त ग़ुस्सा पी जाने में है

हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा—“किसी इंसान के लिए दूध या शहद का घूँट पीना उतना मीठा नहीं जितना ग़ुस्से का घूँट पी जाना।” (*कंज़ुल उम्माल*, हदीस संख्या 8748)

आपस की लड़ाई इस्लाम के ख़िलाफ़ है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: “जो हम पर हथियार उठाए, वह हममें से नहीं।” (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 6874)

अल्लाह के हवाले कर के सब्र करना

अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) ने जब यज़ीद की बैअत की तो कहा—“अगर यह भलाई है तो हम राज़ी हैं, और अगर यह बुराई है तो हमने सब्र किया।” (*मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा*, हदीस संख्या 30575)

दोस्ती और दुश्मनी में संतुलन

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: “दोस्ती भी इतेदाल (बीच) की करो, शायद वह कभी तुम्हारा दुश्मन बन जाए। और दुश्मनी भी बीच की करो, शायद वह कभी तुम्हारा दोस्त बन जाए।” (*अल-अदबुल-मुफ़रद*, हदीस संख्या 1321)

इनफ़ाक़

(दान)

धन: दीन और दुनिया के लिए सहायक

हज़रत असलम कहते हैं कि हज़रत उमर (रज़ि०) ने अबू उबैदा बिन जर्राह को कोई सरकारी काम सौंपा और बाद में उनके पास हज़ार दीनार भेजे। अबू उबैदा (रज़ि०) ने उसे लौटा दिया और कहा—“ऐ इब्ने ख़त्ताब! यह काम मैंने तुम्हारे लिए नहीं किया था। मैंने यह अल्लाह के लिए किया था। इसलिए मैं इस के बदले कुछ नहीं लूँगा।” उमर (रज़ि०) ने कहा—“रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हमें काम पर भेजा और हमें इनामात दिए। उस वक़्त हमें लेने में हिचक हुई। लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया—‘इसे क़ुबूल करो और इससे अपने दीन और अपनी दुनिया में मदद लो।’” उसके बाद अबू उबैदा (रज़ि०) ने उसे क़ुबूल कर लिया। (*अस्सुननुल कुबरा*, हदीस संख्या 13016)

रिश्तेदारों को दान देने में अधिक सवाब

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) की एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया—“ऐ मुहम्मद की उम्मत! अल्लाह की क़सम—अल्लाह उस इंसान का दान क़ुबूल नहीं करता जिसके अपने ज़रूरतमंद रिश्तेदार हों और वह उन्हें छोड़कर दूसरों को दे।”

और दूसरी रिवायत में है: “अल्लाह की क़सम, क़ियामत के दिन अल्लाह ऐसे व्यक्ति की तरफ़ नज़र भी नहीं करेगा।” (*अल-मोजम अल-औसत*, खण्ड 8, पृष्ठ 346)

मेहनत की कमाई ईमान वाले के लिए बेहतर है

अनस बिन मालिक (रज़ि०) कहते हैं कि एक अंसारी मुसलमान नबी (सल्ल०) के पास आए और सवाल किया। आप (सल्ल०) ने पूछा—“तुम्हारे घर में कुछ

है?” उन्होंने कहा—“एक मामूली चादर है जिसे ओढ़ता हूँ और एक प्याला है जिससे पानी पीता हूँ।” आप (सल्ल०) ने प्याला मंगवाया और वहां मौजूद लोगों से कहा—“इस प्याले की क़ीमत लगाओ।” एक शख़्स ने एक दिरहम की क़ीमत लगाई। दूसरे ने बढ़ाकर दो दिरहम में ले लिया। आप (सल्ल०) ने वे दो दिरहम उस अंसारी को दिए और फ़रमाया—“एक दिरहम का खाना खरीदकर अपने घर वालों को दो और एक दिरहम से कुल्हाड़ी खरीदकर मेरे पास लाओ।” वह कुल्हाड़ी लेकर आए। आपने उसमें अपने हाथ से दस्ता लगाया और फ़रमाया—“जाओ, जंगल से लकड़ी काटकर लाओ और बेचो। पंद्रह दिन तक मेरे पास मत आना।”

वह अंसारी काम में लग गए। लकड़ी काटते और बेचते रहे। दो हफ़्ते बाद नबी (सल्ल०) के पास आए और अपनी आमदनी-खर्च का हिसाब बताया। खर्च पूरे करने के बाद उनके पास दस दिरहम बच गए थे।

आप (सल्ल०) खुश हुए और फ़रमाया—“यह तुम्हारे लिए इस से बेहतर है कि तुम हाथ फैलाते और वह क़ियामत के दिन तुम्हारे चेहरे पर दाग़ बन जाता।” (*सुनन इब्ने माजह*, हदीस संख्या 2198)

फ़ुज़ूल-खर्ची किसी ज़रूरी खर्च के बदले होती है

हज़रत मुआविया कहते हैं कि जब भी मैंने किसी को फ़ुज़ूल-खर्ची करते देखा, तो समझा कि उसने किसी असली ज़रूरत को अनदेखा किया है। मतलब, जब इंसान ग़ैर-ज़रूरी जगह पैसा उड़ाता है, तो वही पैसा किसी ज़रूरी काम में नहीं लग पाता। (*मुहाज़रातुल उदबा व मुहावरातुश्शुअरा वल बुलग़ा*, अल-अस्फ़हानी, पृष्ठ 579)

पैसे पर नहीं, ख़ुदा पर भरोसा

सलमा बिन सईद और अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) बताते हैं कि उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) के ज़माने में इराक़ से बहुत सारा धन आया। आपने उसको बाँटना शुरू किया। लग रहा था कि सब बाँटकर ख़त्म कर देंगे। तब अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि०) खड़े होकर बोले: "अमीर-उल-मोमिनीन! थोड़ा धन बचाकर रख लीजिए। हो सकता है दुश्मन से लड़ाई हो जाए या कोई अचानक मुसीबत आ पड़े।" उमर (रज़ि०) ने कहा: "तुम्हें क्या हो गया! ये बात तुम्हारी ज़बान से शैतान ने कहलवाई है। अल्लाह की क़सम, मैं कल के डर से आज अल्लाह की नाफ़रमानी नहीं करूँगा।" (*कंज़ुल उम्माल*, हदीस संख्या 36012)

दुनिया से ज़्यादा आख़िरत की फ़िक्र

मदीना में एक मुसलमान अपना घर बना रहा था। वह दीवार पर मिट्टी लगा रहा था और उसको सुन्दर बना रहा था। तभी नबी (सल्ल०) वहाँ से गुज़रे और पूछा: "क्या कर रहे हो?" उसने कहा: "मिट्टी लगा रहा हूँ।" आपने फ़रमाया: "फ़ैसले (मौत) की घड़ी इससे भी ज़्यादा क़रीब है।" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 5235)

शहीद होने से भी क़र्ज़ माफ़ नहीं होता

अबू क़तादा बिन रिबई (रज़ि०) बताते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा: "ख़ुदा के रास्ते में जिहाद और ख़ुदा पर ईमान, सबसे बढ़िया काम हैं।" एक आदमी ने पूछा: "अगर मैं अल्लाह के रास्ते में मारा जाऊँ, तो क्या मेरी सारी ग़लतियाँ माफ़ हो जाएँगी?" आपने जवाब दिया: "हाँ, अगर तुम सब्र करने वाले हो, तुम्हारी नीयत अल्लाह की ख़ुशी पाना हो, तुम आगे बढ़ने वाले हो और पीछे मुड़ने वाले न हो।" फिर थोड़ी देर बाद आपने ख़ुद पूछा: "अभी तुमने क्या कहा

था?” उसने वही सवाल दोहराया। रसूलुल्लाह (सल्ल॰) ने कहा: “हाँ, अगर तुम सब्र करने वाले हो, नीयत अल्लाह की ख़ुशी पाना हो, आगे बढ़ने वाले हो, पीछे हटने वाले न हो, तो तुम्हारी ग़लतियाँ माफ़ हो जाएँगी—सिवाय क़र्ज़ के। क्योंकि जिब्रईल ने मुझे यही बताया।” (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 22542)

दान: अपने आप को आग से बचाने की लिए

अदी बिन हातिम कहते हैं: मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल॰) को कहते सुना: “आग से बचो, चाहे खजूर का एक टुकड़ा देकर ही क्यों न हो। और अगर यह भी न हो, तो एक भली बात कहकर।” (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 6563)

ईमान वाला दूसरे ईमान वाले के लिए दिरहम-दीनार से ज़्यादा क़ीमती है

अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि॰) कहते हैं: “हमने एक ज़माना ऐसा देखा जब कोई भी अपने मुसलमान भाई से ज़्यादा ख़ुद को दिरहम-दीनार का हक़दार नहीं मानता था। और अब ऐसा वक़्त है कि दिरहम-दीनार हमें अपने भाई से ज़्यादा प्यारे लगने लगे हैं।” (*अल-मोजम अल-कबीर*, हदीस संख्या 13583)

ज़्यादा होने के बावजूद भी सँभलकर खर्च करना

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि॰) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल॰) हज़रत सअद (रज़ि॰) के पास से गुज़रे। वह बड़े बर्तन में पानी से बेपरवाही से वुज़ू कर रहे थे। आपने कहा—“ऐ सअद! यह कैसी फ़ुज़ूलखर्ची है?” सअद ने

पूछा—“क्या वुज़ू में भी फ़ुज़ूलखर्ची होती है?” आपने कहा—“हाँ, चाहे तुम बहती नदी के किनारे क्यों न हो।” (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 7065)

किसी का हक़ हो, तो उसे तुरंत पूरा करें

अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया—“मज़दूर को उसकी मज़दूरी पसीना सूखने से पहले ही दे दो।” (*सुनन इब्ने माजह*, हदीस संख्या 2443)

अच्छी नसीहत की कीमत माल-दौलत से भी बढ़कर होती है

अबू उमैर सूरी कहते हैं—“तुम्हारा भाई तुम्हें हिकमत (दूरदर्शिता) की एक बात दे, यह इस से बेहतर है कि वह तुम्हें माल दे। क्योंकि माल तुम्हें घमंडी बना देता है और हिकमत (दूरदर्शिता) की बात तुम्हें सही राह दिखाती है।” (*जामे बयानुल-इल्म*, खण्ड 1, पृष्ठ 236)

किसी का काम देखकर उसे छोटा समझना बिल्कुल ग़लत है

बद्र की लड़ाई में विरोधियों की फ़ौज का सरदार अबू जहल था। अंसार के दो नौजवान –मुअव्विज़ बिन अफ़रा और मुआज़ बिन अफ़रा—ने तय किया कि वह अबू जहल को मारेंगे। दोनों भाई दुश्मन की पंक्तियों में घुस गए और उन्होंने अपनी जान पर खेलकर उसे मार डाला। अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) कहते हैं कि

जब अबू जहल मरने लगा और उसे पता चला कि उसे मारने वाले मदीना के लोग हैं, तो उसने कहा—“काश! मुझे किसी किसान के बजाय कोई और मारता।” (*शरह नववी अला मुस्लिम*, खण्ड 12, पृष्ठ 160)

मदीना के लोग ज़्यादातर खेती करते थे, और अबू जहल किसानों को नीचा समझता था।

दौलत और सत्ता से नफ़रत और दुश्मनी पैदा होती है

मिसवर बिन मख़रमा बताते हैं कि जब क़ादिसिया की जंग से मिला माल उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) के पास आया, तो वे उसे देखकर रो पड़े। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ (रज़ि०) ने पूछा, “ऐ अमीरुल मोमिनीन, आप क्यों रो रहे हैं? अल्लाह ने आपको जीत दी, दुश्मनों पर विजय दिलाई और उनका माल आपके हाथ में दे दिया।” उमर (रज़ि०) ने कहा, “मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सुना है कि जब किसी क़ौम को बहुत ज़्यादा दुनिया मिल जाती है, तो उनके बीच क़ियामत तक आपसी नफ़रत और दुश्मनी पैदा हो जाती है। मुझे इसी बात का डर है।” (*मज्मउज़-ज़वाइद*, हदीस संख्या 17741)

असली परीक्षा तो तब होती है जब इंसान आराम और दौलत में हो

साद बिन अबीवक़्क़ास (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा—“मैं तुम्हारे बारे में गरीबी की परीक्षा से कम, और सुख-सुविधा तथा संपन्नता की परीक्षा से ज़्यादा डरता हूँ।

गरीबी की परीक्षा में तुमने सब्र किया था, लेकिन दुनिया बहुत मीठी, बहुत

मनमोहक और बहुत लुभाने वाली है।" (*मुस्नद अल-बज़्ज़ार*, हदीस 1168)

तबरानी ने औफ़ बिन मालिक से ये बात नक़ल कि है:

> पैग़म्बर (सल्ल०) ने फ़रमाया: "दुनिया तुम पर यूँ बरसेगी जैसे पानी बरसता है। मेरे बाद अगर तुम्हारे दिल बिगड़ेंगे, तो वो सिर्फ़ दुनिया के लालच की वजह से होगा।" (*हयातुस सहबा*, खण्ड 3, पृष्ठ 534)

देने से माल कम नहीं होता

अबू हुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा—"सदक़ा देने से माल कम नहीं होता। जब कोई माफ़ करता है तो अल्लाह उसकी इज़्ज़त बढ़ा देता है। और जो अल्लाह की खातिर झुकता है, अल्लाह उसे ऊँचा कर देता है।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 2588)

देने वाले को और दिया जाता है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा—"हर सुबह दो फ़रिश्ते उतरते हैं। उनमें से एक कहता है—ऐ अल्लाह! खर्च करने वाले को और दे। और दूसरा कहता है—ऐ अल्लाह! कंजूस के माल को नष्ट कर दे।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 1010)

इस्लाम में दूरदर्शिता

जो छोटी बुराई पर सब्र नहीं करता, उसे बड़ी बुराई पर राज़ी होना पड़ता है

अबू जाफ़र ख़तमी बताते हैं कि उनके दादा उमैर बिन हबीब (रज़ि०) ने अपने बेटे को समझाया: "मूर्ख लोगों की संगत से बचो और उनकी तरफ़ से होने वाली तकलीफ़ें बर्दाश्त कर लो। क्योंकि जो इंसान मूर्ख की छोटी गलती नहीं सहता, उसे बाद में उसकी बड़ी गलती सहनी पड़ती है।" (*अल-मोजम अल-अवसत*, हदीस संख्या 2258)

झगड़ा खत्म करने के लिए हर हाल में सुलह कर ली

सुलह-ए-हुदैबिया का समझौता लिखा जा रहा था। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अली (रज़ि०) से कहा: "लिखो—बिस्मिल्लाहिर-रहमानिर-रहीम।" कुरैश की तरफ़ से सुहैल बिन अम्र मौजूद थे। उन्होंने कहा: "हम नहीं जानते 'रहमान' क्या है। आप हमारे तरीक़े से लिखो—बिस्मिक अल्लाहुम्मा।" मुसलमानों ने कहा: "ऐसा नहीं हो सकता, हम तो सिर्फ़ बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ही लिखेंगे।" रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा: "लिखो—बिस्मिक अल्लाहुम्मा।" फिर आपने कहा: "लिखो—यह समझौता है जो मुहम्मद रसूलुल्लाह ने किया।" सुहैल ने कहा: "अगर हम आपको मानते कि आप अल्लाह के रसूल हैं तो न आपको रोकते और न ही युद्ध करते। आप लिखो—मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह।" मुसलमानों को यह बहुत बुरा लगा, लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा: "लिखो—मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह।" अली (रज़ि०) इसे मिटाने को तैयार नहीं हुए, तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने खुद 'रसूलुल्लाह' शब्द मिटा दिया।

फिर सुहैल ने कहा: "इस साल आप लौट जाएँ, अगले साल आकर तवाफ करें।" यह शर्त भी मान ली गई। इसके बाद उन्होंने शर्त रखी कि अगर कुरैश का कोई

आदमी मुसलमान होकर मदीना जाए तो मुसलमान उसे लौटा देंगे, लेकिन अगर मदीना का कोई मुसलमान उनके हाथ लग गया तो वे उसे वापस नहीं करेंगे। मुसलमान नाराज़ हुए, लेकिन रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने यह भी मान लिया। इस तरह दस साल का जंग न करने का समझौता हो गया। *(सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 1189)

नाज़ुक वक़्त पर समझदारी भरा जवाब

हिजरत के सफ़र में रसूलुल्लाह (सल्ल०) और अबू बक्र (रज़ि०) तीन रात ग़ार-ए-सौर में रहे। फिर वहाँ से निकले और जाना-पहचाना रास्ता छोड़कर समुद्र किनारे का रास्ता चुना। दोनों ऊँटों पर थे। अबू बक्र कभी आगे चलते, कभी पीछे। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने पूछा: "अबू बक्र, तुम कभी आगे और कभी पीछे क्यों चलते हो?" उन्होंने कहा: "जब पीछा करने वालों का ख़याल आता है तो पीछे चलने लगता हूँ, और जब घात लगाकर बैठे दुश्मनों का सोचता हूँ तो आगे बढ़ जाता हूँ।" रास्ते में कोई जानने वाला पूछता कि यह आपके साथ कौन हैं? तो अबू बक्र छोटा-सा जवाब देते: "यह मुझे रास्ता दिखाने वाले हैं।" (*अल-मुसन्नफ़ इब्न अबी शैबा*, हदीस संख्या 32410)

दुनिया देकर आख़िरत का सफ़र

सुहैब रूमी (रज़ि०) मक्का से हिजरत करने वालों में से थे। वे लोहार का काम करते थे। जब निकले तो क़ुरैश के कुछ लोगों ने पीछा करके उन्हें पकड़ लिया और उनसे कहा: "सुहैब! तुम यहाँ खाली हाथ आए थे और अब अपना माल भी लेकर जाना चाहते हो? यह नहीं होगा।" सुहैब ने कहा: "अगर मैं अपना माल तुम्हें दे दूँ

तो क्या मुझे छोड़ दोगे?" उन्होंने कहा: "हाँ।" सुहैब ने अपना सोना उन्हें दे दिया तो वह उन्हें छोड़कर चले गए। सुहैब मदीना पहुँचे।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह मालूम हुआ तो आपने कहा: "सुहैब ने फ़ायदे का सौदा किया, सहैब ने फ़ायदे का सौदा किया।" (*सहीह इब्न हिब्बान*, हदीस संख्या 7082)

इस्लाम में ज्ञान का महत्व

बद्र की लड़ाई में सत्तर क़ैदी पकड़े गए। जो लोग फ़िदया (ransom) नहीं दे सकते थे, उनसे कहा गया कि वे अंसार में से दस-दस लोगों को लिखना-पढ़ना सिखाएँ। ज़ैद बिन साबित ने भी इसी तरह लिखना पढ़ना सीखा। बाद में वे नबी (सल्ल०) के क़ुरआन लिखने वाले (कातिबे वह्य) बने। उम्र बढ़ने पर उन्होंने और भी भाषाएँ सीख लीं। वे छह भाषाएँ जानते थे। (*अत्तबक़ातुल कुबरा*, खण्ड 2, पृष्ठ 16)

ग़ुस्से का इलाज—चुप हो जाना है

अब्दुल्लाह बिन अब्बास कहते हैं कि नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया: "तुममें से किसी को ग़ुस्सा आए तो वह चुप हो जाए।" आपने यह बात तीन बार दोहराई। (*जामिउल उलूम वल-हिकम*, खण्ड 1, पृष्ठ 366)

मामलों में दूरदर्शिता अपनाना

मक्का की विजय के वक़्त अंसार की टुकड़ी के सरदार सअद बिन उबादा थे। जब वे मक्का में दाख़िल हुए तो ऊँची आवाज़ में बोले: “आज खूनी जंग का दिन है, आज पाबंदी तोड़ी जाएगी, आज अल्लाह ने क़ुरैश को अपमानित कर दिया।” अबू सुफ़यान ने यह बात नबी (सल्ल०) से कह दी। नबी (सल्ल०) ने फ़रमाया: “नहीं, आज रहमत का दिन है। आज अल्लाह क़ुरैश को इज़्ज़त देगा।” इसके बाद आपने सअद से झंडा लेकर उनके बेटे क़ैस को दे दिया। इब्ने क़य्यिम लिखते हैं कि सअद को बुरा नहीं लगा, क्योंकि झंडा फिर भी उनके बेटे के हाथ में रहा। (*फ़त्हुल बारी*, खण्ड 12, पृष्ठ 95)

दीन में सख़्ती नहीं

हज़रत आयशा कहती हैं: जब भी नबी (सल्ल०) के सामने दो कामों में से चुनने की बात होती तो आप हमेशा आसान को चुनते, लेकिन जब की वह गुनाह न हो। और अगर उसमें गुनाह होता तो आप सबसे ज़्यादा उससे दूर रहने वाले थे। (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 3560)

विरोधी से वही माँगो जो उसके लिए स्वीकार्य हो

नबी (सल्ल०) ने नज्रान के लोगों को ख़त भेजा। उन्होंने तीन लोगों को मदीना भेजा: शुरह्बील बिन वदाआ, अब्दुल्लाह बिन शुरह्बील और जब्बार बिन फैज़। उन्होंने हालात देखे। शुरह्बील ने कहा: “मामला कड़ा है। अगर यह शख़्स सच में नबी है और हम इनकार कर दें तो हम अरब में पहले लोग होंगे जो उसकी

नज़र में गिरेंगे। वह और उसके साथी हमें कभी माफ़ न करेंगे।" दोनों ने पूछा: "तो तुम्हारी राय क्या है?" शुरह्बील ने कहा: "मेरी राय है कि समझौते की बात करूँ, क्योंकि यह शख़्स कभी हद से ज़्यादा नहीं माँगता।" (*अल-बिदायह वन्निहायह*, खण्ड 5, पृष्ठ 54)

लोगों के साथ नरमी और सहनशीलता रखो

हज़रत अबू हुरैरा बताते हैं: एक देहाती मदीना आया और मस्जिद-ए-नबवी में पेशाब करने लगा। लोग उसे मारने दौड़े। नबी (सल्ल०) ने रोका और कहा: "उसे छोड़ दो। और जहाँ उसने पेशाब किया है वहाँ पानी डाल दो।" फिर आपने फ़रमाया: "तुम सख़्ती के लिए नहीं भेजे गए हो, बल्कि आसानी पैदा करने के लिए भेजे गए हो।" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 380)

मामलों में नियम और अनुशासन

हज़रत अबू हुरैरा कहते हैं: वे अबू मूसा अशअरी के यहाँ से आठ लाख दिरहम लेकर मदीना आए। सुबह की नमाज़ के बाद हज़रत उमर ने कहा: "रात मेरे पास इतना माल आया है जितना पहले कभी नहीं आया। मेरी राय है कि इसे नाप-नाप कर सबमें बाँट दूँ। तुम राय दो।" हज़रत उस्मान ने कहा: "सबको ज़रूरत होगी। अगर हिसाब न रखा जाए तो गड़बड़ होगी।" हज़रत वलीद बिन मुग़ीरा बिन हिशाम ने कहा: "मैं शाम गया था, वहाँ बादशाहों को देखा कि उन्होंने रजिस्टर और कारिंदे रखे हैं। आप भी ऐसा करें।" हज़रत उमर ने यह राय मान ली और तीन लोगों अक़ील बिन अबी तालिब, मखरमा बिन नौफ़ल, और जुबैर बिन मुतइम

को रजिस्टर तैयार करने का काम सौंप दिया। (*अल-जामिउल कबीर*, हदीस संख्या 1781)

चुप रहना भी सीखो जैसे बोलना सीखते हो

अबू-दर्दा (रज़ि०) ने लोगों को नसीहत करते हुए कहा–

> "जैसे बोलना सीखते हो, वैसे ही चुप रहना भी सीखो। चुप रहना बहुत बड़ी समझदारी है। कोशिश करो कि बोलने से ज़्यादा सुनो। किसी ऐसी बात पर मत बोलो जिसका तुमसे कोई मतलब ही न हो। बिना वजह मत हंसो और बिना ज़रूरत कहीं मत जाओ।" (*कंज़ुल उम्माल*, हदीस संख्या 8703)

नसीहत का रास्ता मुश्किलों से भरा होता है

हज़रत उमैर बिन हबीब (रज़ि०) ने अपने बेटे से कहा—"अगर कोई अच्छाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना चाहता है तो उसे लोगों की तरफ़ से तकलीफ़ें झेलने के लिए तैयार रहना चाहिए। उसे अल्लाह के इनाम पर भरोसा रखना चाहिए। जिसने अल्लाह के इनाम पर भरोसा किया, लोगों की तकलीफ़ें उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकतीं।" (*अल-मोजम अल-कबीर*, असर संख्या 108)

सत्ता बदलने के नाम पर क़त्ल सही नहीं

हज़रत हसन बिन अली (रज़ि०) और हज़रत मुआविया (रज़ि०) की फ़ौजें आमने-सामने थीं। जब सुलह की ख़बर आई तो फ़ौजियों का ग़ुस्सा ठंडा पड़ गया। कूफ़ा में जब हसन बिन अली आए तो हम में से एक शख़्स ने कहा—"सलाम हो तुम पर, ऐ मुसलमानों को अपमानित करने वाले।" उन्होंने जवाब दिया—"ऐ अबू आमिर! ऐसा मत कहो। मैंने मुसलमानों को नीचा नहीं किया, बल्कि मुझे यह अच्छा नहीं लगा कि मैं सत्ता के लिए लोगों की जान लूँ।" (*अल-मुस्तदरक अल-हाकिम*, असर संख्या 4812)

अपनी इच्छाओं से लड़ना असली जिहाद है

हज़रत जाबिर (रज़ि०) कहते हैं—एक ग़ज़वा से हम लौटे तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा—"तुम छोटे जिहाद से बड़े जिहाद की तरफ़ आए हो।" लोगों ने पूछा—"बड़ा जिहाद क्या है?" उन्होंने फ़रमाया—"इंसान का अपनी खुद की इच्छाओं के ख़िलाफ़ संघर्ष करना।" (*जामिउल उलूम*, हदीस संख्या 489)

हर व्यक्ति के साथ उसका शैतान होता है

हज़रत सुलैम बिन हनज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं कि हम हज़रत उबैय बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु के पास गए ताकि उनसे कुछ सुनें। फिर हज़रत उबैय बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु उठे और हम भी उठे और उनके पीछे चल पड़े। रास्ते में हज़रत उमर फ़ारूक़ रज़ियल्लाहु अन्हु से मुलाक़ात हुई। उन्होंने फ़रमाया, "क्या

तुम्हें मालूम नहीं कि आगे चलने वाले के लिए यह एक फ़ितना (परीक्षा) है और पीछे चलने वाले के लिए यह ज़िल्लत (अपमान) है?" (*कंज़ुल उम्माल*, असर नंबर 41920)

अल्लाह को वही अमल पसंद है जो लगातार किया जाए

हज़रत आयशा (रज़ि अल्लाहु अन्हा) बताती हैं—रसूलुल्लाह (सल्ल०) दिन में एक चटाई पर बैठते और रात को उसी पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ते।

लोग आपके पास आने लगे और आपके साथ नमाज़ पढ़ने लगे। जब लोगों की संख्या बढ़ गई तो आपने कहा—"ऐ लोगो! उतना ही अमल करो जितना तुम कर सको। अल्लाह थकता नहीं, लेकिन इंसान थक जाता है। अल्लाह को वही अमल सबसे प्यारा है जो लगातार किया जाए, चाहे वह छोटा ही क्यों न हो।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 782)

जो दुनिया में गुमनाम रहता है, आख़िरत में वही सबसे ज़्यादा नज़र आएगा

हज़रत अली बिन अबी तालिब (रज़ि०) कहते हैं–ख़ुद को इस तरह छुपाओ कि तुम्हारा ज़िक्र ही न हो और चुप्पी साध लो, तो तुम सुरक्षित रहोगे। (*कंज़ुल उम्माल*, हदीस संख्या 8699)

आदमी के माल में दूसरों का भी हिस्सा है

हज़रत जादह कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक आदमी को देखा जिसका पेट बहुत बड़ा था। आपने अपनी उंगली उसके पेट पर रखकर कहा—अगर यह खाना किसी और के पेट में गया होता तो तुम्हारे लिए बेहतर होता (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 18984)

बाप की ज़िम्मेदारियाँ

अबू नुऐम ने अबू राफ़े (रज़ि०) से बयान किया, जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ख़ादिम थे। वे कहते हैं, रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने मुझसे पूछा—"ऐ अबू राफ़े, जब तुम गरीब हो जाओगे तो तुम्हारा क्या हाल होगा?" मैंने कहा—तो क्यों न मैं अभी से तैयारी कर लूँ। आपने कहा—हाँ, ज़रूर करो। फिर पूछा—तुम्हारे पास कितना माल है? मैंने कहा—चालीस हज़ार और यह सब अल्लाह के लिए है। आपने कहा—नहीं, इसका एक हिस्सा अल्लाह की राह में दो और एक हिस्सा रोक कर रखो, जिससे अपनी औलाद की देखभाल करो। मैंने पूछा—ऐ अल्लाह के रसूल, क्या बच्चों का भी हमारे ऊपर हक़ है जैसे हमारा उन पर है? आपने कहा—हाँ। बाप का हक़ बेटे पर यह है कि वह उसे अल्लाह की किताब (क़ुरआन) की तालीम दे, तीर चलाना और तैरना सिखाए और उसे अच्छे आचरण का वारिस बनाए। (*हिल्यतुल औलिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 184)

बहुत-सी शिकायतें ग़लतफ़हमी से पैदा होती हैं

मुआविया के ज़माने में एक आदमी सहल बिन सअद (रज़ि०) के पास आया और बोला—अमीर-ए-मदीना (मरवान बिन हकम) अली (रज़ि०) को बुरा कहता है।

सहल ने पूछा—वह क्या कहता है? उसने कहा—वह उन्हें "अबू तुराब" कहता है। यह सुनकर सहल हँस पड़े और बोले—अल्लाह की क़सम! यह नाम तो खुद नबी (सल्ल०) ने दिया था और उनके लिए इससे प्यारा नाम कोई न था। (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 3703)

मरे हुए लोगों को बुरा मत कहो

इक्रिमा बिन अबू जहल की बीवी उम्मे हकीम (रज़ि०) फत्ह मक्का के दिन मुसलमान हुईं। उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कहा—मेरे पति इक्रिमा यमन भाग गए हैं, उन्हें डर है कि आप उन्हें क़त्ल कर देंगे। मैं चाहती हूँ कि आप उन्हें अमान (सुरक्षा) दे दें।

आपने कहा—उन्हें हमारी तरफ़ से अमान है। उम्मे हकीम उन्हें खोजने निकलीं और समुद्र किनारे पहुँचीं, जहाँ इक्रिमा नाव में सवार होकर जाने वाले थे। उन्होंने कहा—मैं उस शख़्स की तरफ से आई हूँ जो सबसे अच्छा है, तुम अपनी जान मत गँवाओ। बड़ी मुश्किल से उन्होंने उन्हें वापसी के लिए तैयार किया और कहा—मैंने तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) से अमान ले ली है। जब वे लौटे तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सहाबा से कहा–

> इक्रिमा बिन अबू जहल ईमान लाकर और हिजरत करके आ रहे हैं। उनके बाप को बुरा मत कहना, क्योंकि मरे हुए को बुरा कहने से ज़िंदा आदमी को तकलीफ़ पहुँचती है और वह मृतक तक नहीं जाती। (*अल-मुस्तद्रक अल-हाकिम*, हदीस संख्या 5055)

संदेह पर राय क़ायम करना शैतान की राय है

उम्मुल मोमिनीन सफ़िया (रज़ि०) कहती हैं—रसूलुल्लाह (सल्ल०) एतकाफ़ में थे। मैं रात को मिलने गई और बातें करके लौटने लगी। आप भी मुझे विदा करने खड़े हुए। इतने में अंसार के दो आदमी गुज़रे। जब उन्होंने रसूलुल्लाह को इस हाल में देखा, तो उन्होंने जल्दी से वहाँ से निकल जाने का सोचा। आपने उन्हें बुलाकर कहा—“जल्दी मत करो, यह मेरी बीवी सफ़िया है।” दोनों ने कहा—“सुब्हानल्लाह, ऐ रसूलुल्लाह।” आपने कहा—शैतान इंसान की रगों में खून की तरह दौड़ता है। मुझे डर हुआ कि कहीं शैतान तुम्हारे दिलों में मेरी तरफ़ से कोई गलत ख्याल न डाल दे। (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 3281)

सदक़ा (दान) हर इंसान पर ज़रूरी है

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) बताते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा: “इंसान के हर जोड़ पर रोज़ एक सदक़ा होता है। हर दिन जब सूरज निकलता है, तो दो लोगों के बीच न्याय करना सदक़ा है। किसी को सवारी पर चढ़ने में या सामान रखने-उतारने में मदद करना सदक़ा है। मीठी बात कहना सदक़ा है। नमाज़ के लिए उठाया गया हर क़दम सदक़ा है। और रास्ते से कोई नुक़सान देने वाली चीज़ हटा देना भी सदक़ा है।” (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 2989)

अल्लाह को वही इंसान सबसे प्यारा है जो अच्छे बर्ताव वाला हो

उसामा बिन शरीक (रज़ि०) कहते हैं: “हम रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास बैठे थे, ऐसे ख़ामोश जैसे सिर पर चिड़ियाँ बैठी हों। हम में से कोई कुछ बोल नहीं रहा था।

इतने में कुछ लोग आए और पूछने लगे, 'अल्लाह को उसके बंदों में सबसे ज़्यादा कौन पसंद है?' आपने फ़रमाया: 'जो इंसान सबसे अच्छे अख़लाक़ वाला हो।'" (*सहीह इब्न हिब्बान*, हदीस संख्या 4406)

लोगों के हक़ (अधिकार) पूरे करना

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने अपनी वफ़ात से कुछ दिन पहले लंबा ख़ुत्बा दिया। आख़िर में आपने कहा: "मैं अल्लाह के सामने अपनी ज़िंदगी का सहीफ़ा (बही खाता) साफ़-सुथरा लेकर जाना चाहता हूँ। अगर किसी का कोई क़र्ज़ मुझ पर बाक़ी रह गया हो, या किसी को मुझसे जान-बूझकर या अनजाने में तकलीफ़ पहुँची हो, तो वह मुझसे बदला ले ले या मुझे माफ़ कर दे।" आपने रुककर इंतज़ार किया, मगर कोई आगे नहीं आया। फिर ज़ुहर की नमाज़ का वक़्त हो गया। आपने जमात के साथ नमाज़ पढ़ी। इसके बाद फिर मिम्बर (मस्जिद का उपदेश स्थान) पर आए और वही बात दोहराई। तब एक आदमी खड़ा हुआ और बोला: "ऐ अल्लाह के रसूल! आप पर मेरा तीन दिरहम कर्ज़ है।" आपने फ़ौरन हुक्म दिया और उसी वक़्त मस्जिद में तीन दिरहम अदा कर दिए गए। (*अल-मोजम अल-अवसत*, हदीस संख्या 2629)

हर एक के साथ इंसाफ़ करना, चाहे कमज़ोर हो या ताक़तवर

मुआविया बिन अबू सुफ़यान ने ज़िरार सुदाई से कहा: "मुझ से अली की सिफ़त बयान करो।" उन्होंने कहा: "वह हम सबके बीच आम इंसान की तरह रहते थे। कोई ताक़तवर अपनी ग़लत बात पर उनसे फ़ायदा नहीं उठा सकता था और

कोई कमज़ोर उनके इंसाफ़ से मायूस नहीं हो सकता था।” (*तारीख़े दमिश्क़*, खंड 24, पृष्ठ 401)

अल्लाह का डर सबसे बड़ी समझदारी है

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: “हिकमत (सूझ-बूझ) की जड़ अल्लाह का डर है।” अबुल आलिया ने क़ुरआन की आयत “जिसे चाहे अल्लाह हिकमत देता है” (2:269) की तफ़सीर में कहा: “हिकमत का मतलब अल्लाह का डर है, क्योंकि अल्लाह का डर ही हर हिकमत की असल है।” (*तफ़सीर इब्न कसीर*, खंड 1, पृष्ठ 396)

अख़्लाक़

(अच्छा स्वभाव)

अच्छा आचरण—ये है कि गुस्सा न करे

अबुल अला इब्न- शिख्खीर बताते हैं: एक आदमी अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के पास आया और बोला—"अल्लाह के रसूल! सबसे अच्छा काम कौन सा है?" आपने कहा—"अच्छा आचरण।" वह फिर दाएँ से आया और यही पूछा। आपने फिर कहा—"अच्छा आचरण।" वह बाएँ से आया और पूछा। आपने वही जवाब दिया। फिर पीछे से आया और वही सवाल किया। तब आप उसकी तरफ़ मुड़े और बोले- "तुम्हें क्या हो गया है कि "अच्छे आचरण" को नहीं समझते? वह ये है कि तुम ग़ुस्सा न करो, अगर तुम ये कर सको।" ।" (*ताज़ीमु क़द्रिस-सलात*, मुहम्मद बिन नस्र अल-मर्वज़ी, हदीस संख्या 878)

जन्नत में ले जाने वाले नेक अमल

तबरानी ने लिखा है कि अनस बिन मालिक रज़ि. बीमार हो गए। कुछ लोग मिलने आए। उन्होंने अपनी नौकरानी से कहा—"हमारे साथियों के लिए कुछ लाओ, चाहे रोटी का टुकड़ा ही क्यों न हो। मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल०) से सुना है कि अच्छे आचरण जन्नत के कर्मों में से हैं।" (*अल-मोजम अल-अवसत*, हदीस संख्या 6501)

सब पर रहम का बर्ताव

सुहैल बिन अम्र कहते हैं: अल्लाह के रसूल (सल्ल०) एक जगह से गुज़रे। आपने एक ऊँट देखा जिसका पेट (भूख की वजह से) उसकी पीठ से मिल गया था। आपने कहा—"इन बेज़बान जानवरों के बारे में अल्लाह से डरो। इन्हें ठीक तरह से सवारी में लो और ठीक तरह से खिलाओ।" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 2548)

इस्लाम के संदेशवाहक का आचरण कैसा होता है

अम्र बिन मुर्रा जुहनी रज़ि. ने सुना कि मक्का में एक नबी आए हैं। वे अपनी सवारी पर मक्का पहुँचे और रसूल (सल्ल०) से मिले। आपने कहा—"ऐ अम्र! मैं अल्लाह का भेजा हुआ पैग़म्बर हूँ, सब इंसानों के लिए। उन्हें इस्लाम की ओर बुलाता हूँ। उन्हें सिखाता हूँ—खून मत बहाओ, रिश्तेदारों के हक़ अदा करो, सिर्फ़ एक अल्लाह की इबादत करो, मूर्तियाँ छोड़ो, काबा का हज करो, रमज़ान में रोज़े रखो। जिसने मान लिया उसके लिए जन्नत है, जिसने नहीं माना उसके लिए आग का अज़ाब है। ऐ अम्र! ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें जहन्नम से बचाएगा।" अम्र ने कहा—"मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और आप उसके रसूल हैं। मैं हर उस हलाल और हराम पर ईमान लाता हूँ जो आप लेकर आए हैं।" फिर बोले—"ऐ रसूल! मुझे मेरी क़ौम की तरफ़ भेज दीजिए। शायद अल्लाह मेरी वजह से उन्हें हिदायत दे जिस तरह आपकी वजह से मुझे दी।" आपने उन्हें नसीहत करते हुए कहा—"हमेशा सीधी बात कहना, नरमी अपनाना, सख़्त मिज़ाज मत बनना, घमण्ड और जलन मत करना।" (*अल-बिदाया वन-निहाया*, खंड 2, पृष्ठ 351)

चार बड़ी नसीहतें

अबू ज़र रज़ि. कहते हैं: अल्लाह के रसूल (सल्ल०) छह दिन तक रोज़ मुझसे कहते रहे—" ऐ अबू ज़र! जो कहा जाने वाला है उसे अच्छी तरह समझ लो।" सातवें दिन आपने कहा—"मैं तुम्हें नसीहत करता हूँ—छिपे और खुले हर हाल में अल्लाह से डरना। अगर कोई बुराई कर बैठो तो उसके बाद भलाई करना। किसी

से कुछ मत मांगना, चाहे तुम्हारा कोड़ा गिर जाए। और किसी की अमानत पर कब्ज़ा मत करना।" (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 21573)

धोखा देने वाला मुसलमानों में से नहीं

अबू हुरैरा रज़ि. कहते हैं: रसूल (सल्ल०) बाज़ार से गुज़रे। देखा कि एक आदमी ने अनाज का ढेर लगाया है। आपने उसमें हाथ डाला तो उँगलियाँ गीली हो गईं। आपने पूछा—"यह नमी कैसी है?" उसने कहा—"बारिश में भीग गया।" आपने कहा—"इसे ऊपर क्यों नहीं रखा ताकि लोग देख लेते? याद रखो, जो धोखा देता है वह हममें से नहीं।" (*हिल्यतुल औलिया व तबक़ातुल अस्फिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 328)

सहाबी का सबसे प्रिय काम

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. कहते हैं: "अगर मैं किसी परिवार का एक महीना या एक हफ़्ता ख़याल रखूँ, तो यह मुझे बार-बार हज करने से ज़्यादा प्यारा है। और अगर मैं एक तबक़ दानिक़ (कुछ पैसे) अपने भाई को दूँ, तो यह मुझे इससे ज़्यादा पसंद है कि एक दीनार अल्लाह की राह में ख़र्च करूँ।" (*हिल्यतुल औलिया व तबक़ातुल अस्फिया*, खण्ड 1, पृष्ठ 328)

बेकार की बात न करना, किसी का बुरा न चाहना

ज़ैद बिन असलम कहते हैं: अबू दुजाना रज़ि. बीमारी में थे। लोग मिलने आए। उनका चेहरा चमक रहा था। पूछा गया—"क्या बात है, आपका चेहरा इतना दमक क्यों रहा है?" उन्होंने कहा—"मेरे दो काम सबसे भरोसेमंद हैं: एक, मैं बेकार बातें नहीं करता था। दूसरा, मेरा दिल हमेशा इंसानों के लिए साफ़ रहता है।" (*सियरु आलामिन्नुबला*, खण्ड 3, पृष्ठ 152)

इस्लाम में संवेदनशीलता

अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि. कहते हैं: एक आदमी ने बकरी को ज़बह़ करने के लिए लिटा रखा था और चाकू तेज़ कर रहा था। रसूल (सल्ल०) ने देखा और कहा—"क्या तुम इसे दो बार मारना चाहते हो? तुमने लिटाने से पहले ही चाकू क्यों न तेज़ किया?" (*अल-मुस्तद्रक अल-हाकिम*, हदीस संख्या 7563)

मुलाज़िम की ग़लतियों को माफ़ करना

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि. कहते हैं: एक देहाती रसूल (सल्ल०) के पास आया और पूछा—"ऐ अल्लाह के रसूल! अपने मुलाज़िम को मैं रोज़ कितनी बार माफ़ करूँ?" आपने कहा—"हर दिन सत्तर बार माफ़ करो।" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 5164)

किसी इंसान के साथ क्रूर व्यव्हार करना सही नहीं

ग़ज़वा-ए-बद्र के बाद जो लोग पकड़े गए, उनमें एक था सुहैल बिन अम्र। वह क़ुरैश का मशहूर भाषण देने वाला था और अक्सर रसूलुल्लाह (सल्ल०) के खिलाफ़ सख़्त भाषण देता था। हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा—"मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं इसके आगे के दो दाँत तोड़ दूँ ताकि यह आगे से इस्लाम के खिलाफ़ भाषण न दे सके।"

आप (सल्ल०) ने कहा—"मैं इसका चेहरा ख़राब नहीं करूँगा। अगर मैंने ऐसा किया तो अल्लाह मेरा चेहरा भी खराब कर देगा, भले ही मैं उसका रसूल हूँ।" (*अल-बिदाया वन्निहाया*, खण्ड 2, पृष्ठ 481)

बुराई करने वाले के लिए भी अच्छी दुआ करो

अबू हुरैरा (रज़ि०) बताते हैं: रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास एक शराबी लाया गया। रसूलुल्लाह के हुक्म से उसे कोड़े मारे गए। जब वह चला गया तो कुछ लोगों ने कहा—"अल्लाह इसे रुसवा (अपमानित) करे, अल्लाह इस पर लानत करे।" रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया— "ऐसा मत कहो। अपने भाई के खिलाफ़ शैतान के साथी मत बनो। बल्कि यूँ कहो—ऐ अल्लाह, इसे माफ़ कर, इसे सही राह दिखा।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 6777)

किसी को श्राप देना बहुत बड़ा पाप है

हज़रत सलमा बिन अक्वा (रज़ि०) बताते हैं: रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ज़माने में जब कोई अपने भाई को श्राप देता, तो हम समझते थे कि वह बड़े गुनाहों के

दरवाज़ों में से किसी एक दरवाज़े में घुस गया है। (*अल-मोजम अल-कबीर*, अल-तबरानी, असर संख्या 6674)

किसी को तुच्छ समझना इंसान को भटकाव की ओर ले जाता है

हज़रत उरवा (रज़ि०) कहते हैं: रसूलुल्लाह (सल्ल०) हज में थे। आपने अरफ़ात से लौटने में उसामा बिन ज़ैद (रज़ि०) का इंतज़ार किया, इसलिए देर हो गई। इतने में एक लड़का आया जो काले रंग और चपटी नाक वाला था। यमन के लोग जो आपके साथ थे, बोले—

"हम तो इसी की वजह से रुके हुए थे।"

उरवा (रज़ि०) कहते हैं—यमन के लोग इसी बात से भटक गए। इब्न साद बताते हैं—मैंने यज़ीद बिन हारून से पूछा कि उरवा की इस बात का क्या मतलब था। उन्होंने कहा—"हज़रत अबू बक्र (रज़ि०) के ज़माने में यमन के लोग भटक गए थे।" (*तबक़ात इब्ने साद*, असर संख्या 4853)

औलाद इंसान की सबसे बड़ी कमज़ोरी है

हज़रत असवद बिन ख़लफ़ (रज़ि०) कहते है: रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हज़रत हसन बिन अली (रज़ि०) को गोद में लिया और चूमा। फिर सहाबा से कहा—"औलाद इंसान को कंजूस बना देती है, ग़लत कामों में डालती है और उसे डरपोक बना देती है।" (*अल-मुस्तदरक अल-हाकिम*, हदीस संख्या 5351)

दूसरी रिवायत में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) से ये अल्फ़ाज़ भी नक़्ल हैं—

> “अल्लाह शैतान को हलाक करे, औलाद तो इंसान के लिए फ़ितना (आज़माइश) है।” (*अल-मोजम अल-कबीर*, *अल-तबरानी*, हदीस संख्या 2626)

घर के मामलों में घर के बड़े का रोल

हज़रत हसन बिन अली (रज़ि०) कहते हैं: हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) ने हज़रत अली (रज़ि०) की बेटी उम्मे कुलसूम से शादी का प्रस्ताव दिया, जो उनसे उम्र में काफी छोटी थीं। हज़रत अली (रज़ि०) ने अपने बेटों हसन और हुसैन से कहा—“अपने चाचा के साथ अपनी बहन की शादी का इंतज़ाम करो।” दोनों ने कहा— “वह भी औरतों में से एक है, उसे अपने बारे में खुद फ़ैसला करने का हक़ है।” यह सुनकर हज़रत अली (रज़ि०) नाराज़ हो गए और उठकर जाने लगे। हज़रत हसन (रज़ि०) ने उनका कपड़ा पकड़ लिया और कहा—“अब्बा! मैं आपसे जुदाई बर्दाश्त नहीं कर सकता।” फिर दोनों ने हज़रत उमर (रज़ि०) से अपनी बहन की शादी कर दी। (*अल-मोजम अल-औसत*, *अल-तबरानी*, असर संख्या 2609)

कोई इंसान दूसरे इंसान को छोटा न समझे

हसन बिन अली (रज़ि०) कहते हैं: कुछ मुसलमान अबू मूसा अशअरी (रज़ि०) के पास गए। उस समय वे हज़रत उमर (रज़ि०) की हुकूमत में गवर्नर थे। अबू मूसा अशअरी (रज़ि०) ने अरबों को तो इनाम दिए लेकिन गैर-अरब मुसलमानों

को छोड़ दिया। हज़रत उमर (रज़ि०) ने उन्हें लिखा: "तुमने सबको बराबर क्यों नहीं माना? किसी इंसान के बुरा होने के लिए यही काफी है कि वह अपने किसी मुसलमान भाई को नीचा समझे।" (*अल-जामिउल कबीर*, अस्सुयूती, असर संख्या 2975)

किसी इंसान में डर पैदा करना जायज़ नहीं

सुलेमान बिन सुरद (रज़ि०) कहते हैं, एक देहाती आया और रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ नमाज़ पढ़ी। उसके पास एक सींग थी। कुछ लोगों ने मज़ाक में उसकी सींग छुपा दी। नमाज़ के बाद जब उसे सींग नहीं मिली तो वह परेशान हो गया और बोला: "मेरी सींग कहाँ गई?" रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: "जो अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखता है, वह किसी मुसलमान को कभी परेशान न करे।" (*अल-मोजम अल-कबीर*, *अल-तबरानी*, हदीस संख्या 6487)

सादगी से निकाह करना

अनस (रज़ि०) कहते हैं: अब्दुर्रहमान बिन औफ़ मदीना आए तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने उनकी मुवाख़ात (भाई-बंदी) सअद बिन रबीअ (रज़ि०) से कराई। सअद ने कहा: "भाई, मैं मदीने का सबसे अमीर आदमी हूँ। मेरा आधा माल ले लो। मेरी दो पत्नियाँ हैं, तुम्हें जो पसंद हो, मैं उसे तलाक़ दे दूँ और तुम उससे शादी कर लो।" अब्दुर्रहमान (रज़ि०) ने कहा: "अल्लाह तुम्हारे घर और माल में बरकत दे। बस मुझे बाज़ार का रास्ता बता दो।" उन्होंने कारोबार शुरू किया और खूब मुनाफ़ा कमाया। कुछ दिन बाद जब वे रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास आए तो उनके कपड़ों पर ज़ाफ़रान का रंग था। आपने पूछा: "यह क्या है?" उन्होंने

कहा: "मैंने निकाह कर लिया है।" आपने पूछा: "महर कितना रखा?" उन्होंने कहा: "एक खजूर की गुठली जितना सोना।" रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: "वलीमा करो, चाहे सिर्फ़ एक बकरी से ही क्यों न हो (यानी चाहे सिर्फ़ कुछ लोगों को ही खिला कर ही क्यों न हो)।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 2048)

दूसरों को तकलीफ़ न देना

इब्ने अबी मुलैका बताते हैं: हज़रत उमर (रज़ि०) ने हज के समय एक औरत को देखा, जिसे कोढ़ था और वह काबा का तवाफ़ कर रही थी। उमर (रज़ि०) ने कहा: "ऐ अल्लाह की बंदी, लोगों को तकलीफ़ मत दे। बेहतर है कि अपने घर में रहो।" वह औरत घर बैठ गई। कुछ समय बाद किसी ने उससे कहा: "जिस ख़लीफ़ा ने तुम्हें रोका था, उनकी मौत हो गई है। अब तुम बाहर आ सकती हो।" औरत ने कहा: "मैं ऐसी नहीं हूँ कि ज़िंदगी में उनकी बात मानूँ और मरने के बाद उनकी नाफ़रमानी करूँ।" (*मुवत्ता इमाम मालिक*, असर संख्या 250)

घर में दाख़िल होने के आदाब

सफ़ीना (रज़ि०) कहते हैं: मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास था। हज़रत अली (रज़ि०) आए और अंदर आने की इजाज़त माँगी। उन्होंने दरवाज़ा धीरे से खटखटाया। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कहा: "दरवाज़ा खोल दो।" एक और रिवायत में है: सअद बिन उबादा (रज़ि०) रसूलुल्लाह (सल्ल०) से मिलने आए। उन्होंने इजाज़त माँगी और दरवाज़े के सामने खड़े हो गए। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इशारे से कहा: "किनारे हो जाओ।" फिर थोड़ी देर

बाद बुलाया और फ़रमाया: “इजाज़त माँगना नज़र बचाने के लिए ही है।” (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 6241)

दस्तरख़ान पर किसे बुलाया जाए

मअ़न कहते हैं: अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) जब खाना तैयार करते और कोई अमीर गुज़रता तो उसे नहीं बुलाते, लेकिन उनके बेटे और भतीजे बुला लेते। और अगर कोई ग़रीब आता तो अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) उसे बुलाते, मगर उनके बेटे और भतीजे नहीं बुलाते। उन्होंने कहा: “ये लोग उस इंसान को बुलाते हैं जिसे भूख नहीं और जिसे भूख है उसे छोड़ देते हैं।” (*अत्तबक़ातुल-कबीर*, *इब्ने साद*, असर संख्या 5084)

घर वालों की मर्ज़ी पर चलना दीनी मेज़ाज नहीं

जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) कहते हैं: मेरी मुलाक़ात हज़रत उमर (रज़ि०) से हुई। मैं एक दिरहम का गोश्त ख़रीदकर घर जा रहा था। उन्होंने पूछा: “यह क्या है?” मैंने कहा:

“घरवालों की बड़ी इच्छा थी, इसलिए मैंने उनके लिए गोश्त खरीदा है।” यह सुनकर उमर (रज़ि०) बार-बार मेरे शब्द “घरवालों की बड़ी इच्छा” को दोहराते रहे। मैंने सोचा कि काश वह दिरहम गिर जाता या मेरी उनसे मुलाक़ात न हुई होती। (*शुअबुल ईमान*, हदीस संख्या 5285)

एक और रिवायत में है: हज़रत जाबिर (रज़ि०) ने कहा: “मैंने अपने घरवालों के

लिए गोश्त खरीदा क्योंकि उनकी बहुत इच्छा थी।" यह सुनकर उमर (रज़ि०) ने कहा: "क्या जब भी तुम्हें किसी चीज़ की इच्छा होगी तुम उसे खरीद कर खा लोगे? क्या तुम्हें डर नहीं कि तुम उन लोगों में से हो जाओ जिनके बारे में अल्लाह ने क़ुरआन (46:20) में कहा है: 'तुमने अपनी नेमतें दुनिया ही में ले लीं।'" (*अल-मुहर्रर अल-वजीज़*, खण्ड 5, पृष्ठ 101)

भाई से रिश्ता तोड़ना उसे क़त्ल करने जैसा है

अबू ख़िराश सुलमी कहते हैं कि उन्होंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को ये कहते सुना:

> "जिसने अपने भाई से एक साल तक रिश्ता तोड़े रखा, तो ये ऐसे है जैसे उसने उसका ख़ून बहाया हो।" (*सुनन अबू दाऊद,* हदीस संख्या 4915)

न्यायप्रियता

हक़ के मामले में कोई रियायत नहीं

बनी मख़ज़ूम क़बीले की फ़ातिमा नाम की एक औरत ने चोरी की। लोग डर गए कि उसका हाथ काट दिया जाएगा। उन्होंने उसामा बिन ज़ैद (रज़ि०) को सिफ़ारिश के लिए रसूलुल्लाह (सल्ल०) के पास भेजा। ये सुनकर नबी (सल्ल०) के चेहरे पर ग़ुस्से के निशान आ गए। आपने कहा: "क्या तुम मुझसे अल्लाह के कानून के बारे में बात करना चाहते हो?" उसामा ने तुरंत कहा: "या रसूलल्लाह, मुझसे ग़लती हो गई, मेरे लिए दुआ कीजिए।" फिर नबी (सल्ल०) ने लोगों को ख़ुतबा दिया और कहा: "पिछली क़ौमें इसलिए बर्बाद हो गईं कि अगर कोई बड़ा आदमी चोरी करता, तो उसे छोड़ देते और अगर कोई कमज़ोर चोरी करता, तो उसे सज़ा देते। अल्लाह की क़सम! अगर मुहम्मद की बेटी फ़ातिमा भी चोरी करती, तो मैं उसका भी हाथ काट देता।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 4304)

इंसाफ़ में छोटे और बड़े बराबर हैं

हज़रत अनस (रज़ि०) कहते हैं: मिस्र का एक आदमी उमर (रज़ि०) के पास आया और बोला—"ऐ मुसलमानों के सरदार! मैं आपके पास ज़ुल्म से पनाह लेने आया हूँ।" उन्होंने कहा "मैंने तुझे पनाह दी।" उसने कहा—"मिस्र के गवर्नर अम्र बिन आस के बेटे मुहम्मद से दौड़ में मेरा मुक़ाबला हुआ। मैं उससे आगे निकल गया तो वो नाराज़ हो गया और मुझे कोड़े से मारने लगा और कहता जाता था—'मैं बड़े लोगों का बेटा हूँ।' ये सुनकर उमर (रज़ि०) ने अम्र बिन आस और उनके बेटे को बुलाया। जब वे आए, तो उमर (रज़ि०) ने मिस्री आदमी को कोड़ा देकर कहा—"इसे मारो।" उसने मारना शुरू किया। उमर (रज़ि०) कहते जाते थे: "बड़े आदमी के बेटे को मारो।" जब वो उसे खूब मार चुका, तो उमर (रज़ि०) ने कहा: "अब अम्र बिन आस को मारो, क्योंकि तुम्हारे बेटे ने अपने बाप की ताक़त पर

तुम्हें मारा।" मिस्री ने कहा: "जिसने मुझे मारा था, मैंने उसे मार लिया। अब किसी और को मारने की ज़रूरत नहीं।" इस पर उमर (रज़ि०) ने कहा:

> "तुमने कब से लोगों को ग़ुलाम बना लिया, जबकि उनकी माँओं ने उन्हें आज़ाद पैदा किया था?" (*अल-जामिउल कबीर*, अस्सुयूती, असर संख्या 2077)

अमीर (सरदार) की ज़िम्मेदारी है कि वह अपने कर्मचारियों पर नज़र रखे

उमर (रज़ि०) ने कहा: "अगर मैं किसी अच्छे आदमी को तुम्हारे ऊपर ज़िम्मेदार बनाऊँ और उसे हुक्म दूँ कि वो इंसाफ़ करे—तो क्या मैंने अपनी ज़िम्मेदारी पूरी कर दी?"

लोगों ने कहा—"हाँ।" उमर (रज़ि०) ने कहा—"नहीं, जब तक मैं उसके कामों को देख न लूँ कि उसने मेरे हुक्म पर अमल किया या नहीं।" (*शु'अबुल ईमान*, *अल-बैहक़ी*, असर संख्या 7010)

हज़रत इब्राहीम से रिवायत है: जब उमर (रज़ि०) किसी को अमीर (सरदार) बनाते और वहां से कोई क़ाफ़िला आता, तो पूछते—"तुम्हारा अमीर कैसा है? क्या वो ग़ुलामों की देखभाल करता है या नहीं? जनाज़े के पीछे चलता है या नहीं? लोगों से मिलने में उसका रवैया कैसा है? नरम है या सख़्त?" अगर लोग कहते—"हाँ, वो नरम है, ग़ुलामों की देखभाल करता है और जनाज़े में शामिल होता है," तो उमर (रज़ि०) उसे रहने देते। वरना तुरंत उसे हटा देते। (*कंज़ुल उम्माल*, असर संख्या 14336)

फ़ैसले में कोई पक्षपात नहीं

अली बिन रबीआ बताते हैं कि एक बार जअदा बिन हुबैरा, हज़रत अली (रज़ि०) के पास आए और बोले:

> “ऐ अमीरुल मोमिनीन! आपके सामने दो लोग आते हैं। एक आपसे बहुत प्यार करता है, और दूसरा, अगर उसे मौक़ा मिले तो आपको नुकसान पहुँचा दे। फिर भी आप फ़ैसला ऐसे करते हैं कि आपके चाहने वाले के खिलाफ़ और दूसरे के पक्ष में होता है।” हज़रत अली (रज़ि०) ने जवाब दिया:
>
> “अगर यह मामला मेरी अपनी चीज़ का होता, तो शायद मैं अपनी मर्ज़ी से फैसला करता। लेकिन यहाँ फैसला अल्लाह के हुक्म के अनुसार होता है, इसलिए इसमें किसी का पक्ष नहीं लिया जा सकता।” (*अल-जामिउल कबीर*, *अस्सुयूती*, असर संख्या 2312)

कुरान में सबसे ज़्यादा व्यस्त होना

आसिम बिन अबू अल-नजूद कहते हैं कि उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि०) जब अपने अहलकारों (प्रशासकों) को रवाना करते तो उनसे यह वचन लेते कि तुम तुर्की घोड़े पर सवार न होना, मैदे की रोटी न खाना, बारीक कपड़ा न पहनना, अपने दरवाज़ों को पीड़ितों पर बंद न रखना। अगर तुमने इन में से कोई काम किया तो तुम सज़ा के हक़दार होगे। यह वचन लेकर उन्हें रवाना करते। और जब किसी अधिकारी को हटाते तो कहते: मैंने तुम्हें मुसलमानों का खून चूसने के लिए नहीं भेजा था, न उनकी इज़्ज़त छीनने और न उनका माल हथियाने के लिए। मैंने तुम्हें

इसलिए भेजा था कि तुम उनके बीच नमाज़ क़ायम करो, उनके बीच ग़नीमत का माल (दुश्मन से टकराव के बाद विजय संपत्ति) बाँटो और उनके बीच इंसाफ़ से फ़ैसला करो। अगर कोई मामला मुश्किल हो तो मेरे पास लाओ। (*कंज़ुल-उम्माल*, हदीस 14197)

मुसतद्रक अल-हाकिम में यह और बढ़ाया गया है: “कुरान (सीखने और सिखाने) में ज़्यादा से ज़्यादा मशगूल रहो और रसूलुल्लाह (सल्ल०) से कम रिवायत करो, और मैं तुम्हारा शरीक हूँ।” (*मुसतद्रक अल-हाकिम*, असर संख्या 347)

ख़ुदा की किताब के सामने झुक जाना

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) कहते हैं कि उययना बिन हिस्न मदीना आए और अपने चचेरे भाई हुर्र बिन क़ैस के यहाँ ठहरे। यह उमर फ़ारूक़ (रज़ि०) की ख़िलाफ़त का ज़माना था। वह क़ुरान जानने वालों को अपनी मजलिस में बिठाते और उनसे मशविरा लिया करते, चाहे बूढ़े हों या जवान। हुर्र बिन क़ैस भी क़ुरान के आलिम थे और आपकी मजलिस में आते थे। उययना ने हुर्र से कहा: “भतीजे! तुम्हारी पहुँच मुसलमानों के ख़लीफ़ा तक है, मेरे लिए इजाज़त दिलवा दो और मुलाक़ात करा दो।” हुर्र ने इजाज़त दिलाई और उन्हें उमर (रज़ि०) के पास ले गए। उययना ने कहा: “ऐ इब्न-ख़त्ताब, ख़ुदा की क़सम! न तुम हमें कुछ देते हो और न हमारे बीच इंसाफ़ करते हो।” यह सुनकर उमर (रज़ि०) नाराज़ हो गए और क़रीब था कि उन पर टूट पड़ें। तभी हुर्र बिन कैस बोले: “ऐ अमीरुल-मोमिनीन! अल्लाह ने अपने नबी से फ़रमाया है: माफ़ करो, नेकी का हुक्म दो और अज्ञानियों से न उलझो। (7:199)। और यह शख़्स निस्संदेह जाहिलों में से है।” अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) कहते हैं: ख़ुदा की क़सम! जब यह आयत पढ़ी गई तो उमर (रज़ि०) तुरंत वहीं रुक गए और

बिलकुल आगे न बढ़े। वह हमेशा अल्लाह की किताब के सामने सर झुका देते थे। (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 4642)

बात को गलत अंदाज़ से कहने पर बुरा न मानना

अनस बिन मालिक (रज़ि०) कहते हैं: मैं रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ जा रहा था। आपने मोटे किनारे वाली नजरानी चादर ओढ़ रखी थी। रास्ते में एक देहाती मिला। उसने चादर पकड़कर ज़ोर से झटका दिया। मैंने देखा कि ज़ोर से खींचने की वजह से आपके कंधे पर निशान पड़ गया। फिर उसने कहा: "ऐ मुहम्मद! अल्लाह का जो माल तुम्हारे पास है, उसमें से मुझे दो।" रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने इस गुस्ताख़ी का कोई असर न लिया। आप उसकी ओर देखकर मुस्कुराए और हुक्म दिया कि उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ उसे बैतुल-माल (राज-कोष/जनधन) से दे दिया जाए। (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 6088)

जब हाकिम ईमानदार हो तो जनता भी ईमानदार हो जाती है

इब्न जरीर (रज़ि०) ने क़ैस अल-इजली से रिवायत की है कि जब उमर (रज़ि०) के पास किस्रा (ईरान के शाह) की क़ीमती तलवार, पेटी और गहने लाए गए, तो उमर (रज़ि०) ने कहा: "जिन लोगों ने यह चीज़ें ला कर दी हैं, वे ज़रूर अमानतदार हैं।" हज़रत अली (रज़ि०) ने कहा: "आपने ईमानदारी अपनाई तो रिआया (प्रजा) भी ईमानदार हो गई।" (*फ़ज़ाइलुस्सहाबा*, अद्दार-क़ुतनी, असर संख्या 19)

ख़ुदा के लिए नरम और ख़ुदा के लिए सख़्त

हज़रत उमर (रज़ि०) कहते हैं, “ख़ुदा की क़सम! हक़ के मामले में मेरा दिल इतना नरम होता है कि मक्खन से भी ज़्यादा नरम, और हक़ के ही मामले में मेरा दिल इतना सख़्त होता है कि पत्थर से भी ज़्यादा सख़्त।” (*हिल्यतुल औलिया*, अबू नुऐम, खण्ड 1, पृष्ठ 50)

ख़ुदा किस काम से राज़ी होता है और किससे नाराज़

अबू हुरैरा (रज़ि०) कहते हैं: रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: “अल्लाह तुमसे तीन चीज़ों पर राज़ी होता है और तीन पर नाराज़। वह इस पर राज़ी होता है कि तुम सिर्फ़ उसी की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक (साझी) न ठहराओ; सब मिलकर अल्लाह की रस्सी मज़बूती से पकड़ो और फूट न डालो; और जिसे अल्लाह तुम्हारा सरदार बनाए, उसके साथ भलाई करो। और अल्लाह इस पर नाराज़ होता है कि तुम बेकार बहस करो, बहुत सवाल करो और माल को बर्बाद करो।” (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 1715)

एकता

बाद के दौर में लोगों की तबाही का सबसे बड़ा कारण आपसी झगड़े और मतभेद होंगे

उक़बा बिन आमिर रज़ि० कहते हैं: रसूलुल्लाह (सल्ल०), उहुद की लड़ाई के आठ साल बाद, उहुद की जगह पर गए और वहाँ शहीदों के लिए दुआ की। ये दुआ वैसी थी जैसी कोई अलविदा लेते वक्त करता है। फिर आप मिम्बर (मस्जिद का उपदेश-स्थान) पर खड़े हुए और कहा: "मैं तुम्हारे लिए आगे बढ़ने वाला हूँ, तुम्हारे ऊपर गवाह हूँ। हमारी मुलाक़ात की जगह हौज़ (हौज़े कौसर) है। मैं उसे यहीं से देख रहा हूँ। अल्लाह की कसम! मुझे डर नहीं कि मेरे बाद तुम लोग शिर्क करोगे, लेकिन मुझे डर है कि तुम दुनिया की चाहत में पड़ जाओगे, आपस में लड़ोगे और बर्बाद हो जाओगे, जैसे पिछली क़ौमें बर्बाद हुईं।" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 4042)

अपनी निजी शिकायत को धर्म का मसला मत बनाओ

तारिक़ बिन शहाब कहते हैं: हज़रत ख़ालिद और हज़रत सअद रज़ि० में किसी बात पर मतभेद हुआ। एक शख़्स, हज़रत सअद के पास आया और ख़ालिद के खिलाफ़ कुछ कहने लगा। उन्होंने कहा: "रुको! हमारे और उनके बीच जो झगड़ा है, उसका कोई असर हमारे धर्म पर नहीं पड़ेगा।" (*अल-मुसन्नफ़*, इब्न अबी शैबा, हदीस संख्या 26048)

आपसी लड़ाई में किसी भी पक्ष का साथ न देना

वाइल बिन हुज्र रज़ि० हज़्रमौत के शाही ख़ानदान से थे। जब हज़रत अली और अमीर मुआविया के बीच हज़रत उस्मान के क़त्ल के मसले पर जंग हुई, तो अमीर मुआविया ने वाइल से कहा: "तुम हमारे साथ क्यों नहीं हो?" वाइल ने जवाब दिया: "मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को कहते सुना है—फितने ऐसे आएँगे जैसे काली रात का टुकड़ा। मैंने पूछा: हम उस वक्त क्या करें? आपने कहा: ऐ वाइल! जब इस्लाम में दो तलवारें आपस में भिड़ें, तो तुम दोनों से अलग रहो।" (*अल-मोजम अल-कबीर*, हदीस संख्या 117)

समाज को सँवारना नेता का कर्तव्य है, और खुद को सँवारना हर व्यक्ति की ज़िम्मेदारी

बैहक़ी लिखते हैं कि एक आदमी हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) के पास आया और पूछने लगा: "मेरे लिए क्या बेहतर है—अल्लाह के मामले में लोगों की निंदा की परवाह न करना, या बस अपनी ही हालत पर ध्यान देना?" उमर (रज़ि.) ने जवाब दिया: "जो व्यक्ति मुसलमानों के मामलों का ज़िम्मेदार बनाया गया है, उसे अल्लाह के हक़ में किसी निंदक की परवाह नहीं करनी चाहिए। और जो ज़िम्मेदार नहीं है, वह अपने सुधार पर ध्यान दे और अपने हाकिम को नरमी से नसीहत करता रहे।" (*शुअबुल ईमान*, असर संख्या 7155)

निजी शिकायतों को हर हाल में सहना

वासिला बिन असक़ा रज़ि० इस्लाम क़ुबूल करने के लिए मदीना आए। उस वक्त रसूलुल्लाह (सल्ल०) नमाज़ पढ़ा रहे थे। वह आख़िरी क़तार (पंक्ति) में शामिल हो गए। नमाज़ के बाद उन्होंने आपके हाथ पर बैअत की (निष्ठा का संकल्प लिया)। कलिमा-ए-तौहीद के साथ आपने उनसे यह वादा लिया: "तुम्हें हुक्म मानना होगा—तंगी में भी, आसानी में भी, पसंद में भी, नापसंद में भी, और भले ही तुम्हारे ऊपर दूसरों को तरजीह (प्राथमिकता) दी जाए।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस संख्या 4782)

साम्प्रदायिक भावनाएँ भड़काना अज्ञानता के दौर की मानसिकता है

जाबिर बिन अब्दुल्लाह (रज़ि०) बताते हैं: एक बार हम लोग जंग में थे। मुहाजिरों (मक्का से आए मुसलमान) में से एक ने अंसार (मदीना के मुसलमान) के एक शख़्स को मुक्का मार दिया। वह नाराज़ हो गया और चिल्लाया—"अंसार वालो, मदद करो!" दूसरी तरफ़ मुहाजिर ने आवाज़ दी—"मुहाजिरो, मदद करो!" दोनों तरफ़ के लोग जुट गए और झगड़ा शुरू हो गया। फिर कुछ लोगों ने बीच में पड़कर दोनों को अलग किया।

जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) को पता चला तो आपने फ़रमाया—"ये कैसी जाहिलियत (अज्ञानता) वाली बातें हैं?" लोगों ने कहा—"एक मुहाजिर ने अंसारी को मारा था।" आपने कहा—"इन बातों को छोड़ दो, ये गंदी बातें हैं।" (*सहीह मुस्लिम*, हदीस 2584)

विवाद में भागीदार बन्ने से बचो

इमाम अहमद बताते हैं: कुछ लोग अबू ज़र (रज़ि०) के लिए सामान लेकर गए। वे रबज़ा पहुँचे तो वहाँ नहीं मिले, बताया गया कि वे हज के लिए गए हैं। लोग मिना पहुँचे और अबू ज़र (रज़ि०) के पास बैठे थे। तभी किसी ने कहा—"ख़लीफ़ा उस्मान (रज़ि०) ने यहाँ चार रकअत नमाज़ पढ़ी है।" यह सुनकर अबू ज़र (रज़ि०) को बुरा लगा। उन्होंने कहा—"मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) के साथ दो रकअत नमाज़ पढ़ी, अबू बक्र और उमर (रज़ि०) के साथ भी दो रकअत पढ़ी।" इसके बाद अबू ज़र (रज़ि०) उठे और चार रकअत नमाज़ पढ़ी।

लोगों ने कहा—"आपने मुसलमानों के ख़लीफा के चार रकअत पढ़ने पर एतराज़ किया और ख़ुद वही कर लिया।" उन्होंने कहा—"मतभेद करना और भी बुरा है।" (*मुस्नद अहमद*, असर संख्या 21460)

ऐसी ही घटना अब्दुर्रज़ाक़ ने क़तादा (रज़ि०) से भी बयान की है। अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) ने भी ख़लीफ़ा उस्मान (रज़ि०) के चार रकअत पढ़ने पर एतराज़ किया और फिर ख़ुद चार रकअत पढ़ीं। जब पूछा गया तो कहा—"मतभेद पैदा करना बुराई है।" (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस 1962)

अपनों से नाराज़ होकर विरोधियों से जा मिलना सही नहीं

काब बिन मालिक (रज़ि०) ग़ज़वा-ए-तबूक में शामिल न हो पाए। वे कहते हैं: जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने जंग का ऐलान किया उस वक्त खजूरें पक चुकी थीं और (इस मौसम में) छाँव अच्छी लगती है। मैंने तैयारी में लापरवाही की और सोचा—मैं सक्षम हूँ, जब चाहूँगा निकल जाऊँगा। लेकिन फौज निकल गई और

मैं पीछे रह गया। जब रसूलुल्लाह (सल्ल०) लौटे तो मैं मिला। आपने पूछा— “क्यों नहीं आए?” मैंने सच कहा—“मेरे पास कोई बहाना नहीं था, मैं जा सकता था।” फिर रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने हुक्म दिया कि काब (और हिलाल बिन उमय्या और मुरारा बिन रबी) से कोई बात न करे। पचास दिन तक सबने उनका बाईकाट किये रखा। यहाँ तक कि उनकी हालत ऐसी हो गई कि क़ुरआन ने ख़ुद उसका ज़िक्र इस तरह से किया—“यहां तक कि जब ज़मीन अपनी विशालता के बावजूद उन पर तंग हो गई और वे ख़ुद अपनी जानों से तंग आ गए और उन्होंने समझ लिया कि अल्लाह से बचने के लिए ख़ुद अल्लाह के सिवा कहीं शरण नहीं मिल सकती।” (9:118)

काब (रज़ि०) कहते हैं: एक दिन मैं बाज़ार में था तो शाम का एक व्यापारी मिला। उसने मुझे ग़स्सान के राजा का ख़त दिया। रेशमी कपड़े में लिपटा हुआ। उसमें लिखा था— “मुझे पता चला है तुम्हारे सरदार ने तुम पर ज़ुल्म किया है। अल्लाह तुम्हें ज़लील न करे। हमारे पास आ जाओ, हम तुम्हारी क़दर करेंगे।”

काब (रज़ि०) ने वह ख़त फाड़कर आग में डाल दिया। पचासवें दिन अल्लाह ने उनकी तौबा क़ुबूल कर ली। (*तफ़सीर इब्ने कसीर*, खण्ड 4, पृष्ठ 430)

आपसी झगड़े से अल्लाह की मदद छिन जाती है

ख़ब्बाब बिन अल-अरत (रज़ि०) कहते हैं: एक बार नबी (सल्ल०) ने बहुत लंबी नमाज़ पढ़ी। सहाबा ने पूछा तो आपने कहा—“ये डर और उम्मीद की नमाज़ थी। मैंने तीन दुआएं कीं, दो क़ुबूल हुईं, एक नहीं।”

आपने कहा—“पहली दुआ, कि मेरी उम्मत भूख से खत्म न हो, यह मान ली गई। दूसरी दुआ, कि उन पर ऐसा दुश्मन हावी न हो जाए जो सबको मिटा दे, यह भी

मान ली गई। तीसरी दुआ, कि वे आपस में न लड़ें, यह क़ुबूल नहीं हुई।” (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 1574)

मतभेद की क़ीमत पर सरदारी नहीं

इब्न सअद एक घटना बताते हैं: हज़रत मुआविया ने अम्र बिन आस (रज़ि०) को अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) के पास भेजा। मक़सद था यह जानना कि वे ख़िलाफ़त चाहते हैं या नहीं। अम्र बिन आस (रज़ि०) ने कहा—“अबू अब्दुर्रहमान! आपको क्या रोक रहा है कि आप आगे आएँ, हम आपसे बैअत करें। आप नबी (सल्ल०) के सहाबी हैं, उमर (रज़ि०) के बेटे हैं, आप सबसे हक़दार हैं।” अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) ने पूछा—“क्या सब लोग तुम्हारी बात से सहमत हैं?” उन्होंने कहा—“थोड़े से लोग छोड़कर।” अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि०) ने कहा—“अगर हजर (बहरीन में एक शहर और उसके आसपास का इलाक़ा) में सिर्फ़ तीन मोटे गैर-अरबी लोग भी बच जाएँ तो भी मुझे इस काम (ख़िलाफ़त) की कोई चाह नहीं।” (*अत्तबक़ातुल-कुबरा*, असर संख्या 5189)

सामूहिक काम में निजी झगड़े से बचना

हुदैबिया की संधि के बाद अरब में अमन हो गया और रास्ते सुरक्षित हो गए। फिर पैग़म्बर (सल्ल०) ने ज़िल-हिज्जा 6 हिजरी में साथियों को बुलाकर इस्लाम की शिक्षा देने के काम की तरफ़ ध्यान दिलाया। आपने कहा: “अल्लाह ने मुझे सारी दुनिया के लिए रहमत बनाकर भेजा है। तुम लोग मेरा यह पैग़ाम हर क़ौम तक पहुँचा दो। और आपस में मत लड़ना, जैसे बनी-इस्राईल ने ईसा बिन मरियम

से झगड़ा किया था।" सहाबा ने कहा: "ऐ अल्लाह के रसूल! हम कभी आपसे मतभेद नहीं करेंगे। आप हमें हुक्म दीजिए और हमें भेज दीजिए।" (*अल-बिदाया वन्निहाया*, खंड 4, पृष्ठ 306)

बहस और झगड़ा नेकी को मिटा देता है

आमिर बिन हौशब कहते हैं: "धर्म में बहस और झगड़े से बचो, क्योंकि इससे इंसान के अच्छे काम बेकार हो जाते हैं।" (*जामि बयानुल इल्म व फ़ज़लिहि*, खंड 2, पृष्ठ 594)

सामाजिक जीवन हर हाल में आवश्यक है

हज़रत अबू दर्दा (रज़ि०) कहते हैं — मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) को यह कहते हुए सुना:

"जिस बस्ती या जंगल में तीन आदमी हों और वहाँ जमात के साथ नमाज़ न होती हो, तो उन पर शैतान हावी हो जाता है। इसलिए नमाज़ की जमात को ज़रूरी समझो, क्योंकि भेड़िया हमेशा अकेली बकरी को खा जाता है।" इसी तरह इंसान का भेड़िया शैतान है। (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 27514)

ख़ुदा की मदद

अल्लाह उस की हिफ़ाज़त करता है जो उसका काम करता है

हज़रत आयशा (रज़ि०) कहती हैं कि एक रात रसूलुल्लाह (सल्ल०) मेरे कमरे में थे और जाग रहे थे। मैंने पूछा—क्या बात है? आपने कहा—काश कोई नेक इंसान मेरे साथियों में से आज रात मेरा पहरा देता। तभी बाहर से हथियार की आवाज़ आई। आपने पुकारा—कौन है? आवाज़ आई—"मैं सअद बिन मालिक हूँ।" आपने पूछा—यहाँ क्यों आए हो? उन्होंने कहा—अल्लाह के रसूल, मैं इसलिए आया हूँ कि आपका पहरा दूँ। आयशा (रज़ि०) कहती हैं कि इसके बाद रसूलुल्लाह (सल्ल०) आराम से सो गए, यहाँ तक कि मैंने आपके खर्राटों की आवाज़ सुनी। एक और रिवायत में आता है कि जब आप मदीना पहुँचे तो रात में लोग पहरा देते थे। फिर क़ुरआन की यह आयत उतरी: "अल्लाह तुम्हें लोगों से बचाएगा" (5:67)। तब रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने ख़ेमे से सिर बाहर निकाला और कहा—"लोगो, वापस जाओ, अब अल्लाह ने हमें अपनी हिफ़ाज़त में ले लिया है" (*सुनन अल-तिर्मिज़ी*, हदीस संख्या 3046)।

हिकमत (दूरदृष्टि) अल्लाह का बड़ा तोहफ़ा है

इब्न वह्ब कहते हैं—मैंने इमाम मालिक को कहते सुना: "हिकमत और इल्म (ज्ञान) एक रौशनी है। अल्लाह जिसे चाहता है, उसी को इसके ज़रिये सीधा रास्ता दिखाता है। यह बहुत सारे मसले जानने का नाम नहीं है" (*जामे बयानुल इल्म व फ़ज़्लिहि*, हदीस संख्या 70)।

बिना ज्ञान के कर्म कभी बिगाड़ की वजह बन जाता है

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने कहा: “जो इंसान बिना ज्ञान के कोई काम करेगा, उसका नुक़सान उसकी भलाई से ज़्यादा होगा” (*जामे बयानुल इल्म व फ़ज़्लिहि*, हदीस 132)।

लोगों की मदद करने वाला कभी ख़ुदा की मदद से वंचित नहीं होता

610 ई. की एक रात रसूलुल्लाह (सल्ल०) ग़ार-ए-हिरा में थे। अल्लाह का फ़रिश्ता आया और बोला—“पढ़ो।” आपने कहा—“मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ।” आप बताते हैं कि फ़रिश्ते ने मुझे पकड़ा और इतना दबाया कि मेरी ताक़त जवाब देने लगी। फिर छोड़ा और कहा—“पढ़ो।” मैंने कहा—“मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ।” उसने फिर दबाया, तीसरी बार भी यही किया और कहा: “पढ़ो अपने उस रब के नाम से जिसने पैदा किया। जिसने इंसान को जमे हुए ख़ून से बनाया। पढ़ो और तुम्हारा रब बड़ा करीम (कृपाशील) है” (क़ुरआन 96:1–3)।

यह क़ुरआन की पहली आयतें थीं। इसके बाद आप अपनी पत्नी ख़दीजा बिन्त ख़ुवैलिद के पास मक्का आए। उस समय आपका दिल काँप रहा था। आपने कहा—“मुझे कम्बल ओढ़ाओ, मुझे कम्बल ओढ़ाओ।” घर वालों ने आपको ओढ़ाकर लिटा दिया। जब डर कुछ कम हुआ तो आपने पूरी घटना ख़दीजा को बताई और कहा—“ये घटना इतनी सख्त थी कि मुझे अपनी जान का ख़तरा हो गया।”

ख़दीजा (रज़ि०) ने कहा—“हरगिज़ नहीं! ख़ुदा की क़सम, अल्लाह आपको

कभी रुसवा नहीं करेगा। आप रिश्तेदारों का ख़्याल रखते हैं, कमज़ोरों का सहारा बनते हैं, बेसहारा लोगों की मदद करते हैं, मेहमाननवाज़ी करते हैं और मुसीबत में लोगों के साथ खड़े होते हैं" (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 3)।

इस्लाम उनके लिए ताक़त बन गया

नबूवत के पाँचवें साल मुसलमानों ने मक्का से हब्शा (इथोपिया) हिजरत की। कुरैश के ज़ुल्म से तंग आकर लगभग अस्सी (80) लोग जत्थों में वहाँ गए। उनके सरदार जाफ़र बिन अबी तालिब थे। कुरैश ने एक प्रतिनिधिमंडल भेजा कि नजाशी (हब्शा का राजा) मुसलमानों को उनके हवाले कर दे। लेकिन नजाशी ने इनकार कर दिया। वो मुसलमानों की बातों और उनके तौर-तरीक़े से इतना प्रभावित हुआ कि बोला—"तुम हमारे मुल्क में महफ़ूज़ हो। जो तुम्हें बुरा कहेगा, उस पर जुर्माना लगेगा। मैं कहता हूँ, अगर पहाड़ भर सोना भी मिल जाए तो भी मैं तुममें से किसी पर ज़्यादती नहीं करूँगा। तुम यहाँ जब तक चाहो रहो।" उसने खाने-पीने और कपड़ों का भी इंतज़ाम करने का हुक्म दिया। फिर ऐलान कराया—"जिसने किसी मुसलमान को सताया तो उसे उस मुसलमान को 4 दिरहम जुर्माना देना होगा।" जब मुसलमानों ने कहा कि ये काफ़ी नहीं है, तो जुर्माना दोगुना कर दिया। मुसलमानों के मदीना हिजरत के बाद जब ये मुसलमान भी मदीना जाने लगे तो नजाशी ने उन्हें सवारी और सफ़र के लिए सामान देकर रवाना किया। (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 1740)

दुश्मन पर कामयाब कार्रवाई के लिए राज़दारी ज़रूरी है

जब कुरैश ने हुदैबिया के समझौते की ख़िलाफ़वर्ज़ी की तो रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने कार्रवाई की तैयारी शुरू कर दी। रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने लोगों को सफ़र की तैयारी का हुक्म दिया और घरवालों से कहा कि वे उनका सफ़र का सामान ठीक कर दें। उसी वक़्त हज़रत अबू बक्र अपनी बेटी हज़रत आयशा के पास आए। वे रसूलुल्लाह (सल्ल०) के सफ़र का सामान ठीक कर रही थीं। अबू बक्र ने कहा: “बेटी, क्या तुम्हें रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने सफ़र का सामान तैयार करने को कहा है?” हज़रत आयशा ने कहा: “हाँ।” अबू बक्र ने पूछा: “तो तुम्हें क्या लगता है, वह कहाँ जाने का इरादा रखते हैं?” हज़रत आयशा ने कहा: “ख़ुदा की क़सम, मुझे बिल्कुल नहीं मालूम।” (*सीरत इब्ने हिशाम*, खण्ड. 2, पृष्ठ. 397)

रोज़ी-रोटी

कमाने वाला खुद को बड़ा न समझे

अनस (रज़ि०) कहते हैं: रसूलुल्लाह (सल्ल०) के ज़माने में दो भाई थे। एक भाई हर वक्त आपके पास आया करता था और दूसरा घर चलाने के लिए कमाता था। कमाने वाले भाई ने शिकायत की: “मेरा भाई काम नहीं करता, मुझे ही सब कमाना पड़ता है।” आप (सल्ल०) ने फ़रमाया: हो सकता है तुम्हें रोज़ी उसी की वजह से मिल रही हो। (*सुनन अल-तिर्मिज़ी*, हदीस संख्या 2345)

किसी की मदद करना बहुत बड़ी इबादत है

अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) मदीना की मस्जिद में एतिकाफ़ में थे। उनके पास एक आदमी आया, उसके चेहरे पर चिंता देख कर उन्होंने पूछा: “क्या बात है?” उसने कहा: “एक आदमी का क़र्ज़ मुझ पर है, मैं चुका नहीं सकता।” इब्न अब्बास (रज़ि०) ने कहा: “क्या मैं तेरे क़र्ज़दार से बात करूँ?” वह बोला: “हाँ।” आप फ़ौरन मस्जिद से निकल पड़े। आदमी ने कहा: “आप भूल गए, आप तो एतिकाफ़ में हैं?” उन्होंने कहा: “नहीं, मैं भूला नहीं हूँ। मैंने खुद रसूलुल्लाह (सल्ल०) से सुना है—जो अपने भाई की ज़रूरत पूरी करने के लिए कोशिश करे, उसका ये काम दस साल एतिकाफ़ से बेहतर है।” (*शुअब अल-ईमान*, हदीस संख्या 3679)

अल्लाह पर भरोसा सबसे बड़ी ताक़त

कुछ बुज़ुर्गों ने कहा है: जो सबसे ताक़तवर बनना चाहता है, उसे अल्लाह पर भरोसा करना चाहिए। (*नवादिरुल उसूल*, खंड 1, पृष्ठ 190)

ईमानदारी से साझेदारी (partnership) करने वालों का साथी अल्लाह है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: अल्लाह कहता है—जब दो लोग मिलकर काम करते हैं तो मैं उनका तीसरा होता हूँ, जब तक वे धोखा न करें। अगर कोई धोखा करता है तो मैं बीच से हट जाता हूँ और फिर शैतान आ जाता है। (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 3383)

ज़रूरतमंद की आवाज़ हाकिम तक पहुँचाना

अब्दुल्लाह इब्न उमर (रज़ि०) कहते हैं कि रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया: जिसने किसी हाकिम तक ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत पहुँचा दी, जो खुद नहीं पहुँचा सकता था, अल्लाह उसे क़ियामत के दिन पुल-सिरात पर मज़बूत क़दमों से चलाएगा, जब बाक़ी लोगों के क़दम लड़खड़ा रहे होंगे। (*तफ़्सीर इब्न कसीर*, खंड 7, पृष्ठ 287)

देने वाले को और दिया जाता है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने एक हदीस-ए-कुदसी बयान की: अल्लाह कहता है—ऐ इंसान, तुम खर्च करो, तुम्हारे ऊपर खर्च किया जाएगा। (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 5352)

सबसे ज़्यादा ज़रूरत के वक़्त सबसे बेसहारा

हज़रत उमर (रज़ि०) ने कहा: "कल रात मैंने एक आयत पढ़ी जिसने मुझे सारी रात सोने नहीं दिया—"क्या तुममें से कोई चाहता है कि उसके पास खजूर और अंगूर का बाग़ हो... (क़ुरआन 2:266)"

उन्होंने लोगों से पूछा: "इसका मतलब क्या है?" किसी ने कहा: "ये तो बस खजूर और अंगूर की मिसाल है।" किसी ने कहा: "ये रहस्यमयी आयत है, अल्लाह ही जानता है।" अब्दुल्लाह इब्न मसऊद (रज़ि०) भी वहाँ थे। वे धीरे-धीरे कुछ कह रहे थे। उमर (रज़ि०) ने कहा: "भतीजे! साफ़-साफ़ कहो, खुद को छोटा मत समझो।" उन्होंने कहा: "इससे अमल (कर्म) की ओर इशारा है।" उमर (रज़ि०) ने पूछा: "कैसे?" उन्होंने कहा: "ये बात मेरे दिल में आई और मैंने कह दी।" उमर (रज़ि०) ने कहा: "भतीजे! तूने सही कहा।"

इस आयत में जो मिसाल दी गई है, उसका मतलब है इंसान का अपना कर्म (अमल)।

इंसान को बाग़ की सबसे ज़्यादा ज़रूरत तब पड़ती है जब उसकी उम्र ढल चुकी

हो और बच्चे ज़्यादा हों। और इंसान को अपने कर्म की सबसे ज़्यादा ज़रूरत क़ियामत के दिन होगी। (*कंज़ुल-उम्माल*, हदीस संख्या 4228)

सबसे बड़ा दान वही है जो सबसे कमज़ोर को दिया जाए

हज़रत सुराक़ा बिन मालिक कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने मुझसे कहा—“क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि सबसे बड़ा दान कौन-सा है?” उन्होंने कहा, “हाँ ज़रूर बताइए।” आप (सल्ल०) ने कहा—“अपनी उस लड़की का ख्याल रखना जो (विधवा या तलाक़ होने की वजह से) तुम्हारे पास वापस आ जाए और जिसके लिए कमाने वाला तुम्हारे अलावा कोई न हो।” (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 17586)

दुनिया को मामूली समझना सबसे बड़ी अक़्लमंदी है।

इमाम शाफ़ेई कहते हैं: “अगर कोई आदमी यह वसीयत कर दे कि मेरे मरने के बाद मेरा माल सबसे अक़्लमंद इंसान को दे दिया जाए, तो उसका माल उस व्यक्ति को देना चाहिए जो दुनिया की मोह-माया से सबसे ज़्यादा बेपरवाह हो। क्योंकि असली अक़्लमंदी यही है कि इंसान दुनिया को मामूली समझे।” (*शरह मुस्नद अश-शाफ़ेई*, खण्ड 1, पृष्ठ 20)

मेहनत की कमाई सबसे अच्छी कमाई है

हज़रत मिक़दाम रज़ि. कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा—

> “इंसान के लिए सबसे अच्छा खाना वही है जो वो अपने हाथ की मेहनत से कमाकर खाए। अल्लाह के नबी दाऊद (अलैहिस्सलाम) भी अपनी मेहनत से कमाकर खाते थे।”
>
> (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस संख्या 2072)

पेशा (रोज़गार) कोई बुरी चीज़ नहीं है

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि. कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने कहा—

> “ज़करिया (अलैहिस्सलाम) बढ़ई का काम करते थे।” (*मुस्नद अहमद*, हदीस संख्या 7947)

नसीहत आम तौर पर

आइशा (रज़ि०) कहती हैं—जब रसूल (सल्ल०) को किसी की बात बुरी लगती, तो वे सीधे यह नहीं कहते कि “फलाँ आदमी ने ऐसा कहा है” बल्कि आप यूं कहते थे, “लोगों को क्या हो गया है कि वे ऐसा कहते या करते हैं।” इस तरह आप बात को सामान्य रूप में समझाते और किसी का नाम नहीं लेते थे। (*सुनन अबू दाऊद*, हदीस संख्या 4788)

खुली सच्चाई लोगों को सहन नहीं होती

जब पहली वह्य (खुदाई संदेश) उतरी तो रसूल (सल्ल०) डरे हुए घर लौटे और ख़दीजा (रज़ि०) से कहा—“मुझे लगा जैसे मेरी जान निकल जाएगी।” ख़दीजा (रज़ि०) आपको अपने चचेरे भाई वरक़ा बिन नौफ़ल के पास ले गईं। वरक़ा ईसाई थे और आसमानी किताबों का ज्ञान रखते थे। आपकी बात सुनकर वरक़ा ने कहा—“उस ख़ुदा की क़सम जिसके हाथ में मेरी जान है, आप इस उम्मत के नबी हैं। वही फ़रिश्ता आपके पास आया है जो मूसा के पास आया था। आपकी क़ौम आपको झुटलाएगी, तकलीफ़ देगी, वतन से निकालेगी और आप से लड़ेगी।”
रसूल (सल्ल०) ने कहा—“क्या सचमुच वे मुझे निकाल देंगे?”
वरक़ा ने जवाब दिया—“हाँ, क्योंकि जब भी कोई यह संदेश लेकर आया लोग उसके दुश्मन हो गए और लड़ाई की।” (*सहीह अल-बुख़ारी*, हदीस 4953)

अच्छी बात बताना सबसे बड़ा तोहफ़ा है

रसूलुल्लाह (सल्ल०) ने फ़रमाया—”कोई अपने भाई को इससे अच्छा तोहफ़ा नहीं दे सकता कि उसने कोई अच्छी बात सुनी और अपने भाई तक पहुँचा दी।” (*जामे बयानुल इल्म व फ़ज़्लिही*, खंड 1, पृष्ठ 190)

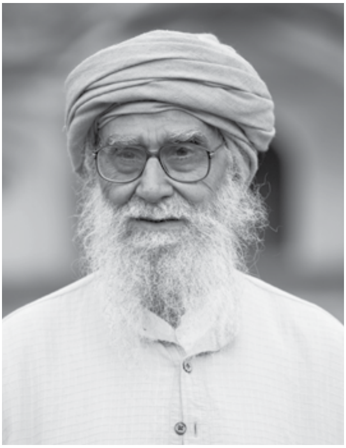

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ाँ (1925–2021) एक इस्लामी विद्वान, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और शांति दूत थे। उन्होंने 200 से अधिक पुस्तकों की रचना की और हज़ारों व्याख्यान रिकॉर्ड किए, जिनमें आधुनिक शैली और तर्कसंगत भाषा में इस्लाम की व्याख्या प्रस्तुत की गई। उनका अंग्रेज़ी अनुवाद *The Quran* अपनी सरलता, स्पष्टता और समकालीन शैली के कारण व्यापक रूप से सराहा गया है।

उन्होंने वर्ष 2001 में सेंटर फ़ॉर पीस एंड स्पिरिचुएलिटी (CPS International) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य लोगों की सोच को ईश्वर-केंद्रित जीवन की ओर मोड़ना और इस्लाम को उसके वास्तविक स्वरूप में प्रस्तुत करना था, जो शांति, आध्यात्मिकता और सह-अस्तित्व के सिद्धांतों पर आधारित है।

मौलाना वहीदुद्दीन ख़ान ने 21 अप्रैल 2021 को नई दिल्ली, भारत में इस संसार से विदा ली। किंतु उनकी बौद्धिक और आध्यात्मिक विरासत CPS International के माध्यम से आज भी आगे बढ़ रही है।

www.mwkhan.com www.cpsglobal.org

इस्लामी जीवन

इस किताब में पैग़ंबर-ए-इस्लाम (सल्ल०) की ज़िंदगी और हदीसों को, साथ ही सहाबा की ज़िंदगी और उनकी बातों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार यह किताब इस्लामी जीवन की एक विश्वसनीय और आदर्श झलक बन जाती है। इसके अध्ययन से हदीस और सहाबा के आचरण की रोशनी में यह समझा जा सकता है कि इंसान इस दुनिया में किस तरह जीवन जिए, ताकि उसे यहाँ अल्लाह की रहमत और मदद मिले और आख़िरत में वह अल्लाह के इनामों का हक़दार बने।

ISBN 978-93-49952-00-3
9 789349 952003

Goodword Books
CPS International